हिन्दी सांध्य दैनिक

प्रखर पूर्वांचल

अखबार नहीं आंदोलन

RNI:UPHIN/2016/68754 www.prakharpurvanchal.com Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com

गाजीपुर से प्रकाशित व वाराणसी, चंदौली, सोनभद्र, मऊ, बलिया, आजमगढ़, भदोही, मिर्जापुर, जौनपुर, लखनऊ, प्रयागराज, गोरखपुर, कुशीनगर, महाराजगंज तथा देवरिया से प्रसारित

वर्षः 7, अंकः 324, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00, आमंत्रण मूल्य 2.00 | 18 मई, 2023 दिन गुरुवार | गाजीपुर/वाराणसी

बाबा बागेश्वर की हनुमंत कथा से बिहार में महाभारतः नीतीश-लालू ने किया विरोध

जदयू-राजद का आरोप : बाबा और साधुओं के नाम पर बिहार में सांप्रदायिक माहौल खराब करने की हो रही कोशिश

पटना। पटना के नौबतपुर में बागेश्वर धाम के आचार्य बाबा बागेश्वर के दरबार का आज अंतिम दिन है। धीरेंद्र शास्त्री के 13 से 17 मई की हनुमंत कथा कार्यक्रम में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ देखने को मिली। हालांकि, बिहार में बाबा के दरबार को लेकर पटना से दिल्ली तक खूब राजनीति भी हुई। पांच दिनों के कार्यक्रम में भाजपा सांसद मनोज तिवारी, केंद्रीय मंत्री अश्विनी चौबे सहित भाजपा के कई बड़े नेता धीरेंद्र शास्त्री के सामने माथा टेकते नजर आए। वहीं, बिहार में महागठबंधन ने इसे लोकसभा और विधानसभा चुनाव को लेकर भाजपा का एजेंडा बताया है। जदयू और राजद का आरोप है कि बाबा और साधुओं के नाम पर भाजपा बिहार में सांप्रदायिक माहौल खराब करने की कोशिश कर रही है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद सहित कई नेताओं ने धीरेंद्र शास्त्री का विरोध किया।

नीतीश ने दी बाबा बागेश्वर को नसीहत- पटना में धीरेंद्र शास्त्री के बयान 'बिहार से जलेगी हिंदू राष्ट्र की ज्वाला' पर बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने भी प्रतिक्रिया दी और कहा कि क्या ये सब जो ये कह रहे हैं, आजादी की लड़ाई के दौरान पैदा हुए थे? ये कहने की क्या जरूरत है?

वहीं, धीरेंद्र शास्त्री ने भारत को हिंदू राष्ट्र बनाने का भी आह्वान किया। इसपर सीएम नीतीश ने कहा कि आप किसी भी धर्म को मानिए, उसमें कोई रूकावट है क्या? पर नामकरण करना आश्चर्य की बात है। यह कभी संभव है क्या? कोई ऐसा कर सकता है क्या? राम-कृष्ण करिए न भाई। भारत में तो सात धर्म है।

बागेश्वर बाबा के खिलाफ तेज प्रताप ने खड़ी की सेना- बिहार के पर्यावरण मंत्री तेज प्रताप यादव ने सबसे पहले धीरेंद्र शास्त्री के खिलाफ मोर्चा खोला था। तेज प्रताप ने तो पर्ची निकालने वाले बाबा को पटना में रोकने के लिए डीएसएस नाम की एक सेना का भी गठन कर लिया था। हालांकि, वे दरबार को रोक नहीं पाए। बिहार में बाबा बागेश्वर की जबरदस्त फैन फोलोइंग को लेकर जब उनसे सवाल किया गया तो तेज प्रताप ने कहा कि कौन बाबा है। असली बाबा देवराहा बाबा थे, जो 400 साल जिंदा रहे। उन्हीं को हम मानते हैं, उन्हीं के आशीर्वाद से मेरा जन्म हुआ। तेज प्रताप ने कहा कि बाबा बिहारियों को गाली देने का काम कर रहे हैं। बिहार में कृष्ण राज्य है, यहां महागठबंधन का राज है। ये सब देश को तोड़ने के लिए राजनीति की जा रही है। जनता ने कर्नाटक में परिणाम दे दिया है।

तेज प्रताप के बाद पिता लालू भी बिफरे- वहीं, तेज प्रताप के बाद राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद ने भी धीरेंद्र शास्त्री को बाबा मानने से इनकार कर दिया। मंगलवार को दिल्ली जाने के दौरान पटना एयरपोर्ट पर लालू ने कहा कि उ कोई बाबा है क्या? उनसे यह सवाल भी किया गया कि तेजस्वी ने बिहार में बागेश्वर बाबा को क्यों नहीं रोका? इसपर लालू प्रसाद ने कहा कि बागेश्वर कौन चीज है?

प्रशांत किशोर ने भाजपा पर कशा तंज- बाबा बागेश्वर के खिलाफ राजनीतिक सलाहकार से राजनेता बने प्रशांत किशोर भी महागठबधंन के साथ नजर आए। उन्होंने धीरेंद्र शास्त्री के बहाने भाजपा पर भी निशाना साधा। पीके ने कहा कि भगवान राम की फोटो लगाने वाले अगर बागेश्वर बाबा का फोटो लगा रहे हैं तो भाजपा की तरक्की को इसी से समझा जा सकता है। भाजपा के दफ्तर में बाबा की तस्वीर लग रही है तो शायद उनका भरोसा राम जी से कम हो गया है।

ट्रक और ऑटोरिक्शा की भीषण टक्कर, 5 की मौके पर हुई मौत; चालक फरार

पोंडुगुला, (आंध्र प्रदेश)। आंध्र प्रदेश के पलनाडु जिले के एक गांव में बुधवार को एक तेज रफ्तार ट्रक की चपेट में आने से पांच लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं, सात गंभीर रूप से घायल हुए है। सभी महिलाएं ऑटोरिक्शा में सवार थी और तभी तेज रफ्तार ट्रक से भीषण टक्कर हो गई। हादसा उस समय हुआ जब महिलाएं राज्य के पलनाडू जिले के पुलीपाडु गांव में मिर्च की फसल लेने जा रही थीं। हादसे की जानकारी देते हुए गुड़जाला अनुमंडलीय पुलिस अधिकारी ए. पल्लपु राजू ने बताया कि गुडुरु से लखनऊ जा रहे नींबू से लदे एक ट्रक ने सुबह करीब 4 बजकर 42 मिनट पर ऑटोरिक्शा को तेज टक्कर मारी और फिर आगे निकल गई। घायलों को तेलंगाना के मिरयालगुडा के एक अस्पताल में शिफ्ट कर दिया गया है, जहां उनका इलाज चल रहा है। घटना के दौरान ऑटोरिक्शा में 12 महिलाएं सवार थी, जिसमें से 6 की मौत हो गई। पुलिस ने आईपीसी की धारा 304 (ए) और 337 के तहत मामला दर्ज कर दिया है।

सीबीआई की बड़ी कार्रवाई, जासूसी के आरोप में एक स्वतंत्र पत्रकार व नौसेना के पूर्व कमांडर को किया गिरफ्तार

नई दिल्ली। केंद्रीय जांच एजेंसी (सीबीआई) ने एक स्वतंत्र पत्रकार और नौसेना के एक पूर्व कमांडर को जासूसी के आरोप में गिरफ्तार किया है। इन पर रक्षा अनुसंधान विकास संगठन (डीआरडीओ) और सेना के बारे में कथित रूप से संवेदनशील जानकारी एकत्र करने और उसे विदेश की खुफिया एजेंसियों के साथ साझा करने का आरोप है। सूत्रों के मुताबिक, विवेक रघुवंशी और नौसेना के पूर्व कमांडर आशीष पाठक के खिलाफ आधिकारिक गोपनीयता अधिनियम के प्रावधानों के तहत मामला दर्ज किया गया था। अधिकारियों के मुताबिक, एफआईआर के आधार पर जांच एजेंसी ने विवेक रघुवंशी और उनके करीबियों के जयपुर और एनसीआर स्थित 12 ठिकानों पर छापे मारे। छापे के दौरान बरामद संवेदनशील दस्तावेज को कानूनी समीक्षा के लिए भेजा गया है। सीबीआई ने आरोप लगाया कि वह कथित तौर पर विभिन्न डीआरडीओ परियोजनाओं की प्रगति के बारे में संवेदनशील जानकारी और सूक्ष्म विवरण एकत्र कर रहा था। एजेंसी ने यह भी आरोप लगाया कि वह भारतीय सशस्त्र बलों की भविष्य की खरीद योजनाओं का विवरण भी एकत्र कर रहा था, जो देश की रणनीतिक तैयारियों पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता था। सीबीआई का आरोप है कि रघुवंशी ने मित्र देशों के साथ भारत की रणनीतिक और कूटनीतिक बातचीत के ब्यौरे के अलावा राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ी गोपनीय संचार सूचनाओं की जानकारी जुटाई थी। उन्होंने कहा कि अगर ये सूचनाएं सामने आतीं तो इन देशों के साथ भारत के द्विपक्षीय संबंध खराब हो सकते थे।

बैठक के पहले मायावती का बयान, धर्म का राजनीति के लिए इस्तेमाल लोकतंत्र के लिए घातक

लखनऊ। बसपा सुप्रीमो मायावती ने यूपी निकाय चुनाव में करारी हार पर पार्टी पदाधिकारियों के साथ मंथन करने के लिए गुरुवार लखनऊ में बैठक बुलाई है। बुधवार को उन्होंने ट्वीट कर कहा कि धर्म का राजनीतिक स्वार्थ के लिए इस्तेमाल देश के लोकतंत्र के लिए घातक है। उन्होंने ट्वीट कर कहा कि यूपी में सत्ताधारी पार्टी द्वारा जनविरोधी नीतियों, गलत कार्यकलापों आदि कमियों का चुनाव पर प्रभाव कम करने के लिए सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग, इनका द्वेषपूर्ण, दमनकारी व्यवहार एवं धर्म का राजनीतिक स्वार्थ के लिए इस्तेमाल अति-गंभीर व अति-चिन्ताजनक है। जो कि लोकतंत्र के लिए घातक है। मायावती ने कहा कि इन घोर जनविरोधी चुनौतियों का डटकर मुकाबला करने हेतु ठोस रणनीति बनाकर उसके हिसाब से आगे खासकर लोकसभा आम चुनाव के लिए अभी से ही तैयारी में जुट जाने के लिए यूपी स्टेट के सभी छोटे-बड़े पदाधिकारियों, मण्डल व ज़िला अध्यक्षों आदि की लखनऊ में कल विशेष बैठक है। प्रदेश में 2022 में हुए विधानसभा चुनाव के बाद यूपी निकाय चुनाव में भी बसपा को करारी हार का सामना करना पड़ा है। प्रदेश के सभी 17 नगर निगमों में सभी जगहों पर भाजपा की जीत हुई है। सपा-बसपा एक भी सीट नहीं जीत सकी हैं।

डोली की जगह उठ गई पिता, बहन व भाई की अर्थी, दर्दनाक सड़क हादसे में तीन की मौत

प्रखर वाराणसी। रामनगर थाना क्षेत्र अंतर्गत का कोदोपुर बंधन लान के पास तेज रफ्तार ट्रैक्टर की चपेट में आने से बाइक सवार पिता के साथ जवान बेटे और बेटी की जान चली गई। दर्दनाक हादसे में परिवार में होने वाली शादी का खुशी का माहौल मातम में बदल गया। बताया जा रहा है कि परिवार में एक बडी बेटी के 4 दिन बाद बारात आनी थी। मिली जानकारी के अनुसार डुमरी निवासी अविनाश प्रसाद 65 वर्ष मंगलवार देर रात बेटी ज्योति 28 और बेटा रणदीप 20 वर्ष के साथ बीएचयू से डायलीसिस कराकर बुधवार की भोर में 3 बजे लौटने के बाद दौरान तीनों बाइक पर सवार होकर डिमरी डोंगरी स्थित अपने घर की तरफ जा रहे थे, इसी बीच पुल पार करने के बाद पीछे से आ रहे तेज रफ्तार ट्रैक्टर ने बाइक को टक्कर मार दी टक्कर लगते ही तीनों गिर गए। ट्रैक्टर तीनो को रौदते हुए भाग निकला। पिता व बेटी ज्योति की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि रणदीप को आसपास के लोगों ने

पुलिस की मदद से बीएचयू ट्रामा सेंटर पहुंचाया , जहां पर इलाज के दौरान उसकी भी मौत हो गई। परिजनों से मिली जानकारी के अनुसार अविनाश प्रसाद की बड़ी बेटी प्रीति की 4 दिन बाद 21 मई को बारात आनी थी। घर में शादी का माहौल था, एक साथ तीन लोगों की मौत के बाद माहौल गम में बदल गया है। रो-रो कर पूरे परिवार का बुरा हाल है। अविनाश प्लास्टिक का दाना बनाने का काम किया करते थे। पुलिस ने तीनों के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

दिल्ली से सिडनी जा रहे एयर इंडिया के विमान में लगे तेज झटके, कई यात्री घायल

नई दिल्ली। एयर इंडिया के एक विमान में कई झटके लगे हैं। झटकों के कारण विमान में सवार कुछ यात्री घायल हो गए हैं। दरअसल, एयर इंडिया का विमान बुधवार को दिल्ली से सिडनी जा रहा था। तभी हवा में विमान में झटके लगे। नागर विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) ने इसकी जानकारी दी है। डीजीसीए ने बताया कि यह घटना मंगलवार को उड़ान के दौरान घटी है। एजेंसी के मुताबिक, घायल यात्रियों को सिडनी एयरपोर्ट पर चिकित्सा सहायता दी गई। अभी कोई भी यात्री अस्पताल में भर्ती नहीं है। डीजीसीए ने एएनआई को बताया कि एयर इंडिया B787-800 विमान VT-ANY ऑपरेटिंग फ्लाइट AI-302 को गंभीर अशांति का सामना करना पड़ा। सात यात्रियों ने मामूली चोट की सूचना दी है। केबिन क्रू ने घायलों को प्राथमिक उपचार दिया। डीजीसीए ने बताया कि केबिन क्रू ने यात्रियों में एक डॉक्टर और नर्स भी मौजूद थी। उनकी मदद से घायलों का प्राथमिक उपचार किया गया। डीजीसीए ने ये भी बताया कि सिडनी में एयर इंडिया एयरपोर्ट मैनेजर ने चिकित्सा सहायता की। कुछ यात्रियों ने चिकित्सा सहायता का लाभ उठाया। अस्पताल में भर्ती होने की कोई आवश्यकता नहीं थी। इससे पहले, एयर इंडिया के विमान

में एक बिच्छू ने एक यात्री को काट लिया था। विमान ने नागपुर से मुंबई के लिए उड़ान भरी थी। किसी विमान में बिच्छू द्वारा काटे जाने का ये दुर्लभ मामला था। एयर इंडिया के प्रवक्ता ने तब बताया था कि 23 अप्रैल को विमान संख्या 630 में एक यात्री को बिच्छू के डंक मारने की एक घटना सामने आई है। महिला यात्री को फौरन इलाज के लिए अस्पताल भेजा गया।

गोरखपुर के माफिया अजीत शाही ने छोड़ा शहर, गुर्गे भूमिगत, 25 हजार का इनाम घोषित

गोरखपुर। पुलिस का शिकंजा कसने और 25 हजार रुपये इनाम घोषित होने के बाद माफिया अजीत शाही ने शहर छोड़ दिया है। सर्विलांस की मदद से पुलिस घेराबंदी में जुटी थी, लेकिन जिन मोबाइल नंबरों के जरिये पहुंचने की कोशिश चल रही थी वह बंद हो गए हैं। बचाव करने वाले सफेदपोश व समर्थक भी भूमिगत हैं। सोमवार की रात में पुलिस दी रेलवे कोआपरेटिव बैंक के अध्यक्ष अनिल सिंह के घर भी पहुंची लेकिन वह नहीं मिले। इसी माह माफिया अजीत शाही के घर मांगलिक कार्यक्रम था, जिसमें शहर के कई सफेदपोश व बदमाश पहुंचे थे। कई लोगों ने माफिया के साथ फोटो खिंचवाकर इंटरनेट मीडिया पर शेयर करते हुए बताया था कि सुखद मुलाकात हुई। शाहपुर थाने में जबरिया वसूली, धमकी व बलवा का मुकदमा दर्ज होने के बाद पुलिस ने शिकंजा कसा तो माफिया अजीत शाही के साथ फोटो शेयर करने वालों ने फेसबुक व

इंस्टाग्राम से पोस्ट डिलीट कर दिया। माफिया के आत्मसमर्पण करने की सूचना पर दो दिन से कचहरी के आसपास शाहपुर व कैंट थाने की पुलिस मुस्तैद है। एसपी सिटी कृष्ण कुमार बिश्नोई ने बताया कि माफिया व सहयोगियों पर कड़ी कार्रवाई होगी। तलाश में पुलिस गोरखपुर के साथ ही आसपास के जिलों में छापेमारी कर रही है। कई ऐसे लोगों को चिह्नित किया गया जिनके अजीत शाही से नजदीकी संबंध हैं उनसे भी पूछताछ होगी। शिकंजा कसने के लिए पुलिस ने जिले के टाप 10 बदमाशों की सूची में माफिया अजीत शाही का नाम शामिल किया लेकिन कुछ दिन बाद बाहर कर दिया। इसके बाद से अजीत शाही व उसके गुर्गों का हौसला बढ़ गया। चर्चा है कि उसकी दहशत पूरे शहर में है। कई कंपनियों के लिए बतौर रिकवरी एजेंट काम करता है। बेतियाहाता में रहने वाला अजीत शाही मूल रूप से देवरिया जिले का निवासी है। उसके विरुद्ध कैंट, शाहपुर, गुलरिहा समेत जिले के कई थानों में 33 मुकदमे दर्ज हैं।

मुख्तार अंसारी को बड़ी राहत, हत्या के प्रयास की साजिश में पूर्व विधायक दोषमुक्त

गाजीपुर। अपर सत्र न्यायाधीश एमपी एमएलए कोर्ट दुर्गेश की अदालत ने मुहम्मदाबाद क्षेत्र में हुए हत्या प्रयास की साजिश में आरोपित मुख्तार अंसारी दोषमुक्त कर दिया है। वर्ष 2009 में मीर हसन उर्फ मीरकल्लू निवासी चकशाह मुहम्मद उर्फ मलिकपुरा ने मुहम्मदाबाद थाने में सोनू यादव के खिलाफ हत्या के प्रयास का केस दर्ज कराया था। पुलिस ने विवेचना में मुख्तार अंसारी को साजिशकर्ता मानते हुए उनपर धारा 120बी का केस दर्ज किया था। तब अंसारी जेल में बंद था। हालांकि इस मामले में मुख्य आरोपित सोनू यादव कोर्ट से बरी हो गया था, जबकि मुख्तार अंसारी के खिलाफ एमपी-एमएलए कोर्ट में चल रहा था। इस मामले में बीते छह मई को मुख्तार की ओर से मौखिक बहस की गई। जिसके बाद अदालत ने फैसला के लिए 17 मई की तिथि मुकर्रर की थी। बुधवार को फैसला सुनाते हुए एमपी-एमएलए कोर्ट के जज दुर्गेश ने मुख्तार अंसारी को हत्या के प्रयास की साजिश के मामले में दोषमुक्त करार दिया है। एमपी एमएलए कोर्ट दुर्गेश की अदालत ने इससे पहले गैंगस्टर के

दो मामले में मुख्तार अंसारी को दस-दस साल की सजा सुना चुकी है। गैंगस्टर में पहली सजा बनारस के अवधेशराय हत्या कांड और दूसरी सजा बनारस के ही कोयला व्यवसायी व हिंदूवादी नेता नंदकिशोर रुंगटा अपहरण व हत्या कांड के गैंगस्टर में दस साल की सजा सुनाई गई थी।

सुप्रीम कोर्ट ने डीके को दी राहत तो सीबीआई को लगा झटका, सुनवाई 14 जुलाई तक स्थगित

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने बुधवार को कर्नाटक प्रदेश कांग्रेस समिति (केपीसीसी) के अध्यक्ष डीके शिवकुमार के खिलाफ आय के ज्ञात स्रोत से अधिक संपत्ति के मामले में जांच पर अंतरिम रोक से संबंधित कर्नाटक उच्च न्यायालय के आदेश को चुनौती देने वाली केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) की याचिका पर सुनवाई 14 जुलाई तक स्थगित कर दी। न्यायमूर्ति बीआर गवई और न्यायमूर्ति संजय करोल की पीठ ने शिवकुमार की ओर से पेश हुए वरिष्ठ अधिवक्ता अभिषेक सिंघवी के यह कहने के बाद मामले को स्थगित कर दिया कि मामले में 23 मई को उच्च न्यायालय में सुनवाई होनी है। कर्नाटक उच्च न्यायालय ने 10 फरवरी को शिवकुमार के खिलाफ भ्रष्टाचार के मामले में सीबीआई की कार्रवाई पर रोक लगा दी थी। बाद में अलग-अलग तारीखों पर रोक को और बढ़ा दिया गया। आयकर विभाग ने 2017 में शिवकुमार के खिलाफ छापा मारा था, जिसके आधार पर प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने उनके खिलाफ जांच शुरू की थी। ईडी की जांच के बाद सीबीआई ने बाद में उनके खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करने के लिए राज्य सरकार से

मंजूरी मांगी थी। मंजूरी 25 सितंबर, 2019 को मिली और तीन अक्टूबर, 2020 को शिवकुमार पर सीबीआई ने भ्रष्टाचार निरोधक अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया।

शिवकुमार ने कर्नाटक उच्च न्यायालय का रुख किया और अपने खिलाफ प्राथमिकी दर्ज किए जाने की मंजूरी एवं कार्रवाई को चुनौती दी। उन्होंने आरोप लगाया कि सीबीआई आगामी विधानसभा चुनावों से पहले उन्हें बार-बार नोटिस जारी करके उन पर मानसिक दबाव बना रही थी जबकि मामला 2020 का है। उच्चतम न्यायालय ने भारतीय युवा कांग्रेस के अध्यक्ष बीवी श्रीनिवास के खिलाफ दर्ज उत्पीड़न के एक मामले में बुधवार को उन्हें गिरफ्तारी से अंतरिम संरक्षण प्रदान किया। असम में पार्टी की एक नेता ने श्रीनिवास पर मानसिक यातना देने का आरोप लगाया था, जिसे अब कांग्रेस से निष्कासित किया जा चुका है। असम युवा कांग्रेस की निष्कासित अध्यक्ष अंगकिता दत्ता द्वारा दर्ज कराए गए इस मामले में श्रीनिवास ने अपनी अग्रिम जमानत अर्जी को खारिज करने के गुवाहाटी उच्च न्यायालय के आदेश को चुनौती दी थी। उच्चतम न्यायालय के न्यायमूर्ति बीआर गवई और न्यायमूर्ति संजय करोल की पीठ ने असम सरकार और अन्य को नोटिस जारी कर 10 जुलाई तक मामले में उनसे जवाब दाखिल करने को कहा। पीठ ने कहा कि हमने (सीआरपीसी की धारा) 164 के तहत दिया गया बयान पढ़ा है जिसे अभियोजन पक्ष ने बड़ी शालीनता से हमारे समक्ष रखा है। हम इस स्तर पर राज्य के खिलाफ कुछ नहीं कहना चाहते। प्राथमिकी दर्ज होने में एक महीने की देरी पर विचार करते हुए याचिकाकर्ता को अंतरिम संरक्षण का अधिकार है। शीर्ष अदालत ने श्रीनिवास को जांच में सहयोग करने और 22 मई को पुलिस के समक्ष उपस्थित होने का भी निर्देश दिया।

अयोध्या बाबरी विवाद में मुस्लिम पक्ष के वकील रहे जफरयाब जिलानी का निधन

नई दिल्ली। अयोध्या बाबरी विवाद में मुस्लिम पक्ष के वकील रहे जफरयाब जिलानी का बुधवार को लखनऊ में निधन हो गया। जफरयाब जिलानी मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के मेंबर रह चुके हैं। इसके अतिरिक्त वह बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी के अध्यक्ष और यूपी के अपर महाधिवक्ता के पद पर भी रह चुके हैं। जफरयाब जिलानी लंबे समय के बीमार चल रहे थे। मई 2021 में सिर में गंभीर चोट लगने के बाद उन्हें उसी दिन रात आठ बजे मेदांता अस्पताल में भर्ती कराया गया था। स्थिति गंभीर होने के चलते उन्हें तत्काल आइसीयू में रखकर उपचार शुरू किया गया था। न्यूरो विभाग के डाक्टरों के अनुसार प्रारंभिक जांच व सीटी स्कैन में पता चला कि उनके ब्रेन के अगले हिस्से में खून का थक्का जमा हुआ था, जिसकी सफल सर्जरी करके उसे हटाया गया। हालांकि उसके बाद कुछ समय के लिए वह स्वस्थ थे।

संपादकीय

राहत का रुख

हालांकि इस बीच कई मौकों पर मुद्रास्फीति की दर में उतार-चढ़ाव बना रहा, लेकिन आय और क्रय शक्ति के संदर्भ में देखें तो महंगाई ज्यादातर लोगों के लिए लगातार एक चुनौती ही है। लेकिन हाल के आंकड़ों के मुताबिक, पहले खुदरा और अब थोक, दोनों ही मामले में महंगाई की दर में आई कमी के रुख ने लोगों को राहत दी है। गौरतलब है कि अप्रैल में खुदरा महंगाई 4.70 फीसद रही, जो बीते अठारह महीने के दौरान इसका न्यूनतम स्तर है। अब थोक महंगाई भी ऋणात्मक 0.92 फीसद पर आ गई, जो पिछले करीब तीन साल में इसका न्यूनतम स्तर है। जाहिर है, थोक महंगाई की दर शून्य से भी नीचे जाना बाजार में वस्तुओं की आवक के लिहाज से सकारात्मक है और इसका स्वाभाविक असर वस्तुओं की कीमतों पर भी पड़ना चाहिए। कई बार थोक महंगाई का स्तर तो नीचे जाता है, लेकिन बाजार में वस्तुओं की खुदरा कीमतों पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता है। लेकिन थोक के साथ-साथ खुदरा महंगाई के हाल के आंकड़ों में अगर स्थिरता बनी रही, तो इससे आम उपभोक्ताओं को राहत मिल सकती है। यह बदलाव इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि बीते ग्यारह महीने के दौरान आरबीआइ यानी भारतीय रिजर्व बैंक की ओर से तय खुदरा महंगाई सहनीय स्तर से ऊपर ही रही थी। दरअसल, आरबीआइ को इसे चार फीसद तक सीमित रखने का लक्ष्य मिला हुआ है, जिसमें दो फीसद की कमी या बढ़ोतरी की गुंजाइश छोड़ी गई है। यानी यह दो से छह फीसद तक रहे, तब तक इसे नियंत्रण में माना जाता है, लेकिन इसमें असंतुलन होने पर आरबीआइ को हस्तक्षेप करना पड़ता है। कोरोना महामारी और पूर्णबंदी के असर से बाजार में जो स्थिति बनी थी, उसके बाद खाने-पीने से लेकर ज्यादातर जरूरत की चीजों की कीमतें बहुत सारे लोगों की पहुंच से दूर हो गई थीं। खासतौर पर सब्जियों के दाम ऊंचे स्तर पर बने रहे। यह सीधे-सीधे लोगों की आय और क्रय शक्ति से जुड़ा मामला था। हालांकि अब भी रोजगार और लोगों की आय के मामले में कोई बड़ा सुधार नहीं दर्ज हो पा रहा है, लेकिन महंगाई में कमी इस चुनौती का सामना करने में मददगार साबित होगा। मुश्किल यह है कि कई बार महंगाई में कमी के आंकड़ों का असर धरातल पर नहीं दिखता है। गौरतलब है कि बेलगाम महंगाई को काबू में करने के मकसद से भारतीय रिजर्व बैंक ने पिछले करीब एक साल में रेपो दरों में करीब ढाई फीसद की बढ़ोतरी की है। इसका रोजमर्रा के इस्तेमाल में आने वाली वस्तुओं की कीमतों पर तो कोई बड़ा फर्क नहीं पड़ा, लेकिन इसकी वजह से घर के लिए लिए जाने वाले ऋण सहित सभी तरह के ऋण महंगे हो गए। अब महंगाई की दरों के नियंत्रण की स्थिति में आने के बाद उम्मीद की जा रही है कि केंद्रीय बैंक की ओर से रेपो दरों में कटौती हो सकती है। मगर महंगाई के मामले में ताजा रुख का हासिल तभी राहत का सबब बन सकता है, जब इसमें स्थिरता रहे और यह आम लोगों की आय और क्रयशक्ति की सीमा के अनुपात में संतुलित रहे। साथ ही, यह भी ध्यान रखने की जरूरत होगी कि खुले बाजार में वस्तुओं की कीमतों के समांतर उनकी उपज सुनिश्चित करके आपूर्ति करने वाले किसानों को भी उनके सामान की उचित कीमत मिल सके। अगर किसानों के सामने अनाज या कोई अन्य खाद्य पदार्थ कौड़ियों के भाव बेचने की नौबत आती है और उसी वस्तु की कीमत खुले बाजार में ऊंची होती है तो यह एक तरह से असंतुलित व्यवस्था होगी और इसका असर सभी पर पड़ेगा।

नैतिकता का पाठ

इसका मकसद युवाओं में मानवीय मूल्यों और पेशेवर आचार-व्यवहार पर पाठ्यक्रम तैयार करने, केंद्र स्थापित करने और इसके लिए प्रशिक्षित शिक्षकों की भर्ती करने की योजना है। यह उसी तरह है जैसे स्कूलों में बच्चों को अनिवार्य रूप से नैतिक शिक्षा दी जाती है। इस दौर में जिस तरह युवाओं में नैतिक मूल्यों का ह्रास देखा और माना जा रहा है कि उन्हें नैतिक मूल्यों और पेशेवर आचार-व्यवहार की ठीक से शिक्षा न दिए जाने की वजह से उनमें धन लोलुपता, भ्रष्टाचार, बेईमानी, अनैतिक जीवन जीने की आदतें विकसित हो रही हैं, उसमें मूल्य शिक्षा योजना का सकारात्मक प्रभाव पड़ने की उम्मीद की जा रही है। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि भौतिकतावादी जीवन जीने की होड़ ने युवाओं को पारंपरिक भारतीय मूल्यों से विमुख कर दिया है। तड़क-भड़क और दिखावे की जिंदगी जीना उन्हें पसंद आता है, दूसरों के प्रति सहानुभूति, परोपकार आदि के भाव कमजोर पड़ते गए हैं। मगर मूल्य शिक्षा की योजना इसमें किस हद तक प्रभावी साबित होगी, ठीक-ठीक दावा करना मुश्किल है। कोई भी समाज तब तक उन्नत नहीं माना जा सकता, जब तक कि वह मानवीय मूल्यों की रक्षा नहीं कर पाता। यह ठीक है कि बदलती स्थितियों के अनुसार समाज खुद अपने मूल्यों में बदलाव कर लिया करता है, नए मूल्यों को आत्मसात कर लेता है, मगर बुनियादी मानवीय मूल्यों में बदलाव की बहुत गुंजाइश नहीं रहती। कोई समाज अपने यहां भ्रष्टाचार, हिंसा, असहिष्णुता, बेईमानी, दूसरों का हक छीन कर समृद्धि हासिल करना, गलत तरीके से संपत्ति जमा करना आदि व्यवहारों को पसंद नहीं करता। भारत तो श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों की वजह से ही दुनिया भर में जाना जाता रहा है, अगर वहीं अब इन मूल्यों में तेजी से ह्रास होता दिख रहा है, तो चिंता स्वाभाविक है। मगर फिर सवाल वही है कि क्या इसकी रक्षा पुस्तकों में अलग से पाठ शामिल कर देने या कालेजों, विश्वविद्यालयों में इससे जुड़ी गतिविधियां करा देने भर से हो पाएगी। पाठ्यक्रमों में जो भी पाठ शामिल किए जाते हैं उनके पीछे यह उद्देश्य रहता ही है कि उन्हें पढ़ कर विद्यार्थियों का संपूर्ण व्यक्तित्व विकास होगा और वे अपने समाज और देश के विकास में योगदान को तत्पर होंगे। व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में भी उनसे जुड़े नैतिक मूल्यों को स्पष्ट किया ही जाता है। इसके बावजूद अगर युवाओं में कथित रूप से नैतिक मूल्यों का ह्रास देखा जा रहा है, तो इसके पीछे की वजहों को जानना जरूरी है। नैतिकता का आकलन करते वक्त सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, व्यावसायिक आदि पहलुओं को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। जब तक व्यवस्था के स्तर पर मानवीय मूल्यों की स्थापना नहीं होती, तब तक केवल मूल्य शिक्षण से सामाजिक बदलाव की उम्मीद नहीं की जा सकती। मुनाफे की होड़ में बाजार जो भौतिकतावादी मूल्य युवाओं में भर रहा है, राजनीतिक आचार-व्यवहार जिस प्रकार दूषित हुआ है और किसी भी तरह अधिक से अधिक धन कमाना ही सफलता का पैमाना बन गया है, उसमें मूल्य प्रवाह 2.0 जैसी योजनाएं कितनी कामयाब हो पाएंगी, समझा जा सकता है। नैतिकता का वातावरण बनाने का प्रयास शीर्ष से शुरू होता है, इसके लिए क्या उपाय हो सकते हैं, इस पर भी विचार होना चाहिए।

योगी राज में मिट्टी में मिल गया है बड़े से बड़े माफियाओं का वजूद

कभी उत्तर प्रदेश देश का एक ऐसा राज्य बन गया था, जहां पर राजनेताओं व सरकारी सिस्टम के बेहद ताकतवर गठबंधन के द्वारा खुल्लम खुल्ला गुंडे, मवालियों, अपराधियों, माफियाओं व बाहुबलियों को बेखौफ होकर संरक्षण प्रदान किया जाता था। जिसके चलते कभी उत्तर प्रदेश को अपराधियों, माफियाओं और बाहुबलियों की देश में सबसे सुरक्षित पनाहगाह के रूप में पहचाना जाता था। लेकिन अब योगी राज में विचारणीय यह है कि उसी उत्तर प्रदेश में आखिरकार ऐसा क्या जादू हो गया कि उसी सरकारी सिस्टम के भय के मारे देश के बड़े से बड़े अपराधियों, माफियाओं और बाहुबलियों की सिट्टी-पिट्टी गुम होकर हवा खराब है। कभी बेखौफ होकर दूसरों की जान लेने वाले हत्यारों को आज यूपी में योगी सरकार आने के बाद से अपनी जान बचाने के लाले पड़ रहे हैं, अब यह गुंडे मवाली माफिया व बाहुबली भय के मारे देश के सर्वोच्च न्यायालय तक से अपनी जान बचाने की भीख मांगते फिर रहे हैं, जोकि नियम कायदे व कानून पसंद लोगों के लिए एक बहुत ही अच्छा संकेत है।

वैसे तो उत्तर प्रदेश में वर्ष 2017 में योगीराज की शुरूआत से ही यह स्पष्ट संकेत मिलने लगे थे कि अब यूपी में गुंडे, माफियाओं व बाहुबलियों की दाल आसानी से नहीं गलने वाली है, जिसके चलते ही उत्तर प्रदेश में अपराधियों को जेल पहुंचाने का अभियान बड़े पैमाने पर निरंतर चलाया जा रहा है। लेकिन अभी कुछ माह पहले फरवरी 2023 में जब उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में उमेश पाल व उसके दो सरकारी गनरों की हत्या सरेआम गोलियों से छलनी करके कर दी गयी थी, तब मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बजट सत्र के दौरान विधानसभा में अपराधियों व बाहुबलियों के खिलाफ अपने सार्वजनिक रूप से बेहद तीखे तेवर दिखाते हुए इन सभी को मिट्टी में मिलाने का उद्घोष किया, जो इन कुख्यात माफियाओं से त्रस्त रहने वाले आम जनमानस को बेहद ही अच्छा लगा था, हालांकि इस उद्घोष के बाद ही जिस तरह से देश व दुनिया ने बाहुबलियों को न्यायालय में जान की भीख मांगते देखा था, लेकिन योगीराज में हरकत करने वाले दुर्दांत अपराधियों पर पुलिस प्रशासन के तेजी से कसते शिकंजे ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के इस उद्घोष पर मुहर लगाने का कार्य किया है।

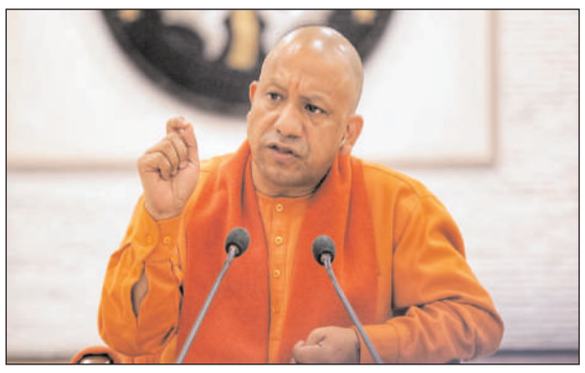

योगी राज में उत्तर प्रदेश में जिस तरह से माफियाओं बाहुबलियों और उनके सहयोगियों के विरुद्ध अभियान चलाकर उनका समूल नष्ट करके सफाया किया जा रहा है, उससे सदन में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मिट्टी में मिला देंगे वाली बात एकदम सत्य साबित होती नजर आ रही है और वह निरंतर मीडिया की सुर्खियों में हैं। हालांकि अब पिछले कुछ माह से देश की मीडिया की सुर्खियों में मुख़्तार अंसारी व अतीक अहमद के मामले छाये हुए हैं। जिसमें से पिछले चार दशकों से बेखौफ होकर के अपराध कर रहे अतीक अहमद की सल्तनत को अब जाकर योगी राज में मिट्टी में मिलाने का कार्य हुआ है, लेकिन अफसोस अतीक अहमद की हत्या हो जाने से उसको संरक्षण देने वाले लोगों की अभी भी पोल खुलनी बाकी रह गयी है। वैसे जब चार दशक में पहली बार बाहुबली अतीक अहमद को सजा सुनाई गई थी तो उस समय आम जनमानस के द्वारा यह उम्मीद की जा रही थी कि अब अतीक अहमद ताउम्र जेल की सलाखों के पीछे ही बंद रहेगा और इस निर्णय के बाद से उत्तर प्रदेश ही नहीं बल्कि देश व दुनिया में योगी राज में अपराधियों के पूर्ण सफाये के लिए चलाए जा रहे इस अभियान को जमकर के बल मिलेगा। आज उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अपराधियों के प्रति जीरो टॉलरेंस की नीतियों का सुखद परिणाम यह है कि एक बार फिर से आम जनमानस को उत्तर प्रदेश में नियम कायदे और कानून का राज पूरी तरह से वापस आने की उम्मीद जगने लगी है। साथ ही उत्तर प्रदेश के साथ आज देश का आम जनमानस भी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अपराधियों के सफाये के लिए चलाई जा रही सख्त कार्यवाही वाली नीतियों की जमकर तारीफ कर रहा है। वैसे मैंने जब से होश संभाला है तब से ही एक बात सुनते व देखते आ रहा हूं कि अगर पुलिस-प्रशासन चाहे तो माफियाओं व बाहुबलियों की उसके सामने कोई औकात नहीं है, वह पल भर में ही ऐसे लोगों के साम्राज्य को पूरी तरह से ध्वस्त करके, उनको बेघर करके जेल की सलाखों के पीछे भेजकर के पूरी तरह से नेस्तनाबूद करने की ताकत रखता है। लेकिन अफसोस की बात यह है कि सरकारी सिस्टम को चलाने वाले चंद ताकतवर लोगों के साथ इन गलत कार्य करने वाले लोगों का बेहद मजबूत गठबंधन होने के चलते, जेल की सलाखों के पीछे बंद रहने के लायक यह अपराधी लोग खुलेआम देश में सम्मानित नागरिकों के रूप में रहकर बेखौफ होकर के रंगदारी, अपहरण, हत्या जैसे गंभीर अपराध करने में व्यस्त रहते हैं। हालांकि अपराधियों के साथ सिस्टम में बैठे लोगों का इस तरह का नापाक गठबंधन हमारे सभ्य समाज के लिए बेहद घातक व चिंताजनक स्थिति है, इस तरह के जहरीले नापक गठबंधन का टूटना देश के आम जनमानस के जान-माल व सुरक्षा के दृष्टिकोण से बेहद जरूरी है। आज देश में अच्छी बात यह हो रही है कि कम से कम उत्तर प्रदेश में तो इस तरह के अपराधियों के नापाक गठबंधन को तोड़कर के उनको जेल की सलाखों के पीछे पहुंचाने व सख्त सजा दिलवाने की एक बहुत ही अच्छी शुरूआत मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अवश्य कर रखी है, जिसके परिणाम स्वरूप ही लगभग 43 वर्षों के बाद बाहुबली अतीक अहमद को पहली बार सजा होने का कार्य हुआ था। वहीं मुख्तार अंसारी, उसका भाई व उसके अन्य सहयोगी जेल में बंद हैं, उनमें से कुछ को सजा हुई है और कुछ के मामले न्यायालय में विचाराधीन हैं, मुख्तार अंसारी के भाई अफजाल अंसारी की संसद सदस्यता भी चली गयी है। वहीं हम सभी ने देखा था कि कानपुर के बिकरू गांव में 8 पुलिसकर्मियों की लाशें बिछाने वाले दुर्दांत अपराधी विकास दुबे के गैंग का योगी राज में किस तरह से सफाया किया गया था, अब फिर से वही स्थिति प्रयागराज के एडवोकेट उमेश पाल हत्याकांड में शामिल हत्यारों के साथ हो रही है। अपराधियों के द्वारा गिरफ्तारी से बचने के लिए पुलिस पर चलायी जा रही हर गोली का उत्तर प्रदेश पुलिस अब जवाब दे रही है और अपराधियों को एनकाउंटर में मौत के आगोश में पहुंचाकर के जनता को बेखौफ करने का कार्य कर रही है।

योगी आदित्यनाथ के राज में अपराधी व उनके सहयोगियों को चुन-चुन कर जेल की सलाखों के पीछे पहुंचाया जा रहा है और जो पुलिस पर गोली चलाने का दुस्साहस कर रहा है उसको गोली का जवाब दिया जाता है। हालांकि ऐसा नहीं है कि उत्तर प्रदेश में ऐसा पहली बार हो रहा है, इससे पहले वर्ष 1991-1992 में मुख्यमंत्री के रूप में कल्याण सिंह के प्रथम कार्यकाल में हमने देश के बड़े से बड़े माफियाओं व बाहुबलियों को उत्तर प्रदेश की सीमा में घुसने से परहेज करते हुए देखा है। उस समय कल्याण सिंह के खौफ के मारे या तो अपराधी उत्तर प्रदेश छोड़कर भाग गए थे या फिर वह जमानत तुड़वाकर जेलों में बंद हो गये थे। उस वक्त भी सिस्टम में बैठे कुछ बेहद ताकतवर लोगों के द्वारा अपराधियों को पाल-पोस कर उनको संरक्षण प्रदान करा जा रहा था। लेकिन मुख्यमंत्री कल्याण सिंह ने ऐसे ताकतवर लोगों की हेकड़ी निकालते हुए, उनके गठबंधन को तोड़कर के, उसी उत्तर प्रदेश पुलिस से अपराधियों का चुन-चुन कर के सफाया करवाने का कार्य बखूबी करवाया था।

तकनीकी क्षेत्रों में बढ़ती महिला श्रमशक्ति

आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होना महिलाओं की बहुत-सी परेशानियों का हल है। उनके आत्मविश्वास का आधार है। सुरक्षित जीवन जीने और अपने आत्मसम्मान से समझौता न करने के लिए यह सबसे जरूरी है। ऐसे में तकनीकी क्षेत्रों में महिला श्रमशक्ति की बढ़ती भागीदारी ने उनके जीवन के इस सबसे अहम पक्ष को संबल दिया है। बीते कुछ बरसों में तकनीक के विस्तार ने देश की आधी आबादी के कामकाजी संसार में तरक्की के नए मार्ग खोले हैं। तकनीकी क्षेत्रों में महिलाओं की बढ़ती संख्या इस बात की पुष्टि करती है। साथ ही बड़ी संख्या में युवतियों के अध्ययन के लिए तकनीक से जुड़े विषयों को चुनना भी यह बताता है कि भविष्य में महिलाएं इस क्षेत्र में बेहतर अवसर मिलने के प्रति आश्वस्त हैं।

हालांकि जीवन के हर मोर्चे पर तकनीक के बढ़ते दखल के चलते दुनिया भर में स्त्रियां इस क्षेत्र का हिस्सा बन रही हैं, पर भारत के सामाजिक-पारिवारिक परिवेश में महिलाओं को मिल रहे नए विकल्प विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। दरअसल, हमारे यहां कामकाजी महिलाओं के लिए पेशेवर जिम्मेदारियों के अलावा भी दायित्वों और आम जीवन से जुड़ी समस्याओं की एक लंबी सूची है। घर-परिवार की देखभाल और बच्चों की परवरिश के अलावा सामाजिक संबंधों के निर्वहन की जवाबदेही भी स्त्रियों के ही हिस्से आती है। ऐसे में तकनीकी क्षेत्र से जुड़ी नौकरियों में त्वरित संवाद, घर से काम करने की सुविधा और समय विशेष के मुताबिक अपना काम निपटाने की छूट मिलना बहुत मददगार बन रहा है।

यही वजह है कि तकनीकी दुनिया में कामकाजी महिलाएं न केवल अहम भागीदारी निभा रही हैं, बल्कि सक्रिय रूप से नवाचार को भी प्रोत्साहन दे रही हैं। बीते कुछ बरसों में कई नवोदित स्टार्टअप भी महिलाओं ने शुरू किए हैं। नेशनल सेंटर फार वुमन ऐंड इनफार्मेशन टेक्नोलाजी की ताजा रिपोर्ट के मुताबिक तकनीक उद्योग के कार्यबल में महिलाओं की छब्बीस प्रतिशत हिस्सेदारी है। पिछले पांच वर्षों में तकनीक की दुनिया में महिलाओं की संख्या में पांच फीसद की बढ़ोतरी हुई है। गौरतलब है कि कोरोना महामारी के दौर में मिली घर से काम करने की सुविधा से न केवल महिलाओं, बल्कि नियोक्ताओं को इसकी अहमियत समझ आई है। इस वैश्विक संकट के बाद घर से काम करने की संस्कृति को दुनिया के हर हिस्से में अपनाया गया। तकनीकी क्षेत्रों से जुड़ी भारतीय महिलाओं के लिए भी अब यह सुविधा बहुत कुछ आसान बना रही है। गौरतलब है कि हमारे यहां मातृत्व की जिम्मेदारी, तबादला या कामकाजी सम्मेलनों का हिस्सा बनने के लिए आए दिन दूसरे शहर जाने जैसी बातें महिलाओं के श्रमबल से बाहर होने की अहम वजहें रहीं हैं। ऐसे में तकनीक ने इस भागमभाग को बहुत हद तक कम किया है। मौजूदा वक्त में कामकाजी महिलाएं तकनीकी दुनिया में कार्यबल का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन चुकी हैं। कभी पूरी तरह पुरुष प्रधान रहे तकनीक के क्षेत्र में स्त्रियों की बढ़ती भागीदारी कई मायनों में अहम है। हाल में जारी ग्रांट थार्नटन रिपोर्ट के मुताबिक हमारे यहां पांच प्रतिशत महिलाओं ने हमेशा के लिए वर्क फ्राम होम चुना है।

करीब पांच प्रतिशत महिलाएं फ्लेक्सिबल वर्क यानी अपने समय और सुविधा के मुताबिक काम कर रही हैं। अपनी मर्जी से दफ्तर या घर से काम करने के विकल्प का चुनाव उनके लिए बहुत कुछ आसान बना रहा है। देखने में आ रहा है कि घर से काम करने की सुविधा से दूसरी और तीसरी श्रेणी के शहरों में रहने वाली महिलाओं की महानगरों में मौजूद बड़ी कंपनियों में भी हिस्सेदारी बढ़ी है। इसके चलते दूर-दराज के क्षेत्रों में कामकाजी महिलाओं की संख्या बढ़ रही है। घर-परिवार की जिम्मेदारियों के साथ संतुलन साधते हुए आगे बढ़ने की ऐसी परिस्थितियां आने वाली पीढ़ियों के लिए भी नई राह खोलने वाली हैं। दरअसल, हमारे सामाजिक-पारिवारिक ढांचे में महिलाओं को दायित्वों का तानाबाना आज भी मजबूती से बांधे हुए है। इन जिम्मेदारियों में संतुलन बनाए रखने से जुड़ी कई उलझनें कामकाजी दुनिया में उनकी रफ्तार कम करती हैं। हालांकि अब घरेलू आय में उनके योगदान की अहमियत भी समझी जाने लगी है, पर मानसिकता से जुड़ी मुश्किलें बदस्तूर कायम हैं। ऐसे में तकनीकी दुनिया ने उनके जीवन को सहज बनाया है। नतीजतन, तकनीकी शिक्षा और कामकाजी दुनिया में महिलाओं और बेटियों की संख्या बढ़ रही है। नेशनल स्टैटिस्टिकल आफिस के आवधिक श्रमबल सर्वेक्षण के अनुसार, भारत में 2017-18 में 17.5 प्रतिशत रही महिला श्रमबल की भागीदारी में 2020-21 तक पच्चीस प्रतिशत बढ़ोतरी हुई है। हालांकि सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में हर क्षेत्र में महिलाओं की मौजूदगी बढ़ी है, पर कृत्रिम मेधा जैसे बिल्कुल नए क्षेत्र में भी बाईस फीसद विशेषज्ञ महिलाएं हैं। अधिकतर अध्ययन बताते हैं कि आने वाले समय में यह भागीदारी और बढ़ेगी। नवाचार और तकनीक की दुनिया के हर क्षेत्र में स्त्रियां उल्लेखनीय भूमिका में होंगी। पिछले वर्ष आई डिलाइट कंपनी की एक रिपोर्ट में 2022 के अंत तक दुनिया भर की तकनीक कंपनियों में महिलाओं की भागीदारी 33 फीसद तक होने की उम्मीद जताई गई थी। इस हिस्सेदारी में 2023 में आठ प्रतिशत का इजाफा संभव है। 2022 की हुरून इंडिया की रिपोर्ट के मुताबिक निजी क्षेत्र की नामी-गिरामी पांच सौ तकनीकी कंपनियों में 11.6 लाख महिलाएं कार्यरत हैं। साथ ही हमारे यहां स्टेम शिक्षा में भी लड़कियों को बढ़ावा दिया जा रहा है। स्टेम का अर्थ साइंस, टेक्नोलाजी, इंजीनियरिंग और मैथ्स विषयों से है। आंकड़ों के अनुसार 1980 में देश में इंजीनियरिंग की सभी डिग्रियों में महिलाओं की हिस्सेदारी दो प्रतिशत से भी कम थी। चार साल पहले आल इंडिया सर्वे आफ हायर एजुकेशन की रिपोर्ट में सामने आया था कि इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी क्षेत्र की 31 प्रतिशत डिग्रियां महिलाओं द्वारा ली गई थीं।

निस्संदेह ऐसे आंकड़े बदलती सोच और बढ़ती महिला भागीदारी की बानगी हैं। कुछ समय पहले संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंतोनियो गुतारेस ने भी कहा था कि विज्ञान में ज्यादा संख्या में लड़कियां और महिलाएं, बेहतर विज्ञान के समान हैं। महिलाएं और लड़कियां शोध में विविधता साथ लेकर आती हैं, विज्ञान विशेषज्ञों के समुदाय का विस्तार करती हैं। साथ ही विज्ञान एवं तकनीक में हर किसी के लिए नया परिवेश भी बनाती हैं, जिससे हर किसी को लाभ होता है। यकीनन, महिलाओं की वैज्ञानिक सोच, तकनीकी समझ, समाज और परिवार से जुड़े हर पहलू पर सकारात्मक असर डालती है। अपनी देहरी तक सिमटी जिंदगी में भी वे संसार भर से जुड़ पाती हैं।

अभाव की परतें

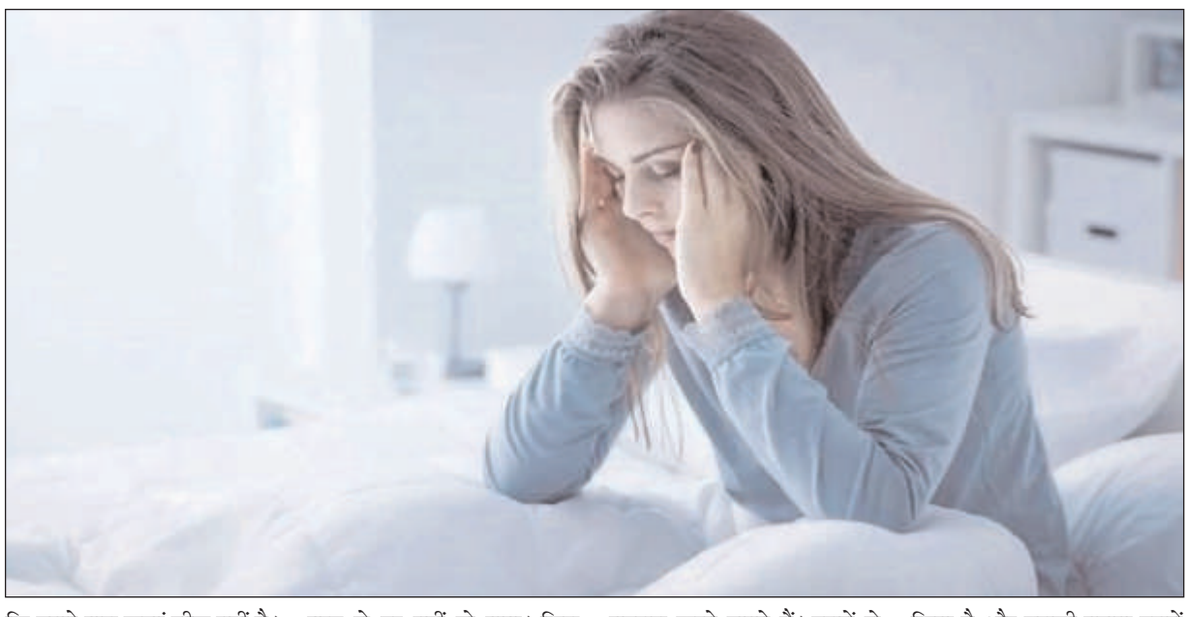

सब कुछ होते हुए भी किसी न किसी तरह का अभाव व्यक्ति को होता है और उसे दूर करने के लिए प्रयास भी होता है, लेकिन अभावों की सूची इतनी बड़ी होती जाती है कि उसे पूरा करने में जिंदगी बीत जाती है, लेकिन अभाव पूरे नहीं होते। किसी के पास पैसे नहीं हैं तो किसी के पास घर नहीं है। किसी को नींद का अभाव है, तो किसी के पास समय नहीं है। किसी को सुंदर नहीं माना जाता है तो कोई अस्वस्थ है। किसी के पास खुशी की कमी है, तो कोई शांति की कमी महसूस कर रहा है। इस तरह न जाने कितनी तरह की कमियां हैं, जिन्हें लोग दूर करना चाहते हैं। लेकिन प्रयास करने पर भी कुछ न कुछ अधूरा रह जाता है।

एक बहुत महत्त्वपूर्ण कथन है- ह्यसब कुछ तो किसी के पास नहीं होता, पर कुछ न कुछ हर किसी के पास होता है। जरूरी यह है कि हम उस ह्यकुछ न कुछ पर भी अपना ध्यान केंद्रित करें। अन्यथा हमारे जीवन को दौड़ कभी थमेगी नहीं। हमारे मन का पूरा ध्यान इस बात पर केंद्रित होता है कि हमारे पास क्या नहीं है? और उस खाली स्थान को भरने का हम प्रयास करने लगते हैं। हम कभी भी अपने आप से संतुष्ट नहीं रहते और बहुत कुछ होते हुए भी अभावों से परेशान होते रहते हैं कि हमारे पास फलां चीज नहीं है। अगर अमुक वस्तु हमारे पास होती तो कितना अच्छा होता। पर उस वस्तु के मिलते ही उसका महत्त्व कम हो जाता है और थोड़े दिनों के बाद फिर कोई नई चीज पाने की इच्छा जाग जाती है। इस तरह यह क्रम चलता रहता है। न हम अपने अभावों को दूर करने वाली इन वस्तुओं से खुश होते हैं और न खुद से इसे दूर कर पाते हैं। इसे दूर करने का केवल एक ही तरीका है- ह्यदृष्टिकोण। सही दृष्टिकोण के अभाव में जीवन में अभाव बना रहता है और पूरी तरह से दूर नहीं हो पाता। जिस समाज में हम रहते हैं, वहां हम अपने समान दूसरे लोगों को देखते हैं कि कौन कितनी प्रगति कर पाया है, किसके पास क्या है। और दूसरों से अपनी तुलना करने लगते हैं। जब हम अपने से कम स्तर के लोगों से अपनी तुलना करते हैं तो अहंकार पैदा होता है और अपने से अधिक संपन्न लोगों की ओर देखते हैं तो अभाव की भावना जन्म लेती है। दोनों ही परिस्थितियों में हम अपनी ओर नहीं देखते कि हमारे पास क्या है और अपने आपको अभावग्रस्त महसूस करने लगते हैं। दूसरों से तुलना करते हुए खुद को कम आंकने से यह लगता है कि कहीं ऐसा तो नहीं कि अभावों के कारण हमें कम प्यार या कम सम्मान मिल रहा है। इस तरह की सोच व्यक्ति को हीनताग्रस्त बना देती है और नकारात्मकता से भर देती है। अगर इस सोच को सकारात्मक दृष्टि से देखा जाए तो यह अहसास हो सकता है कि हमारे पास जो कुछ भी है, वह किसी से कम नहीं है। हमने जो कुछ भी कमाया है, वह अपने प्रयास और परिश्रम से अर्जित किया है और उसकी तुलना दूसरों से करना उचित नहीं है, क्योंकि ऐसा करके हम अपने आप को कमजोर और हीन सिद्ध करते हैं। दूसरों की प्रगति देखकर खुश होना चाहिए और आगे बढ़ने की प्रेरणा लेनी चाहिए, लेकिन हर समय अपना ध्यान दूसरों पर केंद्रित रखते हुए अनावश्यक परेशान रहना, अपनी कमियों को निहारना ठीक नहीं है। इस तरह की सोच रखने वाले लोग आमतौर पर अपनी ही ओर से निर्मित कई तरह की बाधाओं से जूझते रहते हैं। वे न प्रगति करते हैं और न ही अपना सही मूल्यांकन कर पाते हैं।

अगर हम अपने अभावों को सही अर्थों में दूर करना चाहते हैं तो सबसे पहले हमें स्वयं का मूल्यांकन करना आना चाहिए। हमें अपनी योग्यता, क्षमता को स्वीकारना आना चाहिए, न कि उसे नकारना। इसी के माध्यम से हम कुछ कर पाते हैं। यह जरूर है कि योग्यता होने के बावजूद बहुत-सी चीजें ऐसी हैं, जो हमारी पहुंच से दूर होती हैं। हमारी जिंदगी शिकायतों से भरी है, लेकिन हम अकेले ऐसे व्यक्ति नहीं हैं, जो अभावों में जी रहे हैं। कहीं ऐसा तो नहीं कि इन अभावों के आगे हम हार मान गए हैं या इन अभावों को कोसते रहने की हमारी आदत हो गई है, हम अपनी इन आदतों पर नियंत्रण नहीं कर पा रहे हैं और हम ही इनके नियंत्रण में आ गए हैं। कई बार लगातार मायूसी या दुख के हालात में घुलते रहने पर ऐसा हो जाता है कि व्यक्ति उन्हीं स्थितियों का अभ्यस्त हो जाता है। दुख की आदत होने पर दुख से बचने या उससे दूर होने की इच्छा सो जाती है। ऐसा नहीं होना चाहिए। अपनी आदतों पर गौर करना, उसकी सकारात्मक और नकारात्मक बातों की पहचान करना उसमें सुधार लाने की दिशा में सबसे पहला पायदान है।

किसान दिवस पर जनपद के बांध की स्थिति से किसान नेताओं ने अधिकारियों को कराया अवगत

सूखे बांधों के पानी के सहारे 356856 घरों को शुद्ध पेयजल मुहैया कराना मात्र एक सपना

प्रखर मिजार्पुर। जिला मुख्यालय पर बुलाए गए किसान दिवस में किसानों के विभिन्न संगठनों के नेताओं ने जनपद के सूखे बांध एवं सिंचाई की समस्या से अवगत कराया। पत्रक के माध्यम से किसान नेता बजरंगी कुशवाहा ने बताया कि जल निगम के एक्सियन राजेन्द्र कुमार ने जो दावा किया है कि, 15 मई 2023 तक जनपद के ढाई लाख घरों में जलनल योजना द्वारा शुद्ध पेयजल पहुंचा दिया जायेगा, यह केवल आवाम को सपना दिखाना मात्र है। यह उद्गार किसान कल्याण समिति जरगों कमाण्ड के कार्यवाहक अध्यक्ष बजरंगी कुशवाहा ने पत्र के माध्यम से जनपद के अधिकारियों को अवगत कराया। कुशवाहा ने बताया कि, विगत 5 मई 2023 को पत्रकारों के माध्यम से जल निगम के एक्सियन ने जनपद के नागरिकों को जो जानकारी दिया है उसके माध्यम से बताया है कि,

उक्त शुद्ध जल जरगों डैम, सिरसी, अपर खजुरी, अदवा डैम, डोंगिया डैम से पानी लेकर उसे वाटर ट्रीटमेंट प्लांट में शोधित कर पेय जल हेतु ग्रामीणों को उपलब्ध कराया जायेगा। जबकि सभी डैम (बांध) जलबिहीन (सूख) गये हैं तो यह आम नागरिकों को सपना दिखाना या धोखा देना नहीं तो और क्या है। कुशवाहा ने आगे बताया कि, केवल नाम मात्र का पानी जरगों में बचा है जो समिति के निगरानी की देन। उस पानी के अलावा किसी भी बांध में पानी नहीं है। जल निगम व कार्यदाई संस्था पानी कहां से लायेगी । ये लोग केवल किसी तरह से येनकेन प्रकारेण गाँव में नल के टोटी से पानी गिरता दिखाकर शासन के पैसे का बन्दर बांट करके योजना को ह्व ग्राम पेयजल एवं स्वच्छता समिति ह्व को हैण्डोभर करके यहाँ से फुर्र होना चाहते हैं। जो कत्तई उचित नहीं है। कुशवाहा ने कार्यदाई संस्था पर आरोप लगाते हुए कहा कि बार बार आग्रह के बाद भी इनके द्वारा जलनल की पाइप बिछाने के नाम पर गाँव की गलियों खड़ंजों व लिंक रोड की जो खोदाई करके अस्त ब्यस्त कर दिया है उसे अभी तक ठीक नहीं कराया है। जिला प्रशासन से आग्रह है कि, इनके द्वारा इनसे ठीक कराये जाने की बयवस्था कर समस्त बाधों को पानी से भरने के पूर्व किसी को भी बांध से पानी लेने से रोकने की बयवस्था करें। और कार्यदाई संस्था को जनपद के सभी ग्राम पंचायतों से बगैर एन ओ सी लिये नं जाने दें।

पेंशन बहाली के लिए धरना प्रदर्शन को कर्मचारी हुए लामबंद

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद जनपद गाजीपुर द्वारा 18 मई 23 को होने वाले एक दिवसीय धरना प्रदर्शन को सफल बनाने के लिए विकास भवन सहित जनपद के अन्य कार्यालयों का भ्रमण किया गया। जिसमें राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद के जिलाध्यक्ष दुर्गेश श्रीवास्तव द्वारा सब से अपील किया गया कि कर्मचारी शिक्षक संयुक्त मोर्चा उत्तर प्रदेश व राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद उत्तर प्रदेश के प्रान्तीय आवाहन पर पुरानी पेंशन बहाली सहित 12 सूत्रीय मांगों को लेकर विकास भवन गाजीपुर पर सुबह10बजे से प्रस्तावित है,यह वर्ष हम श्रमिकों के लिए संघर्ष का वर्ष है, हम कर्मचारी शिक्षकों के लिए यह वर्ष संगठनों के लिए अस्तित्व की लड़ाई है, उन्होंने नौजवान कर्मचारी शिक्षकों का दिनांक 18 मई 2023 को होने वाले एक दिवसीय धरना प्रदर्शन को सफल बनाने के लिए आवाहन किया,और सब से अनुरोध भी किया कि सब भेदभाव मिटाकर होने वाले धरने को सफल बनाएं, जिससे अपनी मांगों को पूरी करने के लिए सरकार को विवश होना पड़े, कार्यालय बेसिक शिक्षा, पशुपालन विभाग, समाज कल्याण, ग्रामीण अभियंता विभाग, नेडा, मत्स्य विभाग, जिला विद्यालय निरीक्षक, जिला पंचायत राज अधिकारी, कायार्लाय जिला विकास अधिकारी, कार्यालय युवा कल्याण खेल विभाग अल्पसंख्यक

विभाग, लघु सिंचाई विभाग, पंचस्थानी कार्यालय, विकलांग कार्यालय, सहित जनपद के अन्य विभागों का दौरा किया गया, भ्रमण टीम में दुर्गेश कुमार श्रीवास्तव ओंकार नाथ पांडे, आलोक राय, मांधाता सिंह,अभय सिंह, रोशन लाल, जयप्रकाश बिंद, विपिन सिंह, धर्मराज सिंह,अमित कुमार,सुरेश कुमार,आदि लोग उपस्थित रहे ।

संक्षिप्त खबरें

जौनपुर दीवानी न्यायालय में पेशी के दौरान हत्या आरोपियों पर की गई फायरिंग के मामले में दोषी पाए जाने पर दरोगा सहित छह पुलिसकर्मी निलंबित

प्रखर जौनपुर। दीवानी न्यायालय परिसर जौनपुर में श्रवण कुमार यादव ने गेट नंबर 3 से प्रवेश कर न्यायालय परिसर में स्थित लाकअप पर पहले से पेशी में लाए गए बंदी 1.सूर्य प्रताप राय उर्फ गोलू राय 2.मिथिलेश गिरि उर्फ डब्लू गिरि के ऊपर गोली चलाई जिससे दोनों बंदी घायल हो गए। गेट नंबर 3 पर मौजूद कर्मियों द्वारा तलाशी नहीं लिया गया जिसके कारण श्रवण कुमार यादव असलहा लेकर न्यायालय परिसर में प्रवेश कर उक्त घटना को कारित किया। गेट नंबर तीन पर मौजूद कर्मियों का कृत्य अपने कर्तव्य के प्रति घोर लापरवाही एवं उदासीनता का द्योतक है। जिसके कारण निम्न पुलिसकर्मियों को तत्काल प्रभाव से निर्लंबित किया जाता है।

1.उ0नि0 कालीचरण कन्नौजिया
2.मु0का0 संतोष कुमार गुप्ता
3.मु0का0 संजय यादव
4.मु0का0 जय किरन सोनकर
5.का0 अनिल चौहान
6.म0का0 अर्चना मौर्य।

पंचायत भवन का ताला तोड़कर कंप्यूटर हार्ड डिस्क चोरी

प्रखर अहरौरा मिजार्पुर । स्थानीय थाना क्षेत्र के नरायनपुर विकास खंड में स्थित मुजडीह के पंचायत भवन का ताला तोड़कर चोर हजारों रुपए का सामान उठा ले गए। वाराणसी शक्तिनगर मार्ग के किनारे स्थित मूजडीह के पंचायत भवन में मंगलवार की रात चोरों ने कम्प्यूटर बैटरी ने हार्ड डिक्स सहित अन्य सामान पर हाथ साफ कर दिया। चोर अब तक कई पंचायत भवन को निशाना बना चुके है । मंगलवार की रात्रि वाराणसी शक्तिनगर मार्ग से सटे हुए पंचायत भवन को निशाना बनाते हुए चोरों ने कंप्यूटर समेत कई सामान उठा ले गए। इस बात की जानकारी तब हुई जब पंचायत सहायक कमलेश कुमार बुधवार को सुबह 10 बजे पंचायत भवन का ऑफिस खोलने पहुंचा। ग्राम पंचायत अधिकारी सुरेंद्र कुमार ने बताया की घटना की जानकारी हुई है। ग्राम प्रधान एवं पंचायत सहायक द्वारा पुलिस को सूचना दी गई है।

घंटाघर सब्जी मंडी गेट से बाइक चोरी, पुलिस तलाश में जुटीं

प्रखर मिजार्पुर। शहर कोतवाली क्षेत्र के घंटाघर उत्तरी गेट पर सब्जी मंडी की ओर खड़ी मोटरसाइकिल चोरों ने गायब कर दिया। वाहन स्वामी अजेश सोनकर देहात कोतवाली क्षेत्र के महेवा गाँव का निवासी हैं। अजय सोनकर सब्जी मंडी में करैला बेचने आया था। पीड़ित ने शहर कोतवाली में गुम हुई बाइक की तहरीर दी है।पुलिस जांच करते हुए सी सी टी वी खंगाल रही हैं। बताया जाता है कि महेवा गांव निवासी अजेश सुनकर मंगलवार को करैला लेकर लेकर मंडी में आया था । उसने घंटाघर के उत्तरी गेट के पास अपनी बाइक खड़ा कर दी। इसके बाद सब्जी लेकर आढत पर गया। करीब आधा घंटा बाद ही लौट कर आने पर उसकी बाइक गायब थी। जिसे उसने अपनी मेहनत की कमाई से 29 फरवरी 2016 में बड़े ही शौक से खरीदा था। जिसका नम्बर यूपी 63 वाई 2605 नंबर स्प्लेंडर प्लस बाइक को मिला था। लिहाजा अब वह पुलिस के साथ बाइक की तलाश कर रहा है।

किसान कल्याण समिति एवं लोक शक्ति की संयुक्त बैठक 20 मई को

प्रखर अहरौरा मिजार्पुर। अहरौरा किसान कल्याण समिति जरगों कमाण्ड एवं भारतीय किसान यूनियन लोकशक्ति की मासिक बैठक जरगों डाक बंगला पर 20 मई को सुबह 10 बजे से होगी बैठक में मुख्य रूप से जरगों कमाण्ड व आसपास के समस्त किसानों को बर्तमान में भयंकर सूखे की मार से बचने हेतु गंभीरता से बिचार विमर्श किया जायेगा! उक्त जानकारी किसान कल्याण समिति जरगों कमाण्ड के कार्यवाहक अध्यक्ष बजरंगी कुशवाहा ने देते हुए बताया कि किसान कल्याण समिति जरगों कमाण्ड की तरफ से क्षेत्र के समस्त किसान संगठनों, सामाजिक संगठनों, पदाधिकारियों,जागरूक किसानो के अलावा जनप्रतिनिधियों से उक्त बैठक में उपस्थित होने का आग्रह किया गया है। ताकि जनप्रतिनिधि किसानों की समस्याओं से अवगत होकर उसके समाधान का उपाय करने हेतु सुझाव देते हुए अपने कर्तब्य का निर्वहन करें! बैठक में सिंचाई विभाग एवं जल निगम के अधिकारियों को भी आमंत्रित किया गया है।

नाबालिग से दुष्कर्म मामले में आरोपियों को मिली 20-20 साल की सजा

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। विशेष न्यायाधीश पास्को प्रथम राकेश कुमार ने बुधवार को नाबालिग पीड़िता के साथ दुष्कर्म के आरोपियों को 20 20 साल की सजा सुनाते हुए प्रत्येक पर 45झ45हजार रुपए का जुमार्ना लगाया है। जुमार्ना की राशि से पीड़िता को 75% प्रतिकार के रूप में देने का आदेश भी दिया है। जानकारी के अनुसार बिरनो थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी ने बिरनो थाने में तहरीर देकर बताया था कि 7 अगस्त 18 को उसकी नाबालिग पुत्री को गांव के ही उपेंद्र राजभर तथा मेवा लाल राजभर कहीं बहला फुसलाकर ले गए थे। काफी खोजबीन करने के बाद पता नहीं चला। दो दिन बाद लड़की मिली और उसके साथ दुष्कर्म होने की बात सामने आई। केश दर्ज करने के बाद पुलिस ने आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। पुलिस ने पीड़िता का मेडिकल कराने के बाद आरोपियों के विरुद्ध न्यायालय में आरोप पत्र पेश किया विवेचना के दौरान अभियोजन की तरफ से विशेष लोक अभियोजक प्रभु नारायण सिंह ने कुल 7 गवाहों को पेश किया। सभी ने अपना अपना बयान न्यायालय में दर्ज कराया। न्यायालय ने दोनों तरफ की बात सुनने के बाद यह फैसला सुनाते हुए सभी आरोपियों को जेल भेज दिया।

दीवानी न्यायालय में गोली काण्ड पर तहसील अधिवक्ताओं का विरोध प्रदर्शन, की नारेबाजी

प्रखर मछलीशहर जौनपुर। दीवानी न्यायालय परिसर में 16 जनवरी को हुई फायरिंग के विरोध में बुद्धवार को तहसील अधिवक्ताओं ने न्यायिक कार्य से विरत रहे। तहसीलदार न्यायालय के सामने पुलिस और प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी किया। अधिवक्ता ने बैठक कर सभी न्यायालयों के अधिवक्ताओं की सुरक्षा की मांग करते हुये तहसील व जिला मुख्यालयों में आवश्यक पुलिस बल तैनाती की मांग की गई।इस अवसर पर अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष रघुनाथ प्रसाद,महामंत्री बनवारी राम मौर्य,भरत लाल यादव,सुरेन्द्र मणि शुक्ला,आर पी सिंह,सरजू प्रसाद विन्द,सतिराम यादव,अजय सिंह,बाबू राम,सरिता मिश्रा,महाबली यादव,इशांत मिश्रा आदि उपस्थित थे।

मां-बाप को ठुकरा प्रेमी के साथ गई बेटी, रोते रह गए परिजन

भीमपुरा। भीमपुरा थाने मां-बाप के लाख समझाने के बाद भी बेटी ने मां की ममता का गला घोट मां की आंखों के सामने प्रेमी के साथ लग्जरी कार में सवार हो चली गई। मां अपनी फटी आंखों में आंसू लिए हुए देखती ही रह गई। भीमपुरा थाना क्षेत्र के गांव निवासी का गांव ही युवती से कई सालों से प्रेम संबंध चल रहा था। इसकी भनक परिवार के लोगों को नहीं थी। शुक्रवार को दोनों प्रेमी युगल घर से गायब हो गए। इसके बाद लड़की के परिजनों ने इसकी शिकायत भीमपुरा थाने में की। पुलिस के दबाव बनाने पर सोमवार को युगल प्रेमी सीधे न्यायालय से कोर्ट मैरिज कर कागज लेकर थाने पहुंचा। इसके बाद से पुलिस ने दोनों के परिजनों की सूचना दी। दोनों के परिजन रिश्तेदार और गांव के लोगों के साथ थाने पहुंचे। दोनों को घंटों मनाने का प्रयास किया गया लेकिन दोनों एक दूसरे के साथ रहने की जिद पर अरे रहे। इसके बाद पुलिस ने दोनों को बालिग होने की दुहाई देते हुए कहा कि इन्हें अपने जिंदगी का फैसला करने का अधिकार है। मां अपनी बेटी को अपने साथ ले जाने की जिद पर अड़ी रही, लेकिन बेटी ने मां की ममता को ताक पर रखते हुए न जाने को तैयार थी। इसके बाद से पंचायत खत्म हो गई और मां के आंखों के सामने ही बेटी अपने प्रेमी के साथ लग्जरी कार में बैठकर प्रेमी संग रवाना हो गई।

अवधेश राय हत्याकांड बचाव पक्ष की ओर से बहस पूरी

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। विशेष न्यायाधीश (एमपी, एमएलए) अवनीश गौतम की अदालत में विचाराधीन अवधेश राय हत्याकांड में सोमवार को मुख्तार अंसारी की ओर से अधिवक्ता श्रीनाथ त्रिपाठी की कई तिथियों से जारी बहस पूरी हो गई` अदालत ने इस मामले में अब अगली सुनवाई के लिए 19 मई की तिथि नियत की है उस तिथि को अभियोजन पक्ष की ओर से एडीजीसी विनय कुमार सिंह द्वारा अपनी जबाबी बहस और वादी अनुज यादव व विकास सिंह के साथ ही बचाव पक्ष अपनी लिखित बहस अदालत में दाखिल करेंगे` बता दें कि लहुराबीर क्षेत्र में तीन अगस्त 1991 को अवधेश राय की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। इस हत्याकांड को लेकर मृतक के भाई पूर्व विधायक अजय राय ने मुख्तार अंसारी,पूर्व विधायक अब्दुल कलाम, राकेश न्यायिक समेत पांच लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया था।

उत्तरीय रेलवे मजदूर यूनियन के सहायक मंडल मंत्री एवं वाराणसी शाखा के अध्यक्ष चंद्रशेखर यादव ने उत्तरी रेलवे मजदूर यूनियन छोड़कर नार्दन रेलवे मेंस यूनियन की सदस्यता किया ग्रहण

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। पूर्वोत्तर रेलवे प्रेक्षागृह में ऑल इंडिया रेलवे मेंस फेडरेशन एवं नॉर्दन रेलवे मेंस यूनियन के कार्यशैली से प्रभावित होकर महामंत्री ऑल इंडिया रेलवे मेंस फेडरेशन के समक्ष उत्तरीय रेलवे मजदूर यूनियन के सहायक मंडल मंत्री एवं वाराणसी शाखा के अध्यक्ष चंद्रशेखर यादव ने उत्तरी रेलवे मजदूर यूनियन छोड़कर अपने सैकड़ों साथियों के साथ नार्दन रेलवे मेंस यूनियन की सदस्यता ग्रहण किया इनमें प्रमुख रूप से चंद्रशेखर यादव, जितेंद्र यादव, भूपेंद्र सिंह, रामाशंकर आदि रहे ऑल इंडिया रेलवे मेंस फेडरेशन के महामंत्री शिव गोपाल मिश्रा ने चंद्रशेखर यादव व नार्दन रेलवे मेंस यूनियन जॉइन करने

वाले सभी कर्मचारियों को नॉर्दन रेलवे मेंस यूनियन की सदस्यता दिलाई एवं सम्मानित करने का काम किया उन्होंने कहा की इस समय सभी साथियों को एकजुट होकर एक मंच से नई पेंशन योजना का विरोध करने की आवश्यकता है पुरानी पेंशन बहाल होने तक संघर्ष को जारी रखना है इस अवसर पर नार्दन रेलवे मेंस यूनियन लखनऊ मंडल के मंडल अध्यक्ष विभूति मिश्रा,भूतपूर्व मंडल अध्यक्ष राजेश सिंह नॉर्दर्न रेलवे मेंस यूनियन के शाखा मंत्री सुनील कुमार सिंह , एन ई रेलवे मजदूर यूनियन के महामंत्री केएल गुप्ता ,केंद्रीय अध्यक्ष बसंत चतुर्वेदी, वाराणसी मंडल के मंडल मंत्री एन बी सिंह मौजूद रहे।

सबसे ज्यादा वोट पाकर निर्दल प्रत्याशी चांदतारा ने रचा जिले में इतिहास : तिलक धारी यादव

प्रखर जौनपुर। नगर निकाय चुनाव में जहां इस वर्ष बहुत सारे रिकॉर्ड बने बिगड़े वही जौनपुर के वार्ड नंबर 6 कलीचाबाद से निर्दल प्रत्याशी चांदतारा देवी रिकॉर्ड 998 वोट से विजय हासिल की है वही दूसरे नंबर पर रितेश भारती समाजवादी पार्टी से दूसरे नंबर पर रहे। वार्ड नंबर 6 की वर्तमान सभासद शकुंतला यादव के पुत्र तिलकधारी यादव ने बताया कि सन 2019 में निकाय चुनाव में उन्होंने भारी मतों से जीत हासिल कर क्षेत्र का विकास किया था, और जब इस बार उक्त सीट आरक्षित कोटे में चली गई तो उन्होंने निर्दल प्रत्याशी के रूप में चांद तारा देवी का समर्थन किया और उनके द्वारा क्षेत्र में किए गए पूर्व के कार्यों से प्रभावित होकर क्षेत्र की जनता ने उन पर एक बार फिर से अपना विश्वास कायम किया और रिकार्ड मतों से निर्दल प्रत्याशी चांदतारा देवी को जीत दिलाई। एक सवाल पूछे जाने पर उन्होंने बताया कि वह समाजवादी पार्टी के नेता हैं और रहेंगे उनके तेवर बागी नहीं है, लेकिन प्रदेश के राष्ट्रीय नेता की

तरफ से इशारा मिलने के बावजूद जब जिले के एक व्यक्ति विशेष के द्वारा उनका टिकट काटा गया तो इससे उनके मान सम्मान को ठेस पहुंचा, यही नहीं टिकट कटने की घटना के कारण उनकी माता पूर्व सभासद शकुंतला यादव को सदमा लग गया जिसकी वजह से उनको हृदयघात हो गया और चुनाव से कुछ दिन पहले ही वह ईश्वर को प्यारी हो गई, इस दो तरफा घटना के बाद तिलकधारी बहुत आहत हो गए लेकिन क्षेत्र की जनता ने अपना आपार प्यार उन पर लुटा कर उनके विश्वास को कायम किया जिसके लिए वह अपने क्षेत्र की जनता के प्रति कृतज्ञ हैं।

पुरानी रंजिश को लेकर महिलाओं समेत आधा दर्जन लोगों को मारपीट कर किया घायल

प्रखर जौनपुर। खेतासराय थाना क्षेत्र के अब्बोपुर गांव में मंगलवार रात करीब 9 बजे पुरानी रंजिश को लेकर एक पक्ष के लोगों ने हमला करके महिलाओं समेत आधा दर्जन से अधिक लोगों को मारपीट कर घायल कर दिया। गांव के दयाराम बिंद से उसी गांव के एक व्यक्ति से जमीनी विवाद चल रहा था। उसी रंजिश को लेकर दयाराम बिंद के विपक्षी ने लाठी.डंडे और लोहे की रॉड से लैस होकर एक दर्जन से अधिक की संख्या में जुट कर दयाराम बिंद के परिवार पर हमला कर दिया। हमले में दयाराम और उनकी पत्नी सुदामा देवी सुखना देवी पत्नी नंदलाल और नंदलाल की पुत्री रीना देवी अजय पुत्र संतलाल सरोजा देवी पत्नी संतलाल और नंदलाल 55 वर्ष अजय कुमार 20 वर्ष पुत्र नंदलाल घायल हो गए हैं। सभी घायलों को सोंधी ब्लॉक पर ले जाया गया जहां चिकित्सकीय परीक्षण के बाद तीन लोगों की हालत गंभीर होने के कारण दयाराम और उनकी पत्नी सुदामा देवी नंद लाल की पत्नी सुखना देवी को जिला अस्पताल के लिए रिफर कर दिया गया है।

सचिवालय में सहायक अनुभाग अधिकारी बन अर्पित ने किया क्षेत्र का नाम रोशन

प्रखर जौनपुर। सुईथाकला - विकासखंड क्षेत्र अंतर्गत जमदरा गांव के अर्पित यादव पुत्र सुरेश चंद्र यादव का चयन केंद्रीय सचिवालय के सहायक अनुभाग अधिकारी के पद पर हुआ है.उन्होंने एसएससी 2022 की परीक्षा में 1968 वीं रैंक हासिल करके जनपद का मान बढ़ाया है.इस सफलता से क्षेत्र के युवाओं में प्रतिस्पर्धा का माहौल बन गया है. परिजनों, सगे संबंधियों में खुशी की लहर है. इस उपलब्धि पर उन्होंने बताया कि यदि हम लक्ष्य प्राप्ति के लिए निरंतर प्रयासरत रहें तो सफलता जरूर मिलेगी.उपलब्धि हासिल होने में समय लगता है.कम पढ़ेंगे चलेगा किंतु सतत प्रयास जारी रहना चाहिए मंजिल अवश्य मिलेगी. उन्होंने युवाओं को सुझाव दिया कि लक्ष्य प्राप्ति में सोशल मीडिया से दूरी बनाना जरूरी है जो हमारी एकाग्रता में बाधक साबित होती है.उन्होंने अपनी सफलता का श्रेय माता -पिता और अपने मामा अनुराग यादव,अनुपम यादव तथा अश्विनी यादव को दिया है. रिश्तेदारों ,क्षेत्र के गणमान्य नागरिकों तथा दोस्तों ने भी बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाएं दी हैं. गौरतलब है कि इनकी प्रारंभिक शिक्षा दीक्षा गांव के ही प्राथमिक विद्यालय पट्टी चकेसर, हाई स्कूल इंटरमीडिएट तथा बीएससी की परीक्षा श्री विश्वनाथ प्रताप पीजी कॉलेज कलान से पास की इसके पश्चात प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए लगातार तैयारी करते रहे. छोटी नौकरियों से जीवन का सिलसिला शुरू हुआ.संघर्ष करके ऊंचाई पर पहुंचे जो प्रत्येक प्रतियोगी परीक्षाओं में संघर्षरत छात्र के लिए मिसाल साबित हो रहे हैं.यदि हौसला बुलंद हो तो एक न एक दिन जीवन की ऊंचाई की बुलंदियों को छूना असंभव नहीं है जिसे उन्होंने करके दिखाया.

एक नजर इधर भी, जब होटल ने खड़ा किया हाथ तो घर की महिलाएं आई आगे, रसगुल्ला छोड़ ज्वार के लड्डू पर टूट पड़े मेहमान

प्रखर गाजीपुर। (गौरीशंकर पाण्डेय सरस) श्री अन्न की शुरूआत अब मांगलिक कार्यक्रमों में भी होने लगी है। वैसे तो 2023 अंतरराष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष के रूप में घोषित है किंतु इसका प्रचार प्रसार जमीनी स्तर पर कम देखा जा रहा है। मंगलवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संसदीय क्षेत्र वाराणसी में इसकी शुरूआत रिंग रोड सिंधोरा कट के पास सद्गुरु फैमिली रेस्टोरेंट्स शुरू हो गई जहां सामाजिक कार्यकर्ता ब्रज भूषण दुबे के बेटी प्राची की सगाई प्रयागराज स्थित फौजी छोटेलाल दुबे के बेटे प्रवीण से हो रही थी जो एयरटेल में मैनेजर के पद पर प्रयागराज में कार्यरत हैं। प्राची की सगाई के कार्यक्रम में कुल 5 प्रकार के मोटे अनाज को शामिल किया था जिसमें रागी और बाजरे की रोटी, ज्वार तथा बाजरे का का लड्डू सांवां की खीर एवं कोदो की रोटी महमानो को नाश्ता और भोजन के रूप में दी गई। प्राची ने जहां होने वाले पति प्रवीण को ज्वार और बाजरे का लड्डू खिला कर स्वागत किया वही ब्रज भूषण दुबे ने अपने होने वाले समधी और भूतपूर्व सैनिक छोटेलाल दूबे को सांवां/ झंगोरा की खीर खिलाकर मोटे अनाज को थाली में शामिल करने का संदेश दिया। प्राची ने अपने होने वाली सासू मां सहित अन्य महिलाओं को ज्वार एवं बाजरे का लड्डू खिलाकर उनका मुंह मीठा कराया। प्राची ने कहा कि हमारे रसोई में पहले से ही मोटा अनाज शामिल है। मैं ससुराल जाकर भी वहां की रसोई में मिलेट्स को बढ़ावा दूंगी। प्राची स्वयं यूट्यूबर हैं तथा उनके पिता चर्चित यूट्यूबर ब्रज भूषण दूबे के चैनल पर लगभग साढ़े सोलह लाख सब्सक्राइबर एवं

करोड़ों दर्शक हैं। उनके चैनल को 180 देशों द्वारा देखा जाता है। महिलाओं ने तैयार किया था 100 लोगों के लिए सुपर फूड- सगाई में घराती बराती मिलकर लगभग सौ लोग शामिल थे जिनके लिए स्वयं प्राची उनकी मां रंजना सहित घर व पड़ोस की महिलाओं ने मिलकर बाजरे व ज्वार का लड्डू तैयार किया था जिसे कास व सरपत की डलिया तथा मिट्टी के वर्तन में परसा गया।

श्री अन्न की रोटी बनाने में जब हाथ खड़ा किया होटल ने- सगाई स्थल सिंधोरा स्थित सद्गुरु रेस्टोरेंट्स ने मड़वा, कोदो बाजरा और ज्वार की रोटी बनाने में हाथ खड़ा कर दिया। कहा हमारे बावर्ची/कुक ऐसे अनाज का नाम तक नहीं सुने हैं वे इनका भोजन बनाएंगे कैसे? बावर्चियों को ऐसे भोजन के वीडियो भी दिखाए गए उसके बाद भी जब वे तैयार नहीं हुए तो महिलाओं ने उठाया बीड़ा और लगभग सौ लोगों के लिए सुपर फूड की रोटियां तैयार कर दिया।

कहां से आया था सुपर फूड- प्राची के पिता ब्रज भूषण दुबे ने बताया कि ज्वार और बाजरा तो अपने जिले गाजीपुर में गंगा के किनारे वाले गांव से मंगाया था वही सावां, कोदो और मंड़वा/रागी को उत्तराखंड से मंगाया था।

जहां तक इसके मूल्य का सवाल है तो ज्वार बाजरा 35 से 40 किलो तक आराम से मिल जाएगा वही मड़वा और सावां यदि उत्तराखंड से मनाया जाए तो 100 किलो से कम के रेट में मिल सकता है। वैसे अब यह सुपर फूड विभिन्न शहरों के माल में बेचे जा रहे हैं।

इसके लड्डू बनाने में देसी गुड़ एवं देसी घी का प्रयोग किया गया था। यदि मूल्य का आकलन किया जाए तो छेना के रसगुल्ला और गुलाब जामुन से कीमत इसकी कम पड़ेगी वहीं सेहत का खजाना है मोटा अनाज। भयंकर बीमारियों से हमको बचाएगा तथा इसका किसी प्रकार का कोई साइड इफेक्ट भी नहीं है।

पाकिस्तान : प्रतिद्वंद्वी समूहों में गोलीबारी से 16 की मौत

इस्लामाबाद, (एजेंसी)। पाकिस्तान के पश्चिमोत्तर खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में दो प्रतिद्वंद्वी समूहों के बीच हुई गोलीबारी में करीब 16 लोगों की मौत हो गई और कई घायल हो गए। मंगलवार को कोहाट पुलिस अधिकारियों ने बताया कि यह घटना प्रांत के कोहाट जिले के दर्रा आदम खेल आदिवासी क्षेत्र में दो समूहों के बीच विवादित कोयला खदान के सीमांकन पर सोमवार देर रात हुई, जिसमें 16 लोगों की मौत और चार अन्य घायल हो गए। यह घटना दो आदिवासी समूहों के बीच लंबे समय से चल रहे विवाद में हुई और स्थानीय आदिवासी अदालत, 'जिरगा' ने परस्पर विरोधी गुटों के बीच मामले में सुलह कराने कई बार बैठकें भी आयोजित कीं।

अमेरिका में गोलीबारी में तीन की मौत, कई घायल

यूस्टन, (एजेंसी)। अमेरिका के न्यू मैक्सिको राज्य के फार्मिंग्टन में हुई गोलीबारी में करीब तीन लोगों की मौत हो गई और कई घायल हो गए। फेसबुक पोस्ट पर फार्मिंग्टन पुलिस ने कहा कि करीब तीन मृतकों के साथ कई नागरिक घायल हुए हैं। गोली लगने और अस्पताल में भर्ती होने वालों में शहर पुलिस के एक सदस्य और न्यू मैक्सिको स्टेट पुलिस के एक सदस्य सहित दो पुलिस अधिकारी शामिल है । पुलिस ने कहा कि दोनों की हालत स्थिर है। पुलिस ने कहा कि एक संदिग्ध का मुकाबला किया गया और वह घटनास्थल पर ही मारा गया। पुलिस ने कहा कि संदिग्ध की पहचान अज्ञात है और इस समय कोई अन्य ज्ञात खतरा नहीं है।

न्यूजीलैंड : हॉस्टल में आग से छह लोगों ने गंवाई जान

वेलिंगटन, (एजेंसी)। न्यूजीलैंड की राजधानी वेलिंगटन में मंगलवार को एक तीन मंजिला छात्रावास में भीषण आग लगने से करीब छह लोगों की मौत हो गई। न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री क्रिस हिपकिंस ने यह जानकारी दी। श्री हिपकिन्स ने एक चैनल को बताया कि मेरे पास अलग-अलग रिपोर्टें आई हैं, जहां तक मैं समझता हूं कि छह लोगों की मौत की पुष्टि पहले हो चुकी है और ऐसा लगता है कि मृतकों का आंकड़ा बढ़ सकता है। इस बीच कई स्थानीय समाचार पत्रों ने बताया कि आग में 10 लोगों की मौत हो गई । वेलिंगटन जिला पुलिस ने हालांकि इन रिपोर्टों का खंडन किया है और कहा कि प्रारंभिक आकलन यह है कि मृतकों का आंकड़ा 10 से कम है।

हिमाचल में सड़क दुर्घटना चार व्यक्तियों की मौत

शिमला, (एजेंसी)। हिमाचल प्रदेश में सिरमौर जिले के नोहराधार गांव में मंगलवार सुबह एक कार के पहाड़ी से नीचे गिर जाने से एक महिला समेत चार लोगों की मौत हो गई। आपदा प्रबंधन प्रकोष्ठ की रिपोर्ट के अनुसार सुबह छह बजे नोहराधार गांव में एक कार अनियंत्रित होकर गहरी खाई में गिर गई। कार में सवार एक महिला सहित चार लोगों की मौत हो गई। उन्होंने बताया कि दुर्घटना में मारे गए लोगों की पहचान कमल राज (40) जीवन सिंह (63) सुमा देवी (54) और रेखा देवी के रूप में हुई है। ये सभी राजगढ़ तहसील के धनोगा गांव के निवासी हैं। पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया और दुर्घटना के कारण का पता लगा रही है।

हरियाणा में बौनों और किन्नरों के भत्ते बढ़े

चंडीगढ़, (एजेंसी)। हरियाणा सरकार ने बौनों और किन्नरों के भत्ते में बढ़ोतरी कर 2750 रुपए मासिक किया है। मंगलवार को सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्यमंत्री ओम प्रकाश यादव ने मंगलवार को विभाग की समीक्षा बैठक के बाद दी। उन्होंने बताया कि बढ़ा हुआ भत्ता इस वर्ष पहली अप्रैल से लागू होगा। इन दोनों योजना के तहत लाभार्थियों को हरियाणा का अधिवासी होना चाहिए और आयु कम से कम 18 वर्ष होनी चाहिए। बौना भत्ता के लिए पुरुष का कद 03 फुट 08 इंच और महिला का कद 03 फुट 03 या इससे कम होना चाहिए। दोनों श्रेणियों के तहत भत्ता प्राप्त करने के लिए आवेदक को सिविल सर्जन से सर्टिफिकेट भी प्रस्तुत करना होगा।

आज का इतिहास

- **1765 :** ब्रिटेन ने फ्रांस के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की।
- **1769 :** ईस्ट इंडिया कंपनी ने बंगाल के कपड़ा उद्योग को बर्बाद करने के लिए बुनकरों पर कई प्रतिबंध लगाए।
- **1865 :** विश्व संचार दिवस मनाने की शुरुआत हुई।।
- **1975 :** जापानी महिला जुनको तैबेई माउंट एवरेस्ट चढ़ने वाली प्रथम महिला बनी।
- **1987 :** सुनील गावस्कर ने टेस्ट क्रिकेट से सन्यास लिया।
- **2002 :** पाक में मृत अमेरिकी पत्रकार डेनियल पर्ल का शव कब्रिस्तान से मिला।
- **2007 :** भारत-पाकिस्तान समग्र वार्ता का चौथा दौर रावलपिंडी में शुरू हुआ।
- **2008 :** तालिबानी आतंकवादियों ने पाक राजदूत तारिक अजीजुद्दीन रिहा।

असम में अल्टीमेटम, पुलिसकर्मियों का बीएमआई होगा रिकॉर्ड, तीन माह में हों फिट या फिर रिटायर

दिसपुर, (एजेंसी)। शराब पीने के आदी पुलिसकर्मियों के बाद अब अनफिट पुलिसकर्मी असम पुलिस की रडार पर हैं। असम पुलिस मोटे पुलिसकर्मियों का ऑफिशियल रिकॉर्ड रखेगी। इसके लिए उनका बॉडी मास इंडेक्स (बीएमआई) लिया जाएगा।

मेडिकल कंडीशन वालों को छूट

यह कदम पुलिसकर्मियों को डेडवुड से छुटकारा दिलाने के लिए उठाया जा रहा है। असम पुलिस में लगभग 70 हजार फोर्स है। अनफिट कर्मियों को 3 महीने का अल्टीमेटम दिया गया है। साथ ही कहा गया है कि 3 महीने में फिट हो जाएं या फिर रिटायर हो जाएं। तीन महीने बाद सभी आईपीएस अधिकारियों और पुलिस कर्मियों का बॉडी मास इंडेक्स (बीएमआई) रिकॉर्ड किया जाएगा।

सबसे पहले रिकॉर्ड होगा डीजी का बीएमआई

डीजीपी जीपी सिंह ने ट्वीट में लिखा- हम 15 अगस्त तक आईपीएस-एपीएस अधिकारियों समेत सभी असम पुलिस कर्मियों को तीन महीने का समय देंगे। इसके बाद अगले पंद्रह दिनों में बीएमआई का वैरिफिकेशन करने की प्लानिंग है। वे सभी पुलिसकर्मी जो मोटापे की श्रेणी (बीएमआई30+) में आते हैं, उन्हें वजन कम करने के लिए तीन महीने और दिए जाएंगे। इसके बाद स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति (वीआरएस) लेने को कहा जाएगा।डीजीपी जीपी सिंह ने कहा- जिन पुलिसकर्मियों को हाइपोथायरायडिज्म जैसी रियल मेडिकल प्रॉब्लम्स हैं, उन्हें ही छूट दी जाएगी।

जम्मू कश्मीर में होगी जी 20 बैठक, सुरक्षा बढ़ाई

जम्मू। जम्मू-कश्मीर में जी-20 की बैठक से पहले सेना और अन्य सुरक्षा एजेंसियों ने 270 किलोमीटर लंबे जम्मू-श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग पर मंगलवार को सुरक्षा स्थिति की समीक्षा की। जी-20 के पर्यटन कार्यकारी समूह की तीसरी बैठक 22 से 24 मई तक श्रीनगर में आयोजित होगी। ब्रिगेडियर स्तर के एक अधिकारी ने रामबन में पुलिस और केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ उच्चस्तरीय बैठक की और राजमार्ग के आसपास सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया।

अमेरिका में कांग्रेस सांसद के दफ्तर पर हमला, दो घायल

वर्जिनिया, (एजेंसी)। अमेरिका के वर्जीनिया में कांग्रेसी सांसद गेरी कोनोली के दफ्तर में अनजान शख्स ने और बेसबॉल बैट से मारपीट करने का आरोप है। हमले में दो कर्मियों को गंभीर चोट आ गई। पुलिस ने उसको गिरफ्तार किया है। पूर्व में पिछले साल पूर्व हाउस स्पीकर नैन्सी पेलोसी के पति पॉल को सैन फ्रांसिस्को में संदिग्ध ने हथौड़ा मारकर गंभीर रूप से घायल कर दिया गया था। स्पीकर पेलोसी तब घर पर नहीं थीं।

कैनेलॉन ग्रांडे जलाशय के अस्तित्व को खतरा

उरुग्वे में जल संकट ने नागरिकों को व्याकुल कर दिया है। उरुग्वे में चल रहे सूखे के कारण मोंटेवीडियो और महानगरीय क्षेत्र में पीने के पानी में खारापन हो गया है, जिसके कारण आसपास के जलाशयों में मीठे पानी के स्तर में कमी आई है। दृश्य में कैनेलॉन ग्रांडे जलाशय है, जो उरुग्वे के केनेलोन्स विभाग में मोंटेवीडियो शहर को पानी की आपूर्ति करता है। इन दिनों इसके अस्तित्व पर खतरा मंडरा रहा है।

इनसेट- मोंटेवीडियो, उरुग्वे में पीने योग्य पानी की कमी के खिलाफ प्रदर्शन करते लोग। उरुग्वे के मोंटेवीडियो में सुपरमार्केट से बोतलबंद पानी खरीदती एक महिला।

प्रधानमंत्री मोदी रहेंगे 19 से छह दिन के प्रवास पर

जापान, पापुआ न्यू गिनी और आस्ट्रेलिया का करेंगे दौरा

नई दिल्ली, (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 19 से 24 मई के बीच जापान, पापुआ न्यू गिनी और आस्ट्रेलिया की यात्रा पर जाएंगे जिस दौरान वह जी 7 और क्वाड के शिखर सम्मेलनों में भी भाग लेंगे। आधिकारिक जानकारी के अनुसार श्री मोदी जापान के प्रधान मंत्री किशिदा फुमियो के निमंत्रण पर 19-21 मई को हिरोशिमा जाएंगे और जापान की अध्यक्षता में होने वाले जी-7 शिखर सम्मेलन में भाग लेंगे। शिखर सम्मेलन के दौरान, प्रधानमंत्री भागीदार देशों के साथ जी-7 सत्रों में एक स्थायी वैश्विक शांति, स्थिरता और समृद्धि; खाद्य, उर्वरक और ऊर्जा सुरक्षा, स्वास्थ्य, लैंगिक समानता, जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण, लचीला बुनियादी ढांचा और विकास सहयोग के विषयों पर भारत के दृष्टिकोण को पेश करेंगे। प्रधानमंत्री शिखर सम्मेलन से इतर भाग लेने वाले कुछ नेताओं के साथ द्विपक्षीय बैठकें भी करेंगे।

यात्रा के दूसरे चरण में श्री मोदी 22 मई को पापुआ न्यू गिनी की राजधानी पोर्ट मोरेस्बी जाएंगे जहां वह पापुआ न्यू गिनी के गवर्नर-जनरल सर बॉब डाडे और प्रधानमंत्री जेम्स मारापे से भेंट करेंगे। किसी भारतीय प्रधानमंत्री की पापुआ न्यू गिनी की यह पहली यात्रा होगी। पापुआ न्यू गिनी वर्ष 2014 में गठित फिपिक मंच का हिस्सा है जिसमें 14 प्रशांत द्वीप देश फिजी, पापुआ न्यू गिनी, टोंगा, तुवालु, किरिबाती, समोआ, वानुअतु, नीयू, माइक्रोनेशिया के संघीय राज्य, रिपब्लिक ऑफ मार्शल आइलैंड्स, कुक आइलैंड्स, पलाऊ, नौरू और सोलोमन आइलैंड्स शामिल हैं।

तीसरे चरण में श्री मोदी 22-24 मई को सिडनी में क्वाड शिखर सम्मेलन में भाग लेने ऑस्ट्रेलिया जाएंगे। ऑस्ट्रेलिया के प्रधान मंत्री एंथोनी अल्बनीस, अमेरिका के राष्ट्रपति जोसेफ आर. बाइडेन और जापान के प्रधानमंत्री किशिदा भी वहां मौजूद होंगे । शिखर सम्मेलन में भारत-प्रशांत क्षेत्र में विकास के बारे में विचारों का आदान-प्रदान होगा और नेताओं को मुक्त, खुले और समावेशी भारत-प्रशांत के लिए अपनी दृष्टि को आगे बढ़ाने का अवसर मिलेगा। प्रधानमंत्री की 24 मई को मेजबान प्रधानमंत्री श्री अल्बनीज़ के साथ द्विपक्षीय बैठक होगी। वह ऑस्ट्रेलियाई सीईओ और व्यापारिक प्रतिनिधियों के साथ भी बातचीत करेंगे। श्री मोदी 23 मई को सिडनी में एक सामुदायिक कार्यक्रम में भारतीय प्रवासियों को संबोधित करेंगे।

मुर्मु व धनखड़ ने सिक्किम स्थापना दिवस पर राज्य के लोगों को दीं बधाइयां व शुभकामनाएं

नई दिल्ली, (एजेंसी)। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ और अन्य गणमान्य हस्तियों ने मंगलवार को सिक्किम के स्थापना दिवस पर राज्य के लोगों को हार्दिक शुभकामनाएं दीं। श्रीमती मुर्मु ने ट्वीट कर कहा कि मैं सिक्किम के स्थापना दिवस पर सिक्किम के लोगों को बधाई देती हूं! सिक्किम आधुनिकता और अनूठी परंपराओं का मिश्रण प्रस्तुत करता है।

उन्होंने कहा कि पूर्वोत्तर के इस राज्य ने जैविक खेती का बीड़ा उठाया है, जैव विविधता को समृद्ध किया है और सतत विकास के लिए एक मॉडल तैयार किया है। सुश्री मुर्मु ने कहा कि पिछले साल राज्य की मेरी यात्रा के दौरान लोगों की गर्मजोशी ने मेरे दिल को छू लिया था। सिक्किम की निरंतर प्रगति के लिए मेरी शुभकामनाएं।

ट्वीट से शुभकामनाएं

श्री धनखड़ ने ट्वीट किया कि सिक्किम के स्थापना दिवस पर हार्दिक बधाई! सिक्किम के लोगों के समृद्ध भविष्य के लिए मेरी शुभकामनाएं! सुंदर पहाड़ों और समृद्ध जैव विविधता का घर सिक्किम अद्वितीय प्राकृतिक सौंदर्य की भूमि है। उन्होंने कहा कि सतत विकास, जैविक खेती और स्वच्छता के प्रति राज्य की प्रतिबद्धता वास्तव में प्रेरणादायक है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि सिक्किम के स्थापना दिवस पर राज्य के लोगों को हार्दिक शुभकामनाएं। सिक्किम उत्तर पूर्वी भारत में एक 'रत्न' है, इसके मेहनती लोग देश की संस्कृति और अर्थव्यवस्था में भारी योगदान दे रहे हैं। मैं कामना करता हूं कि आगामी वर्षों में राज्य लगातार समृद्ध होता रहे। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा, 'सिक्किम के स्थापना दिवस पर, हम प्राकृतिक सुंदरता और समृद्ध सांस्कृतिक विविधता से संपन्न इस खूबसूरत राज्य के लोगों को हार्दिक बधाई देते हैं। हम आपके लिए शांति, प्रगति और समृद्धि की कामना करते हैं।

मंत्री वैष्णव ने संचार साथी पोर्टल का किया शुभारंभ

नई दिल्ली, (एजेंसी)। उपयोगकर्ताओं की सुरक्षा और संरक्षा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के डिजिटल भारत के दृष्टिकोण का अभिन्न अंग है। इस दृष्टिकोण को पूरा करने के लिए संचार, रेलवे और इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रोद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने मंगलवार को संचार साथी पोर्टल का शुभारंभ किया।

इस दौरान श्री वैष्णव ने कहा कि प्रधानमंत्री के दृष्टिकोण को आगे बढ़ाने के लिए आज तीन सुधार किए जा रहे हैं। सीईआईआर(सेंट्रलाइज्ड इक्विपमेंट आईडेंटिटी रजिस्टर) - चोरी/खोए मोबाइल ब्लॉक करने के लिए। अपने मोबाइल कनेक्शन को जानें- अपने नाम से रजिस्टर्ड मोबाइल कनेक्शन को जानने के लिए। एएसटीआर (टेलीकॉम सिम ग्राहक सत्यापन के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और फेशियल रिकग्निशन पावर्ड सॉल्यूशन) धोखाधड़ी करने वाले सब्सक्राइबर्स की पहचान करने के लिए। मंत्री श्री वैष्णव ने कहा कि मोबाइल फोन का दुरुपयोग कर पहचान की चोरी, जाली केवाईसी, बैंकिंग धोखाधड़ी जैसे विभिन्न धोखे भी हो सकते हैं। ऐसी धोखाधड़ी से बचने के लिए इस पोर्टल को विकसित किया गया है। उन्होंने कहा कि उपयोगकर्ता सुरक्षा ड्राफ्ट टेलीकॉम बिल का एक महत्वपूर्ण हिस्सा भी है। संचार साथी पोर्टल का उपयोग करके, अब तक धोखाधडी करने वाले 40 लाख से अधिक कनेक्शन की पहचान की गई है और 36 लाख से अधिक ऐसे जुड़ावों को अब तक बंद कर दिया गया है।

शाइस्ता समेत दो को लुक आउट नोटिस

प्रयागराज, (ब्यूरो)। प्रयागराज के बहुचर्चित उमेश पाल शूटआउट के वांछित अतीक अहमद की पत्नी शाइस्ता परवीन गुडडू मुस्लिम तथा साबिर के खिलाफ लुक आउट नोटिस जारी किया गया है । यह तीनों उमेश पाल हत्याकांड के बाद से फरार चल रहे हैं।

यूपी पुलिस तथा एसटीएफ की टीम इनकी तालाश में आठ राज्यों में छापेमारी कर चुकी है। शाइस्ता पर पचास हजार तथा गुड्डू एवं साबिर पर पांच-पांच लाख का इनाम है। शाइस्ता पर हत्या की साजिश रचने तथा गुडडू एवं साबिर पर हत्या करने का आरोप है।

Filmi तड़का

तपती गर्मी में शहनाज गिल ने बढ़ाया इंटरनेट का पारा

नई दिल्ली। बिग बॉस 13 से पॉपुलैरिटी हासिल करने वालीं शहनाज गिल आज किसी परिचय की मोहताज नहीं हैं। उनका स्टारडम इतना बढ़ गया है कि अब वे हिंदी सिनेमा के बड़े पर्दे पर भी नजर आने लगी हैं। हाल ही में उनकी पहली बॉलीवुड फिल्म किसी का भाई किसी की जान रिलीज हुई, जिसने बॉक्स ऑफिस पर ठीकठाक बिजनेस किया है। फिल्मी प्रोजेक्ट्स के अलावा शहनाज देसी वाइब्स विद शहनाज गिल होस्ट करती हैं, जिसमें सिनेमाई दुनिया के कई सितारे शिरकत करते हैं। एक तरह से यह कहना गलत नहीं होगा कि शहनाज ने कई प्लेटफॉर्म पर अपनी स्किल्स का परिचय दिया है। अब शहनाज ने इस काम से ब्रेक लेते हुए समंदर किनारे बोल्ड फोटोशूट कराया है। शहनाज गिल इन दिनों फुकेट में वेकेशन एंजॉय कर रही हैं। विदेश में गर्मी की छुट्टियों का आनंद ले रहीं शहनाज ने रेड कलर की मिनी ड्रेस में बीच साइड की फोटो शेयर की है। गीले बालों और भीगी ड्रेस में वे बेइंतहा खूबसूरत लग रही हैं।

3000 की ड्रेस और 11 हजार का मंडप

मुंबई। विक्की कौशल और सारा अली खान स्टारर फिल्म जरा हटके जरा बचके का ट्रेलर रिलीज हो चुका है। लक्ष्मण उतेकर के निर्देशन में बनी ये फैमिली ड्रामा 2 जून को सिनेमाघरों में आएगी। पति-पत्नी के रोल में दिखे विक्की और सारा की मैरिड ड्रामा का ट्रेलर लोगों को पसंद आ रहा है। फिल्म में इंदौर के मध्यमवर्गीय शादीशुदा जोड़े की कहानी दिखाई गई है। कपिल और सौम्या का कॉलेज रोमांस शादी में तब्दील होता है, फिर कुछ समय बाद आता है कहानी में ट्विस्ट। हैप्पिली मैरिड लाइफ जी रहे सौम्या-कपिल की शादी में मनमुटाव आता है। दोनों की शादीशुदा जिंदगी के सुर बदल जाते हैं। बात यहां इतनी बिगड़ जाती है कि तलाक की नौबत आती है। इसके बाद शुरू होती है लड़ाई झगड़ों की कहानी। ट्रेलर में सारा-विक्की की दमदार केमिस्ट्री लोगों का दिल जीत रही है। फैंस इस फिल्म के लिए एक्साइटेड नजर आ रहे हैं। लोगों को लगता है ये मूवी हिट होगी और इसकी सबसे बड़ी वजह है डायरेक्टर लक्ष्मण उतेकर और प्रोड्यूसर दिनेश विजान। कॉमेडी रोमांटिक मूवीज में दोनों को महारथ हासिल है। सारा और विक्की को पहली बार स्क्रीन पर देखना फैंस के लिए ट्रीट से कम नहीं है।

सुनवाई सुकेश ने वकीलों से मिलने के लिए मांगा ज्यादा समय, सुप्रीम कोर्ट ने कहा

तुम्हें जेल में सुविधा चाहिए? सबके नाम बताओ, वहीं रहने की इजाजत दिलवा दें

नई दिल्ली, (एजेंसी)। महाठग सुकेश चंद्रशेखर को सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को फटकार लगाई। दरअसल जेल में वकीलों से मिलने का समय बढ़ाने वाली याचिका लगाई। इस पर कोर्ट ने कहा कि आप हमें वकीलों का नाम दें, हम जेल के अधिकारियों से आपके वकीलों को जेल में रहने की अनुमति देने के लिए कह देंगे। जस्टिस अजय रस्तोगी और बेला एम त्रिवेदी की बेंच ने कहा कि आप जेल नियमों के अनुसार पहले ही वकीलों से मिल रहे हैं। आप कोर्ट में ये कैसी बातें कर रहे हैं? क्या आप जेल में विशेषाधिकार चाहते हैं।

इस दौरान चंद्रशेखर के वकील ने कहा कि मेरे मुवक्किल के खिलाफ छह शहरों में 28 मामले लंबित हैं। इन मामलों में 10 से ज्यादा वकील काम कर रहे हैं। जेल नियमों के अनुसार उन्हें वकीलों से मिलने के लिए सप्ताह में दो बार केवल 30 मिनट दिए जा रहे हैं, जो पर्याप्त नहीं है। मेरे मुवक्किल के अधिकार का उल्लंघन हो रहा है। इस पर सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि याचिकाकर्ता ने जो मांग की है, उसकी अनुमति नहीं दी जा सकती। कैदी को उसके रिश्तेदारों या दोस्तों से हफ्ते में दो बार 30 मिनट की मुलाकात करने की अनुमति दी जा सकती है। चार करोड़ रुपए की धोखाधड़ी केस में सुकेश के खिलाफ दाखिल याचिका पर मंगलवार को सुनवाई हुई।

ईडी ने बताया कि चार्जशीट की कॉपी और दूसरे दस्तावेज आरोपियों को दे दिए गए हैं। वहीं, सुकेश चंद्रशेखर के वकील ने दस्तावेजों की जांच के लिए समय मांगा है। मामले में अगली सुनवाई 13 जुलाई को होगी। बता दें कि सुकेश पर रजोकरी की रहने वाली महिला जपना सिंह ने 4 करोड़ रुपए की धोखाधड़ी का आरोप लगाया था। महिला का आरोप है कि सुकेश ने 2021 में जपना को लैंडलाइन नंबर से कॉल किया था और खुद को लॉ सेक्रेटरी बताया था। सुकेश ने तिहाड़ जेल में बंद उनके पति मलविंदर सिंह की सुरक्षा का हवाला देते हुए उनसे चार करोड़ रुपए वसूले थे।

खबर संक्षेप

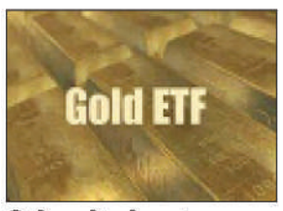

निवेशकों को पसंद आया गोल्ड ईटीएफ 124 करोड़ का निवेश

नई दिल्ली। वित्तीय अनिश्चितता के दौर में सुरक्षित निवेश के लिए गोल्ड ईटीएफ निवेशकों की पसंद बनकर उभरा है। अप्रैल में इन निवेश योजनाओं में 124 करोड़ रुपये का निवेश आया, जबकि इससे पिछले महीने शुद्ध निकासी हुई थी। एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया (एम्फी) के आंकड़ों के मुताबिक, गोल्ड ईटीएफ से मार्च में 266 करोड़ रुपये की शुद्ध निकासी हुई थी। मॉर्निंगस्टार इंडिया के एसोसिएट निदेशक (प्रबंधक शोध) हिमांशु श्रीवास्तव ने कहा, 'पिछले कुछ महीनों में हमने सोने की कीमतों में वृद्धि देखी है।

पीवीआर आईनॉक्स को 333.37 करोड़ का घाटा

नई दिल्ली। पीवीआर आईनॉक्स लिमिटेड (जिसे पहले पीवीआर लिमिटेड के नाम से जाना जाता था) ने बताया कि 31 मार्च, 2023 को समाप्त हुई चौथी तिमाही में उसे 333.99 करोड़ रुपये का एकीकृत शुद्ध घाटा हुआ है। पीवीआर आईनॉक्स ने एक नियामकीय सूचना में यह जानकारी दी। कंपनी ने एक साल पहले जनवरी-मार्च की अवधि में 105.49 करोड़ रुपये का शुद्ध घाटा दर्ज किया था।

जियो-बीपी ने प्रीमियम डीजल पेश किया, कीमत सामान्य

मुंबई। जियो-बीपी ने मंगलवार को प्रीमियम डीजल पेश किया, जिसकी कीमत सार्वजनिक क्षेत्र की पेट्रोलियम कंपनियों के सामान्य डीजल से भी कम रखी गई है। जियो-बीपी रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड और ब्रिटेन की बीपी का संयुक्त उद्यम है। जियो-बीपी ने दावा किया कि एडिटिव-लेस्ड प्रीमियम डीजल बेहतर माइलेज देता है। इससे प्रति ट्रक 1.1 लाख रुपये तक की बचत होगी। इस प्रीमियम डीजल की कीमत सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों के सामान्य या एडिटिव-फ्री डीजल से सस्ती है।

सोना 160 रुपए टूटा चांदी 175 रुपए कमजोर

नई दिल्ली। वैश्विक बाजारों में बहुमूल्य धातुओं की कीमतों में गिरावट के बीच राष्ट्रीय राजधानी के सराफा बाजार में मंगलवार को सोने का भाव 160 रुपये की गिरावट के साथ 61,120 रुपये प्रति 10 ग्राम रह गया। एचडीएफसी सिक्योरिटीज ने यह जानकारी दी। पिछले कारोबारी सत्र में सोना 61,280 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर बंद हुआ था। चांदी की कीमत भी 175 रुपये घटकर 74,075 रुपये प्रति किलोग्राम रह गई। एचडीएफसी सिक्योरिटीज ने कहा, 'दिल्ली सराफा बाजार में सोने की हाजिर कीमत 160 रुपये की गिरावट के साथ 61,120 रुपये प्रति 10 ग्राम रह गयी।

वोडाफोन में छंटनी, 11000 कर्मचारियों को नौकरी से निकालने की योजना

⏭ नई दिल्ली

ब्रिटिश टेलीकॉम कंपनी वोडाफोन अगले तीन साल में करीब 11,000 नौकरियों में कटौती की योजना बना रही है। यह छंटनी टेलीकॉम कंपनी की रणनीतिक योजना का हिस्सा है। बता दें कि वोडाफोन की सर्विस भारत में भी है। भारत में यह कंपनी आदित्य बिड़ला समूह के आइडिया के साथ सक्रिय है। ब्रिटिश कंपनी का वित्तीय वर्ष 2023 का प्रदर्शन काफी अच्छा नहीं रहा है। कंपनी की सीईओ डेला वैले ने कहा- हमारा प्रदर्शन काफी अच्छा नहीं रहा है। वोडाफोन में बदलाव की जरूरत है। उन्होंने कहा, हम अपने संगठन को सरल बनाएंगे, अपनी प्रतिस्पर्धात्मकता को फिर से हासिल करने के लिए मुश्किलों को कम करेंगे। हम अपने ग्राहकों को गुणवत्तापूर्ण सेवा देने के लिए संसाधनों का आवंटन करेंगे। सीईओ ने कहा कि इसी कड़ी में 11000 कर्मचारियों की छंटनी की जाएगी। उम्मीद है कि हम एक सरल संगठन बनेंगे।

- कंपनी भारत में आदित्य बिड़ला समूह के आइडिया के साथ सक्रिय है

ब्रिटिश टेलीकॉम कंपनी अगले तीन साल में यह कटौती करेगी

18 हजार कर्मचारियों को निकालेगी अमेजन

कोच्चि और लखनऊ में सेलर ऑनबोर्डिंग फंक्शन बंद कर दिया गया है। हालांकि अमेजन के सूत्रों ने इस पर कोई रिएक्शन नहीं दिया है। हाल के कुछ महीनों में अमेजन दूसरी बार कर्मचारियों की छंटनी कर रहा है। इस साल के शुरुआती महीने में कंपनी ने कहा था कि करीब 18000 कर्मचारियों को निकाला जाएगा।

500 कर्मियों की छंटनी की प्रक्रिया में लगा

दिग्गज ई कॉमर्स कंपनी अमेजन भारत में काम कर रहे लोगों की छंटनी कर रहा है। कंपनी देश में लगभग 500 कर्मचारियों की छंटनी करने की प्रक्रिया में लगी हुई है। अमेजन के सीईओ एंडी जेसी ने मार्च के अंत में इसकी घोषणा की थी, जिससे दुनिया भर में इस कंपनी के 9000 कर्मचारी प्रभावित हुए।

भारत में अपने कई बिजनेस किए बंद

अमेजन कंपनी अभी भी ग्रो कर रही है। इसके सबके बड़े सेलर में से एक अपेरियो नए सेलर को इन्वेंट्री ट्रांसफर कर रहा है ताकि भारत में नियमों का पालन किया जा सके। अमेजन ने पिछले साल भारत में अपनी फूड, डिलीवरी, एडटेक और होलसेल डिस्ट्रीब्यूशन सहित कई बिजनेस को बंद दिया था।

कंपनी भारी कर्ज में डूबी

वोडफोन ने 2023 में सुस्त नतीजों की सूचना दी। कंपनी के भारतीय कारोबार में भी कई संकट हैं। यह कंपनी भारत में भारी कर्ज में डूबी है। खासतौर पर सरकार का बकाया ज्यादा है। यही वजह है कि बीते दिनों सरकार ने कंपनी में हिस्सेदारी खरीदी।

केंद्र और राज्य के अधिकारी पकड़ेंगे धोखेबाजों को

फर्जी जीएसटी पंजीकरण पर नकेल कसने के लिए विशेष अभियान शुरू

⏭ नई दिल्ली

फर्जी जीएसटी पंजीकरण का पता लगाने और फर्जी इनपुट कर क्रेडिट (आईटीसी) के दावे का अनुचित फायदा उठाने वाले धोखेबाजों की पहचान के लिए केंद्र एवं राज्यों के कर अधिकारियों ने दो महीने का एक विशेष अभियान शुरू किया है।

ऐसे लोग माल एवं सेवा कर (जीएसटी) के मंच पर फर्जी पंजीकरण कराने के बाद उसके आधार पर धोखेबाज फर्जी रसीदों के सहारे आईटीसी के दावे करते हैं और किसी भी तरह की सेवा या उत्पाद की आपूर्ति के बगैर ही वह राशि अपने खाते में जमा करा लेते हैं।

21000 करोड़ रुपए की कर वसूली भी की

वित्त वर्ष 2022-23 में एक लाख करोड़ रुपये से अधिक की जीएसटी कर चोरी होने का अनुमान है। इस दौरान जीएसटी आसूचना महानिदेशालय ने 21,000 करोड़ रुपये की कर वसूली भी की। इसे देखते हुए कर अधिकारियों ने फर्जी पंजीकरण पर नकेल कसने की कवायद शुरू की है।

खास बातें

- आईटीसी के दावे का अनुचित फायदा उठा रहे धोखेबाज
- जीएसटी मंच पर फर्जी पंजीकरण कराया जा रहा
- धोखेबाज फर्जी रसीदों के सहारे आईटीसी के दावे कर रहे
- एक लाख करोड़ रुपए से अधिक जीएसटी कर चोरी का अनुमान

फौरन पंजीकरण निरस्त किया जाएगा

फर्जी पंजीकरण की जानकारी मिलने के बाद संदिग्ध जीएसटी पहचान नंबर के सत्यापन के लिए तय अवधि में कदम उठाया जाएगा। अगर आधार पर आधारित सत्यापन प्रक्रिया के दौरान संबंधित करदाता काल्पनिक पाया जाता है तो उस पंजीकरण को निरस्त करने के लिए फौरन कदम उठाए जाएंगे। फिलहाल देशभर में जीएसटी प्रणाली के तहत करीब 1.39 करोड़ करदाता पंजीकृत हैं। एकसमान अप्रत्यक्ष कर के तौर पर जीएसटी व्यवस्था जुलाई, 2017 में लागू की गई थी।

प्रमुख आयुक्तों को पत्र लिखा गया

केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा-शुल्क बोर्ड (सीबीआईसी) के जीएसटी नीति प्रकोष्ठ ने गत दिनों केंद्रीय कर प्रमुख मुख्य आयुक्तों को लिखे पत्र में कहा था कि फर्जी आईटीसी का लाभ लेने के लिए फर्जी जीएसटी पंजीकरण और फर्जी रसीदें जारी करने का तरीका अपनाया जा रहा है।

सरकार के राजस्व को नुकसान पहुंचा

सीबीआईसी ने कहा था, 'इस तरह से बेइमान लोग संदिग्ध और जटिल लेनदेन के जरिये सरकार को राजस्व का भारी नुकसान पहुंचाते हैं।' केंद्र एवं राज्यों के सभी कर विभागों ने 16 मई से 15 जुलाई तक चलने वाला एक विशेष अभियान शुरू किया है।

आंकड़ों का विश्लेषण किया जाएगा

इस दौरान संदिग्ध जीएसटी खातों की पहचान करने के साथ ही फर्जी बिलों को जीएसटी नेटवर्क (जीएसटीएन) से बाहर करने के लिए जरूरी कदम उठाए जाएंगे। इनमें से फर्जी पंजीकरणों की पहचान के लिए जीएसटीएन पर विस्तृत आंकड़ा विश्लेषण और जोखिम मानकों का सहारा लिया जाएगा।

सरकार ने पेट्रोलियम क्रूड पर जीरो किया विंडफॉल टैक्स

सरकार ने 16 मई से ऑयल कंपनियों को बड़ी राहत देते हुए पेट्रोलियम क्रूड ऑयल पर विंडफॉल टैक्स को 4,100 रुपए प्रति टन से घटाकर जीरो कर दिया है। अब ऑयल कंपनियों को क्रूड ऑयल पर कोई विंडफॉल टैक्स नहीं देना होगा।

जुलाई 2022 से लगाया गया था विंडफॉल टैक्स

सरकार ने 1 जुलाई, 2022 से विंडफॉल टैक्स लगाया था, जो उन देशों की बढ़ती संख्या में शामिल हो गया, जो ऊर्जा कंपनियों पर जरूरत से ज्यादा टैक्स लगाते हैं। जबकि पेट्रोल, डीजल और जेट ईंधन (एटीएफ) के एक्सपोर्ट पर शुल्क लगाया गया था, स्थानीय रूप से उत्पादित कच्चे तेल पर एक विशेष अतिरिक्त उत्पाद शुल्क (एसएईडी) लगाया गया था। नई दिल्ली में सरकार ने तब पेट्रोल और एटीएफ पर 6 रुपए प्रति लीटर और डीजल पर 13 रुपए प्रति लीटर की एक्सपोर्ट ड्यूटी लगाई थी।

शेयर बाजार में दो दिन की तेजी पर विराम सेंसेक्स 413 अंक टूटा

एजेंसी ⏭ मुंबई

घरेलू शेयर बाजारों में दो दिन से जारी तेजी पर मंगलवार को विराम लगा और बीएसई सेंसेक्स 413 अंक से अधिक टूटकर बंद हुआ। सूचकांक में मजबूत हिस्सेदारी रखने वाले एचडीएफसी बैंक, एचडीएफसी लि. और रिलायंस इंडस्ट्रीज में बिकवाली से बाजार नीचे आया। तीस शेयरों पर आधारित सेंसेक्स में शुरुआती कारोबार में कुछ मजबूती रही लेकिन बाद में इसमें गिरावट आई और अंत में यह 413.24 अंक यानी 0.66 प्रतिशत की गिरावट के साथ 61,932.47 अंक पर बंद हुआ।। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी भी 112.35 अंक की गिरावट के साथ 18,286.50 अंक पर बंद हुआ।

- एचडीएफसी बैंक, रिलायंस में रही बिकवाली
- बजाज, स्टैंट बैंक में रही तेजी

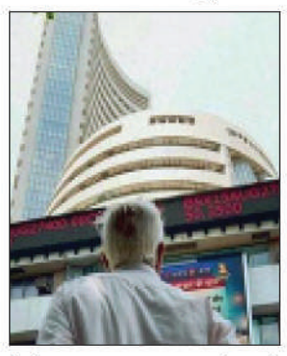

सेंसेक्स की कंपनियों में एचडीएफसी लि., एचडीएफसी बैंक, महिंद्रा एंड महिंद्रा, कोटक महिंद्रा बैंक, भारती एयरटेल, टाटा मोटर्स, रिलायंस इंडस्ट्रीज और मारुति प्रमुख रूप से नुकसान में रहे। दूसरी तरफ लाभ में रहने वाले शेयरों में बजाज फाइनेंस, भारतीय स्टेट बैंक, एनटीपीसी, हिंदुस्तान यूनिलीवर, टाइटन, इन्फोसिस, बजाज फिनसर्व, विप्रो, एशियन पेंट्स और टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज शामिल हैं।

एशियाई बाजार में मिलाजुला रुख

एशिया के अन्य बाजारों में दक्षिण कोरिया का कॉस्पी, जापान का निक्की और हांगकांग का हैंगसेंग लाभ में जबकि चीन का शंघाई कंपोजिट नुकसान में रहा। यूरोप के प्रमुख बाजारों में ज्यादातर में शुरुआती कारोबार में तेजी रही। अमेरिकी बाजार सोमवार को लाभ में रहे थे।

चीन से लैपटॉप, कंप्यूटर, चिकित्सा उपकरण, सोलर सेल का आयात घटा

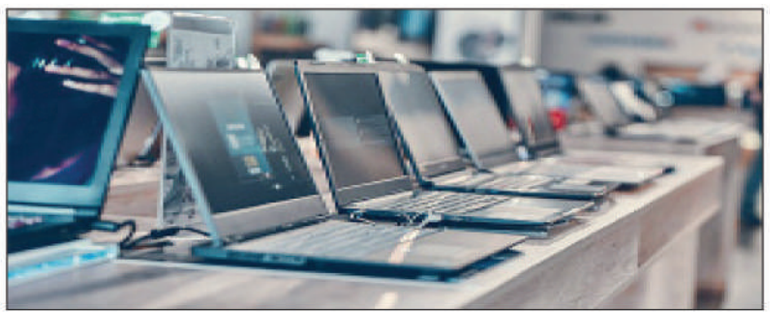

एजेंसी ⏭ नई दिल्ली

वित्त वर्ष 2022-23 के दौरान चीन से लैपटॉप, पर्सनल कंप्यूटर, इंटीग्रेटेड सर्किट और सोलर सेल जैसे इलेक्ट्रॉनिक सामानों का आयात घटा है। आर्थिक थिंक टैंक जीटीआरआई ने अपनी एक रिपोर्ट में यह जानकारी दी।

- वर्ष 2022-23 के लिए जीटीआरआई ने रिपोर्ट जारी की

ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव (जीटीआरआई) ने कहा कि इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं में आयात में गिरावट उन क्षेत्रों में उल्लेखनीय है, जहां पीएलआई (उत्पादन से जुड़े प्रोत्साहन) योजना शुरू की गई है। रिपोर्ट के मुताबिक बीते वित्त वर्ष में चिकित्सा उपकरणों का आयात सालाना आधार पर 13.6 प्रतिशत घटकर 2.2 अरब अमेरिकी डॉलर रह गया। इसके अलावा सोलर सेल का आयात 70.9 प्रतिशत घटा। रिपोर्ट में कहा गया है कि समीक्षाधीन अवधि में लैपटॉप, पर्सनल कंप्यूटर (पीसी) का आयात 23.1 प्रतिशत और मोबाइल फोन का आयात 4.1 प्रतिशत घटा।

रोजगार के मौके पर पड़ा असर

इस बीच एपी की एक रिपोर्ट में बताया गया कि चीन में अप्रैल में आर्थिक गतिविधियों में सुस्ती देखी गई। इसका असर रोजगार के मौकों पर भी पड़ा। मंगलवार को जारी हुए आधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक दिसंबर में कोविड प्रतिबंध हटने के बाद खुदरा बिक्री बढ़ी तो है, लेकिन पूर्वानुमानों के मुकाबले कम है।

वैगनआर की बिक्री का आंकड़ा 30 लाख इकाई के पार

नई दिल्ली। देश की सबसे बड़ी वाहन विनिर्माता मारुति सुजुकी इंडिया (एमएसआई) की लोकप्रिय हैचबैक कार वैगनआर की बिक्री का आंकड़ा बीते दो दशकों में 30 लाख इकाई के पार निकल चुका है। एमएसआई ने मंगलवार को बयान में यह जानकारी देते हुए कहा कि 30 लाख इकाई की बिक्री का आंकड़ा वैगनआर मॉडल की देश में मिली कामयाबी को दर्शाता है। कंपनी के वरिष्ठ कार्यकारी अधिकारी (बिक्री एवं विपणन) शशांक श्रीवास्तव ने कहा, 'यह भारत की सर्वाधिक प्रतिष्ठित हैचबैक में से एक के तौर पर वैगनआर की निर्विवाद स्थिति को प्रदर्शित करता है।' वर्ष 1999 में पहली बार भारतीय बाजार में पेश की गई वैगनआर ने पांच लाख इकाई की बिक्री का आंकड़ा 2008 में पार किया था। उसके बाद 20 लाख का आंकड़ा 2017 और 25 लाख इकाई की बिक्री का आंकड़ा 2021 में पार किया था। श्रीवास्तव ने कहा कि वैगनआर रखने वाले करीब 24 प्रतिशत ग्राहकों ने बाद के वर्षों में इसके नए संस्करण खरीदकर इस मॉडल के प्रति अपना लगाव जाहिर किया है।

लगातार तीसरे महीने निर्यात घटा

अप्रैल में व्यापार घाटा 20 माह के निचले स्तर पर

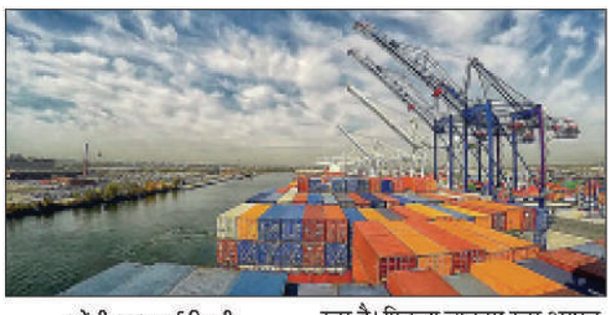

एजेंसी ⏭ नई दिल्ली

देश के निर्यात में लगातार तीसरे महीने गिरावट रही और यह अप्रैल, 2023 में सालाना आधार पर 12.7 प्रतिशत घटकर 34.66 अरब डॉलर पर आ गया। हालांकि, इस दौरान व्यापार घाटा कम होकर 20 माह में सबसे कम 15.24 डॉलर रह गया। जारी सरकारी आंकड़ों के मुताबिक, अप्रैल में देश का आयात भी सालभर पहले की तुलना में करीब 14 प्रतिशत घटकर 49.9 अरब डॉलर पर आ गया। अप्रैल, 2022 में यह 58.06 अरब डॉलर रहा था। इस तरह अप्रैल में देश का व्यापार घाटा 15.24 अरब डॉलर रहा जो पिछले 20 महीनों का न्यूनतम स्तर है। पिछला न्यूनतम स्तर अगस्त, 2021 में 13.81 अरब डॉलर का था। वहीं अप्रैल, 2022 में व्यापार घाटा 18.36 अरब डॉलर रहा था। देश के निर्यात में आई गिरावट के पीछे प्रमुख बाजारों- यूरोप और अमेरिका में मांग में आई सुस्ती को जिम्मेदार माना जा रहा है। यह स्थिति आने वाले कुछ महीनों तक बनी रह सकती है। विदेश व्यापार महानिदेशक (डीजीएफटी) संतोष सारंगी ने कहा कि विदेशी बाजारों में मांग की स्थिति बहुत अच्छी नहीं दिख रही है। उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि अगले दो-तीन महीनों तक मांग का परिदृश्य बहुत आशावादी है। हालांकि, सितंबर के बाद से हालात सुधरने की उम्मीद है।'

रत्न व आभूषण व कपड़ों की निर्यात मांग प्रभावित

इसके साथ ही उन्होंने कहा कि आने वाले महीनों में रत्न एवं आभूषण, परिधान और कपड़ों के अलावा कुछ इंजीनियरिंग उत्पादों की निर्यात मांग भी प्रभावित हो सकती है। अप्रैल के महीने में पेट्रोलियम उत्पाद, रत्न-आभूषण, इंजीनियरिंग उत्पाद, रसायन और सिलेसिलाए कपड़ों के निर्यात में नकारात्मक वृद्धि दर्ज की गई।

दवाओं, चावल एवं तेल का निर्यात बढ़ा

हालांकि, इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों, दवाओं, चावल एवं तेल का निर्यात बढ़ा है। इस दौरान इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों का निर्यात 26.49 प्रतिशत बढ़कर 2.11 अरब डॉलर हो गया। दूसरी तरफ, कच्चे तेल का आयात 13.95 प्रतिशत घटकर 15.17 अरब डॉलर रह गया। सोने का आयात भी 41.48 प्रतिशत गिरकर अप्रैल में एक अरब डॉलर पर आ गया।

विदेशी कार निर्माताओं के लिए भारत एक बड़ा बाजार रहा

भारत छोड़कर गई पांच कार कंपनियों को सभी करते हैं मिस

एजेंसी ⏭ नई दिल्ली

भारत हमेशा से विदेशी कार निर्माताओं के लिए एक बहुत बड़ा बाजार रहा है। दुनियाभर से कई कंपनियां यहां पर आकर अपनी कारें बेचती है। यह दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा ऑटोमोबाइल बाजार है। वहीं टू व्हीलर में यह सबसे बड़ा मार्केट भी बना रहता है। यहां आपको 20 से भी ज्यादा कार बैंड मिल जाएंगी। लेकिन ऐसी कई कार कंपनियां है जो यहां पर अपनी कारें बेचने आई और फिर इसे छोड़कर भी चली गई। इन कार कंपनियों को आज भी भारतीय याद करते हैं। फिएट आज भी भारतीयों के दिलो दिमाग पर बनी हुई है।

- भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा ऑटोमोबाइल बाजार

फिएट

यह कहना बिल्कुल गलत नहीं होगा की फिएट भारत के उन पहली कार कम्पनियों में से एक थी जिनकी कारें यहां पर काफी ज्यादा प्रसिद्ध थी। लेकिन कम प्रॉफिट और ज्यादा लागत आने के कारण कंपनी ने 2019 में अपना कारोबार भारत में बंद कर लिया है।

मित्सुबिशी

जापानी ऑटोमेकर कंपनी मित्सुबिशी अगर आज भारत में होती तो टोयोटा फॉर्च्यूनर को कोई भी नहीं पूछता। इसकी पजेरो एसयूवी को लोग काफी ज्यादा पसंद करते थे। इसने भारत में कारोबार हिंदुस्तान मोटर्स के साथ शुरू किया था। लेकिन कई साल मशक्कत करने के बाद भी है यह ठीक से स्थापित नहीं हो सकी और बाद में अपना कारोबार यहां पर बंद कर दिया।

फोर्ड

इस कंपनी को कौन नहीं जानता है। फोर्ड की इकोस्पोर्ट और एंडेवर को काफी ज्यादा पसंद किया गया था। टोयोटा फॉर्च्यूनर के बाद एंडेवर अपने सेगमेंट की बेस्ट सेलिंग एसयूवी थी। हालांकि कंपनी को लॉस होने के कारण 2021 में अपना कारोबार बंद करना पड़ा। फिलहाल इस ने भारत को अलविदा कह दिया है।

डटसन

मारुति को कड़ी टक्कर देने वाली डटसन अपनी किफायती कारों के साथ भारत में आई थी। इसने बहुत ही कम कीमत पर अपनी 7 सीटर और 5 सीटर कारों को भारत में लांच किया था। यह निशान की एक सब्सिडरी कंपनी थी। लेकिन लॉस होने के कारण इसे अपना कारोबार बंद करना पड़ गया।

शेवले

कभी आम आदमियों की पसंद होने वाली शेवले भारत में काफी सफलता हासिल की थी। लेकिन समय के साथ इसकी प्रतिस्पर्धा बढ़ती गई और इस ब्रांड ने भारत में दम तोड़ दिया। यही कारण है कि उन्हें भी अपना कारोबार यहां बंद करना पड़ा। हालांकि आज भी कई लोग शेवले की गाड़ियों को काफी मिस करते हैं। खासकर इसकी फोर्ड मस्टैंग राइवल, शेवले केमरो को कई भारतीय आज भी खरीदना चाहते हैं।

बिजनेस साइट

स्काय ऑटोमोबाइल्स ने रचा इतिहास

रायपुर। छत्तीसगढ़ के सबसे पुराने एवं पूर्वी भारत के सबसे बड़े मारुति डीलर स्काय ऑटोमोबाइल्स ने एक साथ कई कीर्तिमान स्थापित कर दिए है। हाल में दोहा, कतर में संपन्न हुए मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड के वार्षिक सम्मेलन में स्काय ऑटोमोबाइल्स को क्लब 1000 डीलर अल्फा डीलरशिप (नेक्सा) प्लैटिनम डीलरशिप (एरिना) एवं अचिवर्स क्लब डीलर के तौर पर सम्मानित किया गया । इन तमाम श्रेणी में एक साथ नामित होने का गौरव प्राप्त करने वाली स्काय ऑटोमोबाइल्स संपूर्ण छत्तीसगढ़ में इकलौती डीलरशिप है। इस उपलब्धि के बारे में बात करते हुए स्काय ऑटोमोबाइल्स के डायरेक्टर अनिल अग्रवाल ने बताया कि क्लब 1000 सिर्फ मारुति ही नहीं बल्कि समस्त ऑटोमोबाइल्स श्रेणी में एक बेहद विशिष्ट स्थान है, जिसमें देश भर से किसी भी फोर व्हीलर ऑटोमोबाइल्स कंपनी के उसी डीलरशिप को स्थान मिलता है जिसकी मासिक बिक्री 1000 गाड़ियों से अधिक हो। इसी प्रकार दूसरा सम्मान स्काय ऑटोमोबाइल्स के नेक्सा डिवीजन को अल्फा डीलरशिप टाइटल के तौर पर प्राप्त हुआ। अल्फा डीलरशिप का टाइटल मारुति सुजुकी कंपनी द्वारा दी जाने वाली सेल्स, स्पेयर पार्टस, एसेसरीज , इंश्योरेंस व ओवरऑल कस्टमर सैटिस्फेक्शन के आधार पर दिया जाना वाला सर्वोच्च सम्मान है।

स्पोर्ट्स

आईपीएल पाइंट टेबल

टीम	मैच	जीते	हारे	अंक
गुजरात	13	9	4	18
चेन्नई	13	7	5	15
लखनऊ	13	7	5	15
मुंबई	13	7	6	14
बेंगलोर	12	6	6	12
राजस्थान	13	6	7	12
कोलकाता	13	6	7	12
पंजाब	12	6	6	12
हैदराबाद	12	4	8	8
दिल्ली	12	4	8	8

ऑरेंज कैप

डु प्लेसिस

631 रन

पर्पल कैप

मो. शमी

23 विकेट

धोनी का शर्ट पर ऑटोग्राफ देना मेरे लिए 'भावनात्मक लम्हा' : गावस्कर

एजेंसी ▶▶ मुंबई

महान बल्लेबाज सुनील गावस्कर ने खुलासा किया है कि इस साल इंडियन प्रीमियर लीग में कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) के खिलाफ चेपक में चेन्नई सुपरकिंग्स के पिछले राउंड रोबिन मैच के बाद जब महेंद्र सिंह धोनी ने उनकी शर्ट पर ऑटोग्राफ दिया तो यह उनके लिए 'भावनात्मक लम्हा' था। सुपरकिंग्स के खिलाड़ी रविवार रात जब चेन्नई में एमए चिदंबरम स्टेडियम का चक्कर (लैप ऑफ ऑनर) लगा रहे थे तो गावस्कर ने धोनी से उनकी शर्ट पर हस्ताक्षर करने को कहा।

धोनी का चेपक में आखिरी घरेलू मैच था

'स्टार स्पोर्ट्स' ने गावस्कर के हवाले से विज्ञप्ति में कहा, 'जब मुझे पता चला कि चेन्नई सुपरकिंग्स और महेंद्र सिंह धोनी चेपक में लैप ऑफ ऑनर लगाने वाले हैं तो मैंने विशेष स्मृति तैयार करने का फैसला किया। यही कारण है कि मैं महेंद्र सिंह धोनी का ऑटोग्राफ लेने के लिए उनकी ओर भागा। यह चेपक में उसका आखिरी घरेलू मैच था।'

क्रिकेट में बेजोड़ योगदान

गावस्कर ने कहा, 'इसलिए मैं माही (धोनी) के पास गया और मैंने जो शर्ट पहनी थी उस पर उससे ऑटोग्राफ देने का आग्रह किया। काफी अच्छा लगा कि उसने इसे स्वीकार किया। यह मेरे लिए काफी विशेष लम्हा था क्योंकि इस खिलाड़ी ने भारतीय क्रिकेट में बेजोड़ योगदान दिया है।'

कपिल का 1983 के विश्व कप में ट्राफी उठाना व धोनी का विजयी छक्का

मैं मरने से पहले क्रिकेट के दो लम्हें देखना पसंद करूंगा

सुपरकिंग्स का प्ले ऑफ के लिए दावा मजबूत

पूर्व भारतीय कप्तान गावस्कर ने कहा, 'बेशक अगर सुपरकिंग्स प्ले ऑफ के लिए क्वालीफाई करते हैं। तो उसे यहां खेलने का मौका मिलेगा लेकिन मैंने इस लम्हे को विशेष बनाने का फैसला किया। मैं भाग्यशाली था कि कैमरा यूनिट में किसी के पास मार्कर पेन था। इसलिए मैं उस व्यक्ति का भी आभारी हूं।'

क्रिकेट के दो लम्हें याद

गावस्कर ने इसके साथ ही भारतीय क्रिकेट इतिहास के दो विशेष लम्हों को भी याद किया। उन्होंने कहा, 'कपिल देव का 1983 विश्व कप ट्रॉफी उठाना और महेंद्र सिंह धोनी का 2011 विश्व कप फाइनल में विजयी छक्का जड़ना दो क्रिकेट लम्हें हैं जिन्हें मैं मरने से पहले देखना पसंद करूंगा।'

अंक सूची में सुपरकिंग्स दूसरे स्थान पर

सुपरकिंग्स की टीम अभी अंक तालिका में दूसरे स्थान पर चल रही है और उसका आईपीएल प्ले ऑफ में जगह बनाने का दावा मजबूत है। लेकिन अभी यह तय नहीं है कि क्या धोनी की अगुआई वाली टीम चेपक लौटेगी जिसे क्वालीफायर एक और एलिमिनेटर की मेजबानी करनी है।

खबर संक्षेप

ज्योति छठे स्थान पर कोरिया का दबदबा

शंघाई। पिछले महीने अंताल्या में विश्व रिकॉर्ड की बराबरी करने वाला क्वालीफाइंग स्कोर बनाने वाली भारत की अनुभवी कंपाउंड तीरंदाज ज्योति सुरेखा वेन्नम उस सफलता को दोहरा नहीं सकी और विश्व कप दूसरे चरण में छठे स्थान पर खिसक गई। विश्व कप के दूसरे चरण में रिकॉर्ड की बराबरी करने वाला 713 का स्कोर करने के बाद ज्योति 693 स्कोर ही कर सकी और शीर्ष पांच में जगह नहीं बना पाई। अंताल्या में पहले चरण से बाहर रही कोरियाई टीम ने पुरूष और महिला दोनों वर्गों में शीर्ष वरीयता पाई। अनुभवी ओ यूहियुन और 2017 विश्व चैम्पियन सॉग युन शीर्ष दो स्थान पर रहे। ज्योति को पहले दौर में बाय मिला था। अदिति स्वामी 689 के स्कोर के साथ 12वें और अवनीत कौर 687 स्कोर करके 16वें स्थान पर रही। टीम वर्ग में भारत को तीसरी वरीयता मिली है।

सचिन तेंदुलकर के बेटे अर्जुन को कुत्ते ने काटा

लखनऊ। आईपीएल 2023 में सचिन तेंदुलकर के बेट अर्जुन तेंदुलकर से जुड़ी एक बड़ी खबर सामने आई है। इस साल आईपीएल में डेब्यू करने वाले अर्जुन तेंदुलकर को कुत्ते ने काट लिया है। इसके बारे में खुद अर्जुन ने जानकारी दी। अर्जुन ने बताया है कि उनके बॉलिंग आर्म में ही कुत्ते ने काट लिया। इसी वजह से वह आईपीएल के मुकाबले नहीं खेल पा रहे हैं।

शीर्ष क्रम के बल्लेबाजों में स्थान बनाना कठिन

ब्रिसबेन। ऑस्ट्रेलिया के सलामी बल्लेबाज उस्मान ख्वाजा का मानना है कि इंग्लैंड में शीर्ष क्रम के तीन बल्लेबाजों की कड़ी परीक्षा होती है और इन परिस्थितियों के लिए तैयारी करने का एकमात्र तरीका कड़ी मेहनत करना और बहुत कम उम्मीद रखना है। ख्वाजा को अभी तक इंग्लैंड की परिस्थितियों में रन बनाने के लिए जूझना पड़ा है। उन्होंने इंग्लैंड में जो छह टेस्ट मैच खेले हैं उनमें केवल 19.66 की औसत से रन बनाए हैं। ख्वाजा हालांकि इस समय अच्छी फॉर्म में चल रहे हैं।

प्रणय करियर के सर्वश्रेष्ठ सातवें स्थान पर

नई दिल्ली। भारत के स्टार बैडमिंटन खिलाड़ी एचएस प्रणय मंगलवार को जारी नवीनतम बीडब्ल्यूएफ विश्व रैंकिंग में दो स्थान के फायदे से पुरुष एकल में करियर के सर्वश्रेष्ठ सातवें स्थान पर पहुंच गए। राष्ट्रमंडल खेलों की कांस्य पदक विजेता त्रीशा जॉली और गायत्री गोपीचंद भी दो स्थान के फायदे से नवीनतम सूची में दुनिया की 15वें नंबर की महिला युगल जोड़ी बन गई हैं। प्रणय के 17 टूर्नामेंट से 66,147 अंक हैं और वह भारत के सर्वश्रेष्ठ एकल खिलाड़ी बने हुए हैं।

आईपीएल : स्टोइनिस ने खेली नाबाद 89 रन की पारी

मुंबई को पांच रन से हरा लखनऊ ने प्लेआफ की ओर बढ़ाए कदम

एजेंसी ▶▶ लखनऊ

चोट के कारण लंबे समय बाद वापसी करते हुए तेज गेंदबाज मोहसिन खान ने बेहतरीन आखिरी ओवर डालकर लखनऊ सुपर जाइंट्स को आईपीएल के मैच में मंगलवार को मुंबई इंडियंस पर पांच रन से रोमांचक जीत दिलाई जिससे प्लेआफ का उसका दावा भी पुख्ता हो गया। इससे पहले मार्कस स्टोइनिस की कैरियर की सर्वश्रेष्ठ 89 रन की नाबाद पारी के दम पर लखनऊ सुपर जाइंट्स ने खराब शुरूआत से उबरते हुए कठिन पिच पर तीन विकेट पर 177 रन बनाये। जवाब में मुंबई की शुरूआत धमाकेदार रही लेकिन टीम 20 ओवर में पांच विकेट पर 172 रन ही बना सकी। कंधे की चोट के कारण घरेलू सत्र से बाहर रहे मोहसिन ने आखिरी ओवर में मुंबई को 11 रन नहीं बनाने दिये।

लखनऊ ने तीन विकेट जल्दी गवाए

इससे पहले लखनऊ ने सातवें ओवर में तीन विकेट 35 रन पर गंवा दिये थे। लखनऊ ने इस सत्र में अपने लिये सर्वाधिक रन बनाने वाले काइल मायर्स को बाहर रखने का विवादित फैसला लिया जो गलत भी साबित हुआ। उनकी जगह आये दीपक हुड्डा पांच रन बनाकर जैसन बेहरेनडोर्फ का शिकार हुए। जैसन ने अगली गेंद पर प्रेरक मांकड़ को भी पवेलियन भेजा।

कृणाल 16वे ओवर में हुए रिटायर

सातवें ओवर में क्विंटोन डिकॉक के आउट होने से लखनऊ की हालत और खराब हो गई। उन्होंने 15 गेंद में 16 रन बनाये। वह पीयूष चावला की गुगली पर विकेट के पीछे ईशान किशन को कैच दे बैठे। इसके बाद से स्टोइनिस और कृणाल ने मोर्चा संभाला। कृणाल 16वें ओवर में असहज महसूस होने के कारण रिटायर हो गए। इसके बाद स्टोइनिस ने स्पिनर रितिक शोकीन और चावला को लगातार ओवरों में छक्के जड़े। क्रिस जोर्डन के डाले 18वें ओवर में 24 रन बने जिसमें दो छक्के और तीन चौके शामिल थे। उन्होंने पारी का अंत आकाश मढवाल को छकका लगाकर किया। मुंबई के गेंदबाजों ने आखिरी तीन ओवरों में 54 रन दे डाले।

स्कोर बोर्ड

लखनऊ सुपर जाइंट्स	रन	गेंद	4	6
दीपक हुड्डा का डेविड बो बेहरेनडोर्फ	05	07	0	0
क्विंटोन डिकॉक का ईशान बो चावला	16	15	0	2
प्रेरक का ईशान बो बेहरेनडोर्फ	00	01	0	0
कृणाल पंड्या रिटायर्ड हर्ट	49	42	1	1
मार्कस स्टोइनिस नाबाद	89	47	4	8
निकोलस पूरन नाबाद	08	08	1	0

अतिरिक्त : 10 रन, कुल योग : 20 ओवर में 177/3 रन

गेंदबाजी : बेहरेनडोर्फ 4-0-30-2, जोर्डन 4-0-50-0, शोकीन 3-0-20-0, चावला 3-0-26-1, मढवाल 4-0-30-0, ग्रीन 2-0-16-0.

मुंबई इंडियंस पारी	रन	गेंद	4	6
किशन का नवीनुल हक बो बिश्नोई	59	39	8	1
रोहित शर्मा का हुड्डा बो बिश्नोई	37	25	1	3
सूर्यकुमार यादव बो ठाकुर	07	09	0	0
निहाल वढेरा का गौतम बो मोहसिन	16	20	2	0
टिम डेविड नाबाद	32	19	1	3
विष्णु विनोद का पूरन बो ठाकुर	02	04	0	0
कैमरन ग्रीन नाबाद	04	06	0	0

अतिरिक्त : 15 रन, कुल योग : 20 ओवर में 172/5 रन

गेंदबाजी : पंड्या 4-0-27-0, खान 3-0-26-1, नवीनुल हक 4-0-37-0, ठाकुर 4-0-40-2, स्वप्निल 1-0-11-0, बिश्नोई 4-0-26-2

मुंबई प्लेऑफ में बनी हुई

वैसे इस हार के बावजूद मुंबई प्लेआफ की दौड़ में बनी हुई है। मुंबई के लिये कप्तान रोहित शर्मा (25 गेंद में 37 रन) और ईशान किशन (39 गेंद में 59 रन) ने शानदार शुरूआत करते हुए पहले विकेट के लिये 58 गेंद में 90 रन जोड़े। ईशान शानदार फॉर्म में दिख रहे थे जबकि रोहित ने भी फॉर्म में लौटने के संकेत दिये। लेग स्पिनर रवि बिश्नोई ने हालांकि लगातार दो ओवरों में दोनों को पवेलियन भेजकर मुंबई को दोहरे झटके दिये।

ऊंचे शॉट का खामियाजा सूर्यकुमार ने भुगता

इस पिच पर आते ही ऊंचा शॉट खेलने का खामियाजा सूर्यकुमार यादव को भुगतना पड़ा। तेज गेंदबाज यश ठाकुर ने उन्हें सात रन पर पवेलियन भेज दिया। मुंबई को आखिरी पांच ओवर में 53 रन चाहिये थे लेकिन टिम डेविड उस तरह जीत नहीं दिला सके जैसे राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ दिलाई थी। इससे पहले लखनऊ के लिये स्टोइनिस ने 47 गेंद की अपनी पारी में आठ छक्के लगाये और कार्यवाहक कप्तान कृणाल पंड्या (49 रिटायर्ड हर्ट) के साथ 82 रन की साझेदारी की।

शॉटपुट में तूर, भालाफेंक में रानी ने जीते खिताब

एजेंसी ▶▶ रांची

एशियाई खेलों के मौजूदा चैम्पियन शॉटपुट खिलाड़ी तेजिंदरपाल सिंह तूर और राष्ट्रमंडल खेलों की कांस्य पदक विजेता भालाफेंक खिलाड़ी अन्नु रानी ने फेडरेशन कप सीनियर एथलेटिक्स चैम्पियनशिप के दूसरे दिन अपने अपने वर्ग में स्वर्ण पदक जीते। तीस वर्ष की अन्नु हालांकि सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन नहीं कर सकी और 59.24 मीटर का निशाना लगाया लेकिन वह आगामी एशियाई चैम्पियनशिप और एशियाई खेलों के लिये क्वालीफाई करने के लिये काफी था। उत्तर प्रदेश की अन्नु का सर्वश्रेष्ठ व्यक्तिगत प्रदर्शन 63 . 82 मीटर है जो राष्ट्रीय रिकॉर्ड भी है।

■ फेडरेशन कप में अन्नु ने 59.24 मीटर का निशाना लगाया

जुलाई 12 से 16 तक होने वाली एशियाई चैम्पियनशिप में क्वालीफाइंग स्तर 54 . 73 मीटर है जबकि हांगझोउ खेलों के लिये यह 56 . 46 मीटर है। एशियाई रिकॉर्डधारी तूर ने 20 . 42 मीटर के साथ स्वर्ण जीता। उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 21 . 49 मीटर है। पंजाब के तूर ने 19 मीटर का एशियाई खेल क्वालीफाइंग मार्क पार किया।

दिल्ली के साहिब सिंह और पंजाब के करणवीर सिंह ने भी 19 मीटर की बाधा पार की। ओडिशा की स्त्रबानी नंदा ने महिलाओं की 100 मीटर दौड़ 11 . 57 सेकंड में जीती हालांकि एशियाई चैम्पियनशिप का क्वालीफाइंग आंकड़ा 11 . 44 सेकंड पार नहीं कर सकी। पुरूष वर्ग में ओडिशा के अमिय कुमार मलिक विजयी रहे जिन्होंने 10 . 31 सेकंड का समय निकाला।

एशियाई चैम्पियनशिप और एशियाई खेलों के लिये क्वालीफाइंग आंकड़ा 10.19 सेकंड है। महिलाओं की 400 मीटर में महाराष्ट्र की ऐश्वर्य मिश्रा 52.57 सेकंड का समय निकालकर विजयी रही लेकिन बाद में लेन तोड़ने के कारण उन्हें अयोग्य करार दिया गया।

400 मीटर में दूसरे स्थान पर प्रिया रही

दूसरे स्थान पर रही कर्नाटक की प्रिया मोहन को विजयी घोषित किया गया जबकि पुरूष वर्ग में तमिलनाडु के रमेश ने खिताब जीता। दोनों ने एशियाई चैम्पियनशिप के लिये क्वालीफाई कर लिया। प्रिया ने तकनीकी पेनल के समक्ष विरोध दर्ज कराया था और फैसला उनके पक्ष में आया।

लिवरपूल ने लीसेस्टर को 3-0 से हराया

एजेंसी ▶▶ लीसेस्टर

लिवरपूल ने लीसेस्टर को 3-0 से हराकर इंग्लिश प्रीमियर लीग (ईपीएल) फुटबॉल प्रतियोगिता के शीर्ष चार में जगह बना कर अगले सत्र की चैंपियंस लीग के लिए क्वालीफाई करने की अपनी उम्मीदें बरकरार रखा। लिवरपूल की तरफ से कर्टिस जोंस ने पहले दो गोल किए जबकि तीसरा गोल ट्रेंट एलेग्जेंडर आर्नोल्ड ने किया। लिवरपूल की यह लगातार सातवीं जीत है जिससे उसने कम से कम यूरोपा लीग में अपनी जगह सुनिश्चित कर ली है। वह अब अंक तालिका में पांचवें स्थान पर पहुंच गया है तथा न्यूकासल और मैनचेस्टर यूनाइटेड से केवल एक अंक पीछे है। प्रतियोगिता में शीर्ष चार स्थानों पर रहने वाली टीमें चैंपियंस लीग के लिए क्वालीफाई करेंगी। मैनचेस्टर सिटी और आर्सेनल पहले दो स्थानों पर काबिज हैं। दूसरी तरफ इस हार से लीसेस्टर पर 'सेकंड डिविजन' की लीग में खिसकने का खतरा मंडराने लगा है। उसके 36 मैचों में केवल 30 अंक हैं और वह 19वें स्थान पर है।

जोफ्रा आर्चर कोहनी की चोट के कारण एशेज श्रृंखला से बाहर

लंदन। इंग्लैंड के तेज गेंदबाज जोफ्रा आर्चर दाहिनी कोहनी की चोट के कारण ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ होने वाली एशेज श्रृंखला से बाहर हो गए हैं। अपनी इस चोट के कारण आर्चर 2021 से बहुत कम क्रिकेट खेल पाए हैं। इंग्लैंड एवं वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) के अनुसार स्कैन से पता चला है कि उनकी कोहनी की चोट फिर से उभर आई है जिसके कारण वह गर्मियों के इस सत्र में एक भी अंतरराष्ट्रीय मैच नहीं खेल पाएंगे। बारबाडोस में जन्मे इस 28 वर्षीय तेज गेंदबाज ने 2021 में अपनी कोहनी के दो ऑपरेशन करवाए थे।

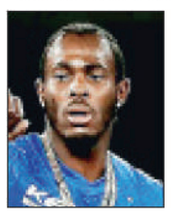

मेसी के बार्सिलोना छोड़ने के बाद पहला खिताब सुनिश्चित किया

बार्सिलोना ने 80,000 प्रशंसकों के साथ मनाया जीत का जश्न

एजेंसी ▶▶ बार्सिलोना

बार्सिलोना की स्पेनिश फुटबॉल लीग ला लीगा में पुरुष और महिला टीमों के खिताब जीतने का जश्न मनाने के लिए लगभग 80,000 प्रशंसक यहां सड़कों पर उतर आए।

■ बार्सिलोना ने एस्पेनियोल को 4-2 से हराया

बार्सिलोना की पुरुष टीम ने रविवार को एस्पेनियोल को 4-2 से हराकर 2019 के बाद स्पेनिश लीग में अपना पहला खिताब सुनिश्चित किया। लियोनेल मेसी के बार्सिलोना छोड़ने के बाद यह पहला अवसर है जबकि टीम ने ला लीगा का खिताब जीता है। बार्सिलोना की महिला टीम दो सप्ताह पहले ही खिताब अपने नाम सुनिश्चित कर चुकी थी। इन दोनों टीम के खिलाड़ियों ने सोमवार को बार्सिलोना में खुली बस में परेड करके अपने प्रशंसकों के साथ जीत का जश्न मनाया। प्रशंसक गीत गा रहे थे और बार्सिलोना का ध्वज लहरा रहे थे। बार्सिलोना की पुरुष टीम ने जो शर्ट पहन रखी थी उस पर लिखा था, ' ला लीगा हमारा है और भविष्य भी।' महिलाओं की शर्ट पर लिखा था, 'हम साथ खेले, हम साथ जीते।'बार्सिलोना की पुरुष टीम ने चार दौर पहले ही ला लीगा में अपना 27 वां खिताब सुनिश्चित किया। उसके 34 मैचों में 85 अंक हो गए हैं जबकि उसके करीबी प्रतिद्वंदी रियाल मैड्रिड के 34 मैचों में 71 अंक हैं।

पहले पीछ बैठकर सीनियर खिलाड़ियों का मजाक उड़ाते थे

कप्तानी ने बदल दिया खेल के प्रति छेत्री का रवैया

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

सुनील छेत्री अंतरराष्ट्रीय करियर के अपने शुरुआती दिनों में पीछे बैठा करते थे और सीनियर खिलाड़ियों का मजाक उड़ाते थे लेकिन 2011 में जब उन्हें कप्तान बनाया गया तो यह सब बदल गया क्योंकि उन्होंने महसूस किया कि उन्हें टीम के लिए उदाहरण पेश करने की जरूरत है। महान फुटबॉलर बाईचुंग भूटिया के 2011 एशियाई कप के बाद संन्यास लेने पर तत्कालीन कोच बॉब हॉटन ने दो महीने बाद मलेशिया में होने वाले एएफसी चैलेंज कप क्वालीफायर्स में युवा टीम की अगुआई करने की जिम्मेदारी छेत्री को सौंपी और उन्हें कप्तान बनाया।

■ 2011 में कप्तान बनने के बाद सारी परिस्थितियां बदल गई

आर्मबैंड पहने के बाद आगे बैठा

छेत्री ने कहा, 'मैं, स्टीवन (डियाज) और (एनपी) प्रदीप, सीनियर खिलाड़ियों का मजाक उड़ाते थे, मैं ऐसा ही था। सब कुछ मजाक था और मैं शरारती था।' छेत्री ने कहा, 'लेकिन जब मैंने आर्मबैंड पहना तो शुरुआती तीन-चार मैचों के लिए मैंने आगे बैठना शुरू कर दिया।'

कप्तान बनने पर दबाव महसूस किया

इस 38 वर्षीय फुटबॉलर ने कहा, 'मैं दबाव महसूस कर रहा था कि मैं अब कप्तान बन गया हूं। अब मुझे सिर्फ अपने बारे में नहीं बल्कि टीम के बारे में सोचना था।' छेत्री का भारत के लिए आखिरी बड़ा टूर्नामेंट दोहा में होने वाला एशियाई कप 2024 हो सकता है।

कप्तान बनने के बाद खेल का रवैया बदला

छेत्री ने 2005 में क्वेटा में पाकिस्तान के खिलाफ मैत्री मैच में भारत के लिए पदार्पण किया। उन्होंने इस मैच में गोल दागा जिससे भारत मुकाबला 1-1 से ड्रॉ कराने में सफल रहा। उस समय भारतीय टीम के कोच सुखविंदर सिंह थे। छेत्री ने कहा कि उन्होंने कप्तान बनने के बाद खेल को लेकर अपना रवैया बदला क्योंकि उन्हें उदाहरण पेश करने की जरूरत थी।

आखिरी तीन ओवरों में काफी रन देना महंगा पड़ा : रोहित शर्मा

लखनऊ। लखनऊ सुपर जाइंट्स के खिलाफ अच्छी शुरूआत के बावजूद पांच रन से हारने वाली मुंबई इंडियंस के कप्तान रोहित शर्मा ने हार का ठीकरा गेंदबाजों पर फोड़ते हुए कहा कि आखिरी तीन ओवरों में रन लुटाना महंगा पड़ा। लखनऊ ने शुरूआती झटकों से उबरते हुए 20 ओवर में तीन विकेट पर 177 रन बना डाले। मुंबई के गेंदबाजों ने आखिरी तीन ओवर में 54 रन दे दिये। जवाब में मुंबई की टीम पांच विकेट पर 172 रन ही बना सकी। रोहित ने मैच के बाद कहा, हम अच्छा खेले ही नहीं। कुछ पल आये थे जिन्हें भुनाना चाहिये था लेकिन ऐसा नहीं हो सका। दुर्भाग्यपूर्ण रहा लेकिन हमें मनोबल ऊंचा रखना होगा। पहले विकेट की साझेदारी में ईशान किशन के साथ 58 गेंद में 90 रन जोड़ने वाले रोहित ने कहा, हमने पिच का अच्छा आकलन किया था। यह पहले की तरह नहीं थी और बल्लेबाजी के लिये अच्छी थी। हमने दूसरे हाफ में लय खो दी। गेंदबाजी में भी आखिरी तीन ओवर में काफी रन दे डाले। प्लेआफ में पहुंचने की संभावना के बारे में उन्होंने कहा, मुझे नहीं पता कि आंकड़े क्या कहते हैं। हमें अगला मैच हर हालत में जीतना है।

लोक साहित्य

सरला शर्मा

मया म बंधाय होथे लोरी गीत

साहित्य के दू ठन रूप पाए जाथे। पहिली मौखिक (मुहखरा) जेकर विकास लिपि के विकास के पहिली सभ्यता के संगे-संगे होय रिहिस। इही पाय के एकर लिखित इतिहास आजो नइ मिलय। एक पीढ़ी ले दूसर पीढ़ी, एक मुंह ले दूसर मुंह बगरत मुंहखरा साहित्य बाढ़त गिस। लोरी गीत घलो ह इही परंपरा के गीत आय। छत्तीसगढ़ी लोरी के जनम के इतिहास हम नइ जानत हन। अतक कहे जा सकत हे कि सिरिफ छत्तीसगढ़ी लोरी भर नहीं, भलुक संसार के पहिली महतारी हर जब अपन लइका ला भुलवारे बर, खेलाए बर, सुरताए बर जौन किसिम ले गुनगुनाए रिहिस उही हर पहिली लोरी रिहिस होही। संसार के काव्य साहित्य मा गीत विधा के सुरूआत लोरी ले ही होय रिहिस। काबर कि सबले पहिली मया के डोरी महतारी अउ लइका के बीच म तो बंधाथे। हमर दाई, बूढ़ी दाई, मन ले सुने लोरी मन ल आजो भुलाए नइ सकन। सुरता करव न छोटकुन लइका ल तेल चुपरत वो मन गावयं-

चाकी चाकी लोहरा, तेल ठौके पोहरा।
तेल कस चिकनाई, घानी कस मोटाई।
तेल जावै कोरे-कोर, लइका बाढ़ै पोरे-पोर।
नोनी / बाबू बाढ़े पोर-पोर।

अइसन कतको गीत मुहखरा हमर पूर्वज महतारी मन कर रहाय। ऐ गीत ले कतको जोर जोर ले रोवैय्या लइका मन घलो चुप हो जाय।

पुस्तक समीक्षा

पाटन राज के नव रत्न

कृति के नाव
पाटन राज के नव रत्न

कृतिकार
लखनलाल आडिल

समीक्षक
गौकरण मानिकपुरी

प्रकाशक
अंजली ग्राफिक्स भिलाई

कीमत
पचास रुपए

छत्तीसगढ़ के माटी के सेवा करैय्या कतको सपूत मन बिना कोई सुवारथ के बूता करथें अउ ऐ दुनिया ले बिदा ले लेथें। अइसने बूता करैय्या में लखनलाल आडिल जी रिहिन। आप शिक्षा जगत में बूता करे के संग अपन जनम भूमि ल नी भुलाएव। आपके जनम पाटन अंचल म होय के सेती अपन माटी के सपूत मन ल अपन किताब 'पाटन राज के नव रत्न' ले अविस्मरणीय बनाय म कोनो कमी नी करेव। ऐकरे संग पाटन राज के उपलब्धि ल घलो आगू लाय के पूरा प्रयास करेव। आपके किताब ले इहां के सुराजी मन के जीवनी ल जाने बर अच्छा माध्यम आय। अपन अथक प्रयास ले ऐ किताब ल पाठक मन बर संग्रहणीय बनाय म लेखक ह कोनो कमी नी करे हे।

मनोकामना पूरा होय के मान्यता हे ग्राम परसुली के श्रीगणेश मंदिर में

जनश्रुति हे कि श्रीगणेश जी के मुरती बहुत छोटे रूप म खरखरा नदी के तट म बसे ग्राम खेरथाबाजार, खैरा अउ परसुली-खार के सियार (संगम) म पहिली घांव देखे गिस। श्रीगणेश जी के मुरती बाढ़त हे, येकर ले श्रीगणेश जी प्रति लोगन के आस्था दिनो-दिन बढ़त हावै। माने जाथे कि ऐ मंदिर म देवारी के सुरहोती रात म पूरा गांव भर के दीया जलाथें जेकर ले उंकर मनोकामना पूरा होथै।

बालोद जिला मुख्यालय ले बूड़ती दिसा म बीस किमी दूरी म कांकेर-राजनांदगांव सड़क म विकास खंड मुख्यालय डौंडी-लोहारा हे। अइसना ईस्वरीय आस्था बालोद जिला के विकास खंड डौण्डी-लोहारा के ग्राम परसुली म श्रीगणेश जी के मुरती गांव अउ आसपास के रहवइया मन के हिरदय म बसथै।

वइसे गांव वाले मन के मुताबिक श्रीगणेश जी के मुरती के प्रतिस्थापन काल अज्ञात हे। जनश्रुति हे कि श्रीगणेश जी के मुरती बहुत छोटे रूप म खरखरा नदी के तट म बसे ग्राम खेरथाबाजार, खैरा अउ परसुली-खार के सियार (संगम) म पहिली घांव देखे गिस। परसुली गांव के रहैया एकझन सियनहा ल सपना म आके नदी-किनारे कच्छार म प्रतिस्थापित करे बर केहे गिस। आखिर म श्रीगणेश जी के मुरती ल वोकर इच्छानुसार नदी-किनारे एक विसाल पीपर वृक्छ के खाल्हे म प्रतिस्थापित करे गिस। पहिली ये मुरती ह बहुत नान्हे अउ खुले रूप म रिहिस। बाद में समिति गठित होके मंदिर बनाये गिस। जेन परम्परा आज तक चलत हावै। मुरती म तेलयुक्त बंदन लेपन लगे हावै। प्रमुख मुरती करा अउ नान-नान सिला-खंड रूप दिगर देवी-देवता घला विराजित हें। श्रीगणेश जी के मुरती बाढ़त हे, येकर ले श्रीगणेश जी प्रति लोगन के आस्था दिनो-दिन बढ़त हावै। माने जाथे कि ऐ मंदिर म देवारी के सुरहोती रात म पूरा गांव भर के दीया जलाथें जेकर ले उंकर मनोकामना पूरा होथै।

आस्था: टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला'

मनोभाव से हास्य पैदा करते हैं जोक्कड़

लोक नाट्य का नायक जोक्कड़ उपदेश या सिद्धांत निर्दिष्ट करने वाला जड़ या पुतला मात्र नहीं होता, वरन उसके ही समान सामान्य गुणों का होता है जो सही पथ बताकर जन जन को विशिष्ट और सही करने की ओर उन्मुख करता है। वह समाज या जीवन का दर्पण मात्र न होकर उसके अवगुणों को चोट करने वाला संयोजक भी है। ऐसे महान गुणों के कारण लोकमंच लोक के हृदय का हार भी बनता है।

लोक नाट्य: डा. विनय कुमार पाठक

नाचा या इतर लोक नाट्य तथा रामलीला या रासलीला का विदूषक जोक्कड़ होता है, जो संस्कृत की शिष्ट परंपरा प्रदत्त और युगानुरूप कार्यन्वयन का चरित्र है। यह ऊल-जुलूल वेशभूषा से हंसाता है, हाव-भाव से खिलखिलाहट को जन्म देता है और शब्द प्रयोग से पेट में बल पड़ने का उपक्रम नियोजित करता है। लोकमंच पर हमारी आसुरी वृत्ति का प्रतीक, जीवन को बाधित करने का चरित्र, पहले रावण की तरह अट्टहास करता दृष्टिगत होता है फिर सात्विक प्रवृत्ति वाले नायक से टकराकर क्रमशः चूर-चूर होता है। लोक इससे स्फूर्त होता है, उसका अंतर मूर्त होता है। वह नायक को आरोपित करता है,क्योंकि लोक नाट्य का नायक जोक्कड़ उपदेश या सिद्धांत निर्दिष्ट करने वाला जड़ या पुतला मात्र नहीं होता, वरन उसके ही समान सामान्य गुणों का होता है जो सही पथ बताकर जन जन को विशिष्ट और सही करने की ओर उन्मुख करता है। वह समाज या जीवन का दर्पण मात्र न होकर उसके अवगुणों को चोट करने वाला संयोजक भी है। ऐसे महान गुणों के कारण लोकमंच लोक के हृदय का हार भी बनता है।

जीव संरक्षण का संदेश आदिवासी गोचों में

संस्कृति : दिनेश वर्मा

ग्राम्य संस्कृति समाज को प्रभावित करती है, क्योंकि संस्कृति हमारे समाज की मेरुदंड है। उत्तर बस्तर कांकेर क्षेत्र में निवासरत आदिवासी समाज में प्रतीकों और मिथकों में बसी संस्कृति पशु-पक्षी व पेड़-पौधों के संरक्षण में जीवंत प्रतीत होता है। चल-अचल संस्कृति टोटम गण चिन्ह के संस्कृति के अवधारणा पर आधारित हैं। आदिवासी समाज के धर्मगुरु 'मुठवापोय पहन्दीपारी कुपार लिंगों' प्रकृति के साथ रहने व उपाय देयता पर कृतज्ञता ज्ञापित करने का भाव आदिवासी समाज को बताया था। इसके साथ ही गोत्र के आधार पर जीवन पर्यंत इस धरती से एक वृक्ष (अचल) को नहीं काटने व एक पशु-पक्षी (चल) को नहीं मारने का संदेश दिया था, जिनका आज भी बस्तरवासी पालन करते हैं। यहां सभी गोत्र के लोग साजा वृक्ष को नहीं काटते। कुछ चल-अचल गोत्रों में नेताम, सलाम, मरकाम, टेकाम, हिदको, कोर्राम (कछुआ-कसही), कुंजाम, कश्यप, गावड़े (बकरा-करंजी), उसेंडी (कुम्हारिन चिड़िया कुमही), कोडोपी, गोटा, तुमरेटि (बोध मछली -कसही), कांगे (कहाड़-बेल) कुरैटी (बकरा-गुरबेल)आदि हैं। आदिवासियों में प्रचलित इस संस्कृति ने टोटम पशु-पक्षी व वृक्षों को बचाने में अधिक उपलब्धता हासिल की है।

गांव की कहानी

डॉ. राघवेन्द्र 'राज'

मड़िया उत्पादन के कारण गांव का नाम मड़ियापार

दुर्ग जिले के जालबांधा मार्ग पर स्थित हिर्री के समीपस्थ ग्राम मड़ियापार की बस्ती जीवटता के लिए जानी जाती है। खेत-खलिहान से जुड़ी बाड़ियों में मड़िया नामक खाद्यान की पैदावार होती थी, जिसका उपयोग मीठे पकवान बनाने के लिए उपयोग में लाते थे। बुजुर्ग इस मीठे पकवान की लाजवाब स्वाद से अभिभूत होकर कह बैठे। इस मड़िया का कोई पार नहीं पा सकता और इस तरह गांव का नामकरण मड़ियापार हो गया। मड़ियापार कहीं न कहीं अटूट हृदय की दृढ़ता का नाम है। सन 1960-62 में शास्त्री नवयुवक मंडल का गठन किया गया। फलतः गांव की सांस्कृतिक समृद्धि में वृद्धि हुई। आज यह गांव राज्य स्तरीय पोला महोत्सव का आयोजन करता है जिसमें बैल दौड़ प्रमुख आकर्षण के केन्द्र होते हैं, जिसमें दूर-दूर से प्रतिभागी अपने बैलों को दौड़ के लिए सजाकर लाते हैं। इसके साथ ही दूर दूर से आए दर्शकों की भी काफी भीड़ होती है। इस लोग के अधिकतर लोग नौकरी पेशा से जुड़े हैं, इस कारण सांस्कृतिक आयोजन वर्ष भर होते ही रहते हैं। आज यह गांव आर्थिक रूप से समृद्ध है और खेती-किसानी के कामों में रूचि लेने में कोई कमी नहीं करते।

गुरतुर बोली रिहिस लाल रामकुमार सिंह के

सुरता: पूजा बंछोर

अंचल के जाने-माने आकाशवाणी रायपुर के उद्घोषक लाल रामकुमार सिंह के जन्म 27 अगस्त 1937 के खैरागढ़ म होय रिहिस। 1970 ले आकाशवाणी रायपुर के सफल उद्घोषक के रूप में छत्तीसगढ़ के पहचान बनइन। गुरतुर बोली रिहिस लाल रामकुमार सिंह के। चटिया-मटिया नाव के उंखर लिखे पहिली छत्तीसगढ़ी नाटक आकाशवामी इंदौर अउ भोपाल ले 1961-62 में प्रसारित होय रिहिस। मयारूक चंदा छत्तीसगढ़ी धारावाहिक में पाठ घलो करे रिहिन। आप मन ल पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, राजेन्द्र कर्महे अउ प्रोफेसर शमसुद्दीन जइसे गुरू मन के सानिध्य घलो मिलिस। 31 अगस्त 1995 में आकाशवाणी रायपुर ले सेवानिवृत्त होय रेहेव। आप ल क्षेत्रीय प्रचार अधिकारी के पद मा काम करे के सौभाग्य बालाघाट अउ दुरूग में आप ल मिलिस। आप छत्तीसगढ़ी के कतको कार्यक्रम ल आकाशवाणी के माध्यम ले आघू लाय म अपन योगदान देव। आप नवा कलाकार अउ साहित्यकार मन ल आकाशवाणी में मंच देके ऊंकर प्रतिभा ल उभारे में कोनो कमी नी करेव। आकाशवाणी के माध्यम ले करे गे आपके योगदान ल कभु भुलाय नी जा सके।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में हुआ किसान दिवस का आयोजन

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। जिलाधिकारी आर्यका अखौरी की अध्यक्षता मे किसान दिवस का आयोजन विकास भवन सभागार मे आयोजित किया गया। बैठक मे जिलाधिकारी द्वारा कृषको को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए उनकी समस्याओं के बारे में जानकारी ली। एक-एक किसानों की समस्याओं को सुना, उसके उपरान्त किसानो की किसी भी समस्या पर तत्काल निस्तारण करने का निर्देश सम्बन्धित अधिकारी को दिया। प्रधानमंत्री किसान सम्मान योजना के अन्तर्गत 22 मई, 23 से 10 जून 23 तक ग्रामो एवं पंचायतो में कैम्प के माध्यम से अभियान चलाकर इस योजना का अधिक से अधिक किसानो को लाभ दिया जाय। किसानो द्वारा बताया गया कि विकास खण्ड रेवतीपुर के सहायक विकास अधिकारी (कृषि रक्षा) द्वारा सरकार की योजनाओ के बारे में पूछे जाने पर सही ढ़ग से जानकारी नही दिये जाने एवं कार्यो में रूची न लेने की शिकायत की। जिसपर जिलाधिकारी ने जिला कृषि अधिकारी को निर्देश दिया कि इस शिकायत की जॉच कर आवश्यक कार्यवाही की जाय। सिचाई विभाग के अभियन्ता को निर्देश दिया कि नहरो में समय-समय पर पानी की आपूर्ति की जाय जिससे किसानो को किसी प्रकार की असुविधा न हो साथ ही एआर-कापरेटिव को निर्देशित किया कि सभी समितियों पर उर्वरक की उपलब्धता सुनिश्चित कराने हेतु सभी सचिवों को रोस्टर के अनुसार खाद का वितरण कराये। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी संतोष कुमार वैश्य, उप निदेशक कृषि, जिला कृषि अधिकारी, जिला उद्यान अधिकारी तथा सिचाई विभाग के अभियन्ता,नहर एवं अन्य सम्बन्धित विभाग के अधिकारी सहित सम्मानित किसान बन्धु उपस्थित रहे।

जिलाधिकारी ने कलेक्ट्रेट परिसर में किया प्रेरणा कैंटीन का उद्घाटन

प्रखर ब्यूरो गाजीपुर। स्थानीय कलेक्ट्रेट परिसर में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के अंतर्गत गठित स्वयं सहायता समूह के माध्यम से वादकारियों को स्वच्छ जलपान उपलब्ध कराये जाने के उद्देश्य से प्रेरणा कैंटीन का शुभारम्भ बुद्धवार को जिलाधिकारी आर्यका अखौरी के कर कमलों द्वारा फीता काट कर किया गया। कैंटीन का संचालन कंचन चौहान, अध्यक्ष शिवशक्ति स्वयं सहायता समूह ग्राम शिव सिंह चक विकास खण्ड देवकली द्वारा किया जावेगा। शुभारम्भ के बाद जिलाधिकारी द्वारा बताया गया कि महिलाओं के सशक्तिकरण एवं आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाने की दिशा में यह एक कदम है। प्रेरणा कैंटीन के खुलने से जहाँ वादकारियों को स्वच्छ जलपान उपलब्ध होगा वहीँ समूह की महिलाएं आर्थिक रूप से सशक्त होंगी। इस अवसर पर उपस्थित गोपाल कृष्ण चौधरी, उपायुक्त स्वतः रोजगार द्वारा बताया गया कि जनपद में मुख्यालय स्तर पर विकास भवन, जिला अस्पताल एवं कलेक्ट्रेट परिसर में एवं कुल 09 विकास खण्ड मुख्यालय व 09 सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रो पर समूहों के माध्यम से प्रेरणा कैंटीन का सफलतापूर्वक संचालन किया जा रहा है। प्रेरणा कैंटीन के माध्यम से समूहों को काफी लाभ भी मिल रहा है जिससे समूह कि महिलाएं आर्थिक रूप से सशक्त हो रही है। इस अवसर प्रतिभा मिश्रा उपजिलाधिकारी सदर, जिला सूचना अधिकारी राकेश कुमार, जिला सूचना विज्ञान अधिकारी अखिलेश जायसवाल एवं समस्त जिला मिशन प्रबंधक, ब्लाक मिशन प्रबंधक सदर व देवकली एवं अन्य लोग उपस्थित रहे।

आजादी के बाद पहली बार दुल्लहपुर में एमएलसी कोटे से हो रहा विकास कार्य

प्रखर दुल्लहपुर गाजीपुर। वैसे तो कहा गया है कि विकास का रास्ता गांव से होकर गुजरता है। लेकिन जनप्रतिनिधियों की उपेक्षा के चलते विकास अवरूद्ध था। आजादी के बाद पहली बार दुल्लहपुर में एमएलसी कोटे से लग रहे जिग जैग रंगीन इंटरलॉकिंग से ग्रामवासियों में खुशी है। दुल्लहपुर सांसद आदर्श गांव में आजादी के बाद पहली बार किसी विधायक की विकास निधि से कोई विकास कार्य हो रहा है ।जिससे दुल्लहपुर वासियों में हर्ष व्याप्त है, ऐसा क्षेत्र के युवा भाजपा नेता एवं पूर्व जिला पंचायत सदस्य प्रतिनिधि अनिल कुमार पांडेय के प्रयास से संभव हुआ है। ग्राम पंचायत देवा और दुल्लहपुर को जोड़ने वाले संपर्क मार्ग पर विधान परिषद सदस्य विशाल सिंह चंचल ने अपना प्रस्ताव दिया जिनकी विधायक निधि से कार्य हो रहा है। इस संबंध में अनिल पांडेय ने बताया की देश की आजादी के पश्चात पहली बार किसी विधायक की विधायक निधि दुल्लहपुर ग्राम पंचायत में पहुंची है।

आज तक दुल्लहपुर ग्राम पंचायत में जिगजैग रंगीन सीमेंट ईट प्रयोग नहीं हुआ था, यह दोनों कार्य पहली बार कराने वाले लोकप्रिय विधान परिषद सदस्य विशाल सिंह चंचल को लोगों ने बधाई दी है। कार्य का निरीक्षण करने पहुंचे पांडेय के साथ आसपास के लोगों ने बताया इस संपर्क मार्ग से दुल्लहपुर मुख्य बाजार से देवा गांव जुड़ जाएगा ' नई सड़क निर्माण से खुश होकर लोगों ने बताया कि पूर्व में माननीय मनोज सिन्हा ने गांव को गोद लेकर विकास का कार्य कराया था, लेकिन उनके चुनाव हारने के बाद 5 साल तक यहां एक भी ईंट किसी जनप्रतिनिधि ने नहीं रखी है। ग्राम प्रधान हरिओम मद्धेशिया, शिव नारायण प्रजापति ,डॉ एके वर्मा ,सुनील मद्धेशिया ,पप्पू चौहान ,दयाशंकर जायसवाल कमलेश यादव आदि लोगों ने इस विकास कार्य के साथ अपने विधान परिषद सदस्य को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए नाली निर्माण की भी मांग करते हुए लिखित ज्ञापन भेजा।

अज्ञात वाहन की चपेट में आने से एक की मौत दो गंभीर रूप से घायल जिला अस्पताल रेफर

प्रखर गंभीरपुर /आजमगढ़। गम्भीरपुर थाना क्षेत्र के फरिहा मुहम्मदपुर मार्ग पर मोहिद्दीनपुर के पास बुधवार की सुबह लगभग 6:00 बजे अज्ञात ट्रक की चपेट में आने से एक व्यक्ति की मृत्यु हो गई तथा दो व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गए । ग्रामीणों की सूचना पर थानाध्यक्ष विजय प्रकाश मौर्य मय फोर्स पहुँचे व एम्बुलेंस 108 की सहायता से सभी घायलों को प्राथमिक उपचार हेतु प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र मुहम्मदपुर ले गए। जहाँ पर डॉक्टरों ने हालत गंभीर होने पर देवराज व महेश को जिला अस्पताल के लिए रेफर कर दिया वही मृतक के शव को पुलिस ने पंचनामा बनाकर पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल भेज दिया । मिली जानकारी के मुताबिक गंभीरपुर थाना क्षेत्र के अम्बरपुर गांव निवासी देवराज उम्र 60 वर्ष

पुत्र मिट्ठू, अवधेश उम्र 42 वर्ष पुत्र बालकिशन व महेश उम्र 30 वर्ष पुत्र मंजू अपनी मोटरसाइकिल से गंभीरपुर थाना क्षेत्र के ताजपुर गाँव मे विवाह समारोह में गए थे । विवाह संपन्न होने के बाद बुधवार की सुबह ताजपुर से अपने घर अंबरपुर वापस आ रहे थे कि जैसे ही मोहिद्दीनपुर गांव पहुंचे ही थे कि फरिहा की तरफ से आ रहें अज्ञात वाहन की चपेट में आ गए जिसमे अवधेश की मौके पर ही मौत हो गई और दो लोग गंभीर रूप से घायल हो गए।अवधेश चार भाई में सबसे बड़ा था पिता की पहले ही मृत्यु हो चुकी है अवधेश घर पर ही रहकर खेती बाड़ी व मजदूरी कर अपना व अपने परिवार का जीविकोपार्जन करता था । मृतक के चार पुत्री जिसमें लवी 18 वर्ष, लवली 16 वर्ष , मानू 14 वर्ष, शानू 8 वर्ष है मृतक की पत्नी उषा का रो रो कर बुरा हाल था।

बारात में आई बोलेरो से कुचलकर दुल्हन की सगी मौसी की हुई मौत

प्रखर राजगढ़, मिजार्पुर। स्थानीय थाना क्षेत्र के राजगढ़ गांव में बीती रात आई बारात में भोजन के दौरान महिलाओं के साथ छींटाकशी करने पर घरात व बरात में जमकर मारपीट हो गई। जिसमें कई लोग घायल हो गए। मारपीट के दौरान भाग रहे बारातियों की वाहन से कुचलकर दुल्हन के सगी मौसी की मौत हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को अन्त्य परीक्षण के के लिए भेजते हुए मृतिका के पुत्र की तहरीर पर मुकदमा पंजीकृत कर विधिक कार्यवाई में जुट गई है। बीती मंगलवार की रात चुनार थाना क्षेत्र के बरगवां गांव से राजगढ़ गांव निवासी विशंभर गोंड के पुत्री की शादी के लिए बारात आई हुई थी। बारात मालिक दूल्हे के पिता गोवर्धन ने बताया कि बारात में आए बरगवां गांव के कुछ बराती पुरानी चुनावी रंजिश को लेकर बारात के जनवास में ही आपस में भीड़ गए। किसी तरह बीच-बचाव किया गया। पुलिस को सूचना दी गई, मौके पर पहुंची पुलिस सभी को समझा-बुझाकर वापस चली गई। द्वारचार के बाद भोजन के दौरान बारात में आए कुछ लोग महिलाओं के बीच में जाकर छींटाकशी करने लगे। जिससे बारात तथा घरात पक्ष के लोगों में वाद विवाद हो गया। विवाद बढ़ने पर दोनों तरफ से ईट पत्थर तथा लाठी डंडा चलने लगे। जिससे बारात में अफरा-तफरी मच गई।बारात के कुछ लोग एक बोलेरो में बैठ कर भागने लगे। इसी दौरान अपने लड़के दीनदयाल को पीटता हुआ देख बेटे को बचाने गई दुल्हन की मौसी चंपा देवी 54 वर्ष पत्नी कुन्नू प्रसाद निवासी कुसम्हा थाना मड़िहान की बोलेरो से कुचल कर गंभीर रूप से घायल हो गई। जिसे सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र राजगढ़ में भर्ती कराया गया। जहां चिकित्सकों ने जांच कर मृत घोषित कर दिया। महिला की मौत से आक्रोशित घरातियों ने बारात में आई अन्य वाहनों का शीशा तोड़ दिया। सूचना पर पहुंचे राजगढ़ थाना प्रभारी निरीक्षक राणा प्रताप यादव शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिए। बारात पक्ष के कुछ लोगों को रोककर पुलिस तथा ग्रामीणों की मौजूदगी में शादी संपन्न कराई गयी। इस संबंध में थाना प्रभारी ने बताया की मृतक की तहरीर पर तीन लोगों के खिलाफ नामजद तथा 30 अज्ञात लोगों पर मुकदमा पंजीकृत कर विधिक कार्यवाई की जा रही है।

थाना प्रभारी ने पत्रकार के बेटे आर्यन को दी शुभकामनाएं

प्रखर दानगंज वाराणसी। सीबीएसई बोर्ड की 12 वीं परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त कर ग्रामीण अंचल में प्रतिभा का बढ़िया प्रदर्शन करने वाले आर्यन प्रताप सिंह (प्रिंस) के घर मंगलवार की सांयकाल मिजार्मुराद थानाध्यक्ष दीपक कुमार रनावत व क्षेत्र के कई पत्रकार पहुंचे।एसओ व पत्रकारों ने छात्र को शुभकामनाएं देते हुए उसके उज्वल भविष्य की कामना की। बताते चले कि मिजार्मुराद निवासी पत्रकार व समाजसेवी शैलेन्द्र सिंह 'पिन्टू' का पुत्र आर्यन मोहनसराय स्थित मदरलैंड पब्लिक स्कूल में कामर्स से इंटर का छात्र रहा।इस छात्र ने कोचिंग किए बगैर स्कूल व घर पर लैपटाप व मोबाइल से यू ट्यूब के जरिए पढ़ाई कर बोर्ड परीक्षा में करीब 91 प्रतिशत अंक हासिल कर सफलता प्राप्त की हैं। इस सफलता पर एसओ दीपक कुमार रनावत, एसआई बलराम पाठक, पत्रकार पवन त्रिपाठी, उमेश उपाध्याय, भरत निधि तिवारी, संतोष दुबे, अवनीश कुमार दुबे अभिषेक त्रिपाठी 'सुमित' आदि ने छात्र को शुभकामनाएं दी।

यूसी मास दिल्ली ने अपने होनहार छात्रों को किया सम्मानित

प्रखर दिल्ली। UCMAS दिल्ली द्वारा 14 मई 2023 को बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिए अलग -अलग श्रेणियों में अवार्ड समारोह प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। UCMAS के बारे में कहा जाता है कि यह दुनिया का सबसे पसंदीदा , टॉप रेटेड और सफल अबैकस प्रोग्राम है। बता दें कि UCMAS कार्यक्रम एक मस्तिष्क विकास कार्यक्रम है जो बच्चों को किसी भी इलेक्ट्रॉनिक उपकरण के उपयोग के बिना जल्दी और सही तरीके से मानसिक गणना करना सिखाते है और दिमाग की गति को बढ़ाते है। UCMAS ने 7 मई 2023 को 17वीं दिल्ली राज्य स्तरीय मानसिक और अंकगणितीय प्रतियोगिता का आयोजन किया था। और UCMAS दिल्ली ने 14 मई को अवॉर्ड समारोह प्रतियोगिता का आयोजन किया। UCMAS दिल्ली के कई छात्रों ने नकद राशि के साथ बड़ी और सुंदर ट्राफियां जीती हैं। छात्रों ने अपने संबंधित श्रेणियों में चैंपियंस ऑफ चैंपियंस, ग्रुप चैंपियंस, चैंपियंस और उपविजेता पदों को हासिल किया। बता दें कि अजय वीर यादव, शिक्षा निदेशालय में

पेशेवर शिक्षक और सरकारी स्कूल शिक्षक संघ के चयनित महासचिव साथ ही शिक्षा निदेशालय में शारीरिक शिक्षक दीपक कुमार ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इस मेगा इवेंट में UCMAS फ्रेंचाइजी और कोर्स इंस्ट्रक्टर को UCMAS दिल्ली के प्रबंध निदेशक राजीव गर्ग द्वारा स्मृति चिन्ह, ट्रॉफी और नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया। UCMAS पाठ्यक्रम के सभी स्तरों को पूरा करने वाले छात्रों के लिए स्नातक समारोह भी आयोजित किया गया था। छात्र-छात्राओं को डिग्री व स्नातक मेडल देकर सम्मानित किया गया।

जिले में पूर्व मंत्री शैलेंद्र यादव ललई का रहा दबदबा, निकाय चुनाव में दो सीटों पर सपा को दिलाई जीत!

प्रखर शाहगंज जौनपुर। पूर्व मंत्री शैलेंद्र यादव ललई ने एक बार फिर अपनी राजनीतिक पकड़ का एहसास करवाया। साथ ही अपने राजनीतिक विरोधियों को आइना दिखाया। शाहगंज नगर पालिका परिषद में सपा सबसे अधिक मतों से जीत दिलाई। सूत्रों के अनुसार ललई यादव मतगणना के दौरान देर रात तक अपने निजी स्थान पर बैठकर हर आंकड़े के साथ पूरी निगरानी करते रहें, हालांकि खेतासराय नगर पंचायत की रिकाउंटिंग के बाद भी वसीम अहमद 72 वोटों से विजयी हुए। ललई यादव अपने राजनीतिक पकड़ का एहसास भाजपा नेताओं को भी करा दिया। भाजपा नेताओं द्वारा अपनी ही सरकार के प्रशासन पर आरोप लगा कर धरने पर बैठने को मजबूर हो गए थे। ललई यादव ने ट्वीट करते हुए लिखा कि "यह

जनता की जनता के सहयोग से जनता के लिए जीत है। विजयी प्रत्याशी को बधाई दी और कहा कि मैं उम्मीद करता हूं कि आपको समाजवादी पार्टी की विचारधारा का अनुसरण करते हुए सदैव जनहित के लिए तत्पर रहेंगी। इस जीत के लिए समस्त मतदाताओं एवं कार्यकताओं का हृदयपूर्वक आभार व्यक्त करता हूँ। जौनपुर शाहगंज नगर पालिका परिषद चुनाव में अध्यक्ष पद पर समाजवादी पार्टी की प्रत्याशी रचना सिंह ने जीत हासिल की है। उन्होंने भारतीय जनता पार्टी की प्रत्याशी और निवर्तमान अध्यक्ष गीता जायसवाल को 2560 वोटों से शिकस्त दी। वार्डों के नतीजों में कई सीटिंग सभासदों को जीत मिली। इसके अलावा कुछ पूर्व सभासदों ने भी एक बार फिर से बोर्ड का हिस्सा बनने में कामयाबी हासिल की। वही नगर पंचायत खेतासराय में सपा प्रत्याशी और निवर्तमान चेयरमैन वसीम अहमद ने बेहद नजदीकी मुकाबले में भाजपा के रूपेश गुप्ता को मात दी। शनिवार देर रात वसीम अहमद को जीत का सर्टिफिकेट दिया गया था।

प्राइमरी स्कूल मण्डुवाडीह में पांच दिवसीय समर कैंप का समापन

प्रखर पूर्वान्चल वाराणसी। प्राइमरी स्कूल मण्डुवाडीह अंग्रेजी माध्यम काशी विद्यापीठ वाराणसी में पांच दिवसीय समर कैंप का समापन सम्पन्न हुआ इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रदीप कुमार मिश्र खण्ड शिक्षा अधिकारी व शिक्षक संघ के अध्यक्ष सनत कुमार सिंह एवं अनमोन सेवा समिति के अरविन्द चक्रवाल द्वारा विभिन्न विधाओं गीत संगीत, नृत्य, आर्ट, क्राफ्ट, कला, पेंटिंग, रंगोली, मेंहदी में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पाने वाले बच्चों को पुरस्कृत किया गया` सनत कुमार सिंह की ओर से बच्चों को लेखन सामग्री पेन वितरित किया गया राज्य पुरस्कृत शिक्षिका प्रधानाध्यापिका सरिता राय ने सभी का आभार व्यक्त किया `खण्ड शिक्षा अधिकारी प्रदीप मिश्र ने कहा कि विगत वर्षों से हमारे शिक्षक समर कैंप के जरिए बच्चों का उत्साहवर्धन करते आ रहे हैं सरिता राय ने कहा विभिन्न विधाओं की प्रतियोगिता से बच्चों की प्रतिभाओं का प्रदर्शन होता है जिससे बच्चे उत्साहित होते हैं सरिता राय ने बताया कि उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ के अध्यक्ष सनत कुमार सिंह द्वारा

प्राथमिक विद्यालय मण्डुवाडीह को वर्ष 2017 में गोद लिया गया था तब विद्यालय की स्थिति काफी बदतर थी मेरे द्वारा निरन्तर प्रयास कर विद्यालय के बदतर स्थिति को बेहतर बनाने में सफलता हासिल की गई इस मौके पर नीलू राय, डॉ सुनिता तिवारी सहित पूनम मिश्रा,नीलमा सिन्हा,नीलम राय,विपिन गुप्ता, मोहम्मद सुहेल,मधु सिंह आदि मौजूद रहे।

संक्षिप्त खबरें

खड़ी ट्रक में भिड़ी बस, आधा दर्जन लोग घायल

प्रखर पिंडरा वाराणसी। फूलपुर थाना क्षेत्र के कथौली स्थित एक पेट्रोल पंप के समीप बुधवार को दोपहर एक बजे खड़ी ट्रक में अनुर्बधित रोडवेज बस ने जोरदार टक्कर मार दी। जिसके चलते आधा दर्जन लोग घायल हो गए। बताया जाता है कि अयोध्या रोडवेज से अनुर्बधित बस बुधवार को यात्रियों को लेकर वाराणसी आ रही थी। कथौली स्थित भागीरथी पेट्रोल पंप के समीप सिलेंडर लदी ट्रक में खराबी आ जाने के कारण वह सड़क के किनारे खड़ी थी। तभी पीछे से आ रही उक्त बस जा भिड़ी। जिसके चलते बस का ड्राइवर उसी में फंस गया। किसी तरह मशक्कत के बीच आधे घंटे बाद ड्राइवर अतुल कुमार 37 वर्ष निवासी सुल्तानपुर को बाहर निकाला गया। वही पट्टीराव थाना बक्शा जौनपुर निवासी जहिर 50 वर्ष, अशरफ 18 वर्ष , राघवेंद्र 48 वर्ष, शुभम यादव बरूई सुल्तानपुर, अनिल 27 वर्ष दिहवत चंदौली को पीएचसी में प्राथमिक उपचार के बाद रेफर कर दिया गया।

अपर जिला सूचना अधिकारी का जिला सूचना अधिकारी के पद पर पदोन्नति

प्रखर मीरजापुर। जिला सूचना कार्यालय में तैनात अपर जिला सूचना अधिकारी ओम प्रकाश उपाध्याय का सूचना निदेशालय द्वारा जिला सूचना अधिकारी पद पर पदोन्नति किया गया। जिला सूचना अधिकारी ओम प्रकाश उपाध्याय ने आज जिलाधिकारी के समक्ष जिला सूचना अधिकारी पद का कार्यभार ग्रहण कर लिया गया हैं। उत्त प्रदेश सूचना (राजपत्रित) नियमावली-2022 में निहित प्राविधानो के अनुसार सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग के अन्तर्गत जिला सूचना अधिकारी के पद पर उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग के आदेश की संस्तुति के आधार पर प्रदेश में 06 अपर जिला सूचना अधिकारियों का जिला सूचना अधिकारी पद पर पदोन्नति की गयी हैं, आदेश के तहत ओम प्रकाश उपाध्याय का जिला सूचना अधिकारी के पद पर पदोन्नति करते हुये जनपद मीरजापुर में ही नवीन तैनाती निदेशक, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, उ0प्र0 लखनऊ के द्वारा किया गया हैं।

सरजेपी महाविद्यालय के टापर छात्र हुए सम्मानित

प्रखर महराजगंज (जौनपुर)। सर जेपी महा विद्यालय केवटली महराजगंज विद्यालय में अच्छे अंक पाने वाले छात्र छात्राओ को कलम किताब भेंट कर सम्मानित किया है सर जेपी विद्यालय के बीए प्रथम सेमेस्टर मे स्नेहा यादव को 88.8% व खुशी यादव को 85.9%अंक मिला है इसी तरह बीए द्वितीय वर्ष के तृतीय सेमेस्टर में खुशी सिह को 85.9% रेशमा गौतम को 84.8% तथा बीएससी प्रथम सेमेस्टर मे पसंद गुप्ता को 81.8%और सेजल सिह को 81.6%अंक मिले सभी टापर छात्रो को प्रबंधक राजेश जे सिह सम्मानित किया गया।

सड़क हादसे में घायल बेजुबान नीलगाय को मिला इलाज

प्रखर बदलापुर जौनपुर। स्थानीय थाना क्षेत्र के देवरामपुर गांव मे सड़क पार करते समय एक नीलगाय की टक्कर अज्ञात चार पहिया वाहन से हो गई। जिसमे बेजुबान नीलगाय घायल हो गया। सड़क किनारे घायल अवस्था में पड़े बेजुबान नीलगाय को इलाज करवाकर नया जीवन देकर देवरामपुर के लोगो ने बड़ी मिसाल पेश की है। प्राप्त जानकारी के अनुसार देवरामपुर गांव के पास से गुजरने वाली प्रयागराज शाहगंज मार्ग पर मंगलवार की सुबह सड़क पार करते समय एक नीलगाय की टक्कर अज्ञात चार पहिया वाहन से हो गई। जिसमे बेजुबान नीलगाय घायल हो गया। सड़क किनारे घायल अवस्था में पड़े नीलगाय को देखकर ग्राम प्रधान के पिता बड़े लाल और अन्य ग्रामीणो ने बिना देरी किए हुए पशु अस्पताल घनश्यामपुर के डाक्टरो को सुचना देकर बेजुबान नीलगाय की ईलाज करवाया। इस मौके पर बड़ेलाल, रामफेर, दिनेश कुमार, महेन्द्र यादव, नन्हे यादव, दिवाकर आदि लोग मौजूद रहे।

प्रखर पूर्वांचल

RNIUPHIN/2016/68754

मुद्रक प्रकाशक 'पंकज सिंह' के लिए सम्पादक 'अरूण सिंह' द्वारा 'गायत्री प्रिंटिंग प्रेस' सकलेनाबाद नियर दुर्गा चौक, गाजीपुर पिन कोडः 233001 से छपवाकर कनेरी गाजीपुर से प्रकाशित

सम्पादकीय कार्यालयः 9/10, टैगोर मार्केट, कचहरी, गाजीपुर पिन कोडः 233001

सम्पर्क सूत्रः 0548-2223833, +91-8858563779 +91-9450208067, +91-9452844802

सभी विवाद गाजीपुर न्यायालय के अधीन होगें।

ताजा खबर पढ़ने के लिए लॉगइन करें हमारी वेबसाइट https://prakharpurvanchal.com Email ID: prakharpurvanchal@gmail.com

सांध्य दैनिक प्रखर पूर्वांचल अखबार के सभी पद अवैतनिक हैं